

स्वास्ति आ

स्वास्ति आस्तु . स्वास्ति आस्तु

श्री गणेशाय नमः श्री गणेशाय नमः

१७

3355 A

ASHA ARCHIVES

वीलीका
राहु ॥

रमा
॥१॥

यश्री स

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ धैले नमस्कारगरीगणेशो नारायणः ॥ ॥
मेने ॥ अध्यात्मरामायणकोवनाउं भाषाठिकाभक्तवु ॥ ॥
एकासमयः सत्यलोक माश्रीवृद्धा लेः वडोसामवड लिः ॥
खुल्लयोगमचदुकाध्या नगर्दाभमाय नः नसैवेलासाः नारद
काचरणमाप्रणामगरिपरमजोउत्तमतत्वना नायकारकाक धा न न न ग ॥

अध्यात्मरामायण
६८

वृद्धा लेयनिः नारदकनः अनेगयुकारका ज्ञानक धा सुनायाः नव गा
रदलेफेरिविंतिगयाः ॥ श्रीनारदउवाच ॥ भोपिता वृद्ध नृपि सा प्रसा
दले अनेक गज्ञानक धा सुन्यांनैयनि ॥ अध्यापिमेशमनक धा नृत्ता
कन नृपिजोसेतो यभयेनतस र्य श्रीपरमेश्वररामवेदुकाक धा नृत्ता
नरध्याभैरहेद भोवावावृद्धाः अध्यात्मरामायणकाक धा नृत्ता
रगारिजा ज्ञानवृत्त नृत्ता वृत्त सभनि नारदलेवृद्धा देउ उ प्रश्न गर्दाभया

दा

राम

॥२॥

॥ **ब्रह्मोवाच** ॥ ब्रह्मामंथनं हे नारद निमिधन्य धन्य - ब्रह्मात्मनः
प्रश्रय गच्छादौ जोगो अ॥ ध्यात्वा रामाग्रं संसारकनहितं गच्छीहो निर
जन निराकार प्ररं ब्रह्म रामका कथा सेवक तसु दरभया को - जि नृप
प्रसाद हे मकनसुष्टिकर्ता ब्रह्म भनि तोलाया एता प्रकार का ज
र श्रीरामका कथा ॥ सुनत द्वाग ज्योति निमिधन्य हौ भो नारद निमिधन्य
का सेवक महाज्ञानि हो - तस्यैव ध्यात्वा कथा निमित्तार्थक हनु योग्य है ॥

जो कोहि ज्ञानी मांछा कन राम भक्त नहु न्या कन यो प्रकार नगर्नु हे ना
रद जो कथा कला भन्या - भव भयनाश गच्छी दुख सागर पार गगन म
हाविभक्त भयाका जसो जाहु वीर गगमा स्ना नगदी माया पहरा दुं दत से
जो अध्यात्म रामाग्र का कथा सुन्या लेया मका टिंछ - तस्यैव महावि
जगरि रामका चरण विनितार्थ - भक्ति भाव संग जो मांछा तेइ कु रा सु ने
ल - उस्का सबै पाप देषियु निमै रामका भक्त माली न होला - पेरि जलो ध

वा

राम

॥३॥

नवांकागर्भातार्द्रमोक्षहोलाफेरि. गोहत्या. बालहत्या. ब्रह्महत्या. कां
वराहरण. वस्त्रहरण. भूराहत्या. एला आदि नानापातकगत्याकां
नि. मुक्तहोलाफेरि नानाभयदृष्टीकाभयभोगकाभय. दैवकाभय.
जलमृत्युकाभय. एलाभय. नाशहंकर. एला अभ्यात्मशमायन.
कुग. मकैलाशपर्वतमाजगदिश्वर श्रीमहादेवका मुखकमलदेविः सु
आभ्यामोक्त्या मतिमिकनकहंदु निमिरु विनगरिसुन ॥ ॥ पुन ॥

पूर्वकालमा. एकसमय. हेनारद. कैलासपर्वतमा. जगदीश्वर श्रीमहा
रुद्रले श्रीरामचंद्रकाभ्या नगदीविशेषावतीले महाभक्तिसिद्ध. श्रीम
हारुद्रदे उविंतिगरिन् ॥ ॥ पार्वतीवाच ॥ पार्वतीविंतिगर्धनि. जे
रमेश्वर महारुद्र निम्रावरण तल कोटि ॥ ॥ पुनमक. निमिक
भन्या. जगत्संसारकायै. एलानि म्रामप्रियन्तीदोन. मकेहिकुरे विंति
गर्दु भोत्तामि. गुह्यकुरे नयनि. कहनु होला. जसो योगीश्वर हसले सु

वा

राम

॥ ५ ॥

सकुरोभयापनिभाआआभक्तजनकनअज्ञानी॥ ॥ ॥
भयापनिद्रुदोनद्रुदोकुरासवैकहं नसैमसीजातभयोतपनितप्रासेवक
हुंमः नसर्थः मेरोविंतितागिआजाप्रसन्नहवोस् भोखामि निमित्ते गेन
दिनध्यानगयाकाजोनिर्विकारबुद्धस्वरूप श्रीरामचंद्रकाक थाआजागनु
हवोस् जसकाकृपातेजिमिते जरामृत्युं जयमनिनामपाया तसर्थमिहे
यनि रामकामाहात्म्यसुनि आआआत्माकनहितद्रुत्यामृत्युनद्रुत्यासाधुं

यस

॥ ५ ॥

लाहेप्रभुः कोहिलोकहरुः श्रीरामचंद्रकनः निराकारबुद्धतयनिमाया॥
लेलिप्रभयाकोद्वनः भंवनकोहिलोकहरुः रामचंद्र निराकारबुद्धहोर्न
निराकारबुद्धभयाकसोमायाकावश्यनगयाः कानसीताकानिमित्तशो
कगर्ताः आपूर्तश्चरभनिकसो जानितः अरुलेमबुद्धाः रामचंद्रतेकेहि॥
जानेनः नसर्थः श्रीराम॥ ॥ मायावश्यहोः भंवनहेस्वामीः तस्कारणमे
रामनमावडोसंदेहभयाकोद्वनोसंदेहः आपातनुहवसभनिएस्नायु॥

व

राम

॥५॥

कारकायावतीकावाक्य सुनिजगदीश्वरमहारुद्रलेजाजागया ॥ ॥
श्रीमहादेवउवाच ॥ ॥ भोपार्वतीनिमिधन्यदौजोरामकलादनभ
न्या ॥ दृष्टिकोपनिजगोचरमातेपनिमगोचर ज्ञानलेमात्रगोचरदुन्या
: एलापरमात्मास्वरुपरामकाचरणमाकोटिकोटिनमस्कारः ॥ ॥ भोपा
र्वती: निमित्तेपनिनमस्कारगर ॥ ॥ रामचंद्रकलाभन्या: दुससंहारगन्या
साधुकोरक्षगन्या: युग ॥ २ ॥ माहा ॥ अवतारलिन्या ॥ समैप्राणिकाजा

अष्टा

॥५॥

त्सामैपापपुण्यका ॥ ॥ साक्षिभैरव्याकाएला राम ॥ ॥ आपैशरीरमाद
नभनिप्राणिहरुजादैननजोमहाज्ञानीहुंठउहीमात्रै: जांदद ॥ ॥ हे
पार्वती: एला रामजूकोमहिमा: सकहेदु ॥ सुन ॥ पार्वती ॥ ॥ रपरमे
श्वररामचंद्र ॥ लेकाजार्द: रावणादिसमलराक्षसमारि: अमोघ्याफिरिआ
ई ॥ ॥ ॥ अयोध्यामाराज्यभिषेकली: सीतासहित: सुवर्णकासिंहासनमा
आनंदमयभैरवहंदाकाबेलमा ॥ हनुमान ॥ रामसिताका ॥ ॥ अघिवाटवसे

वा

राम
॥६॥

रः ॥ हा न जोरी जप गरिव स्या भ्या ॥ ॥ कस्ता ह नू मान भन्या मा ॥ हा ज्ञानि
राम ज्यु कारः सीता का ॥ बडा भक्तः जो राम ले जा जा भया कोः नयार भैरु ह ॥
भ्याः राम सीता को मात्रै ध्यान गरिर ह न्याः ॥ कस्ता ह नू मानः राम का ह नू मा ॥
बसी कन ॥ ॥ हा थ जोरि ॥ ॥ राम सीता का मुख कमलः ॥ हेरे रः ॥ वस्याः ॥
हे पार्वती ॥ इ ह नू मानः ॥ क्या निमित्तः य सो गरिव स्या भ्या भन्या ॥ ॥ राम म
गुंला भनि यनि होई नः ॥ ॥ धन मा गुंला भनि यनि होई नः ॥ क्या हा

जग
॥६॥

भन्या तु लो ज्ञान प्राप्ति भै मोक्ष हो ला भनि वस्या भ्या हे पार्वती ए स्तो गरि
व स्या का ह नू मान लार्क दे व्यार र पु ना य ले य नि सीता के उ आ जा भ्या ॥ ॥
श्री राम वंदु उवाच ॥ भो सीता इ ह नू मान नम्रा प नि मे रा प नि व डो से व क भ
क्त जन थ न नम्रा प नि मे रो य नि चित्त जा ज्ञानि मित्र इ का गरिव सि र ह्या द नू त
स र्थ नम्रो मे रा च रि त्र ति मि क हि दे उ भ नि ए स्तु का र ले राम वंदु ले आ जा
भया को सु नि सीता ह नू मान के उ आ जा ग दी भई नू ॥ **॥ सीतोवाच ॥** हे न

वा

राम

॥ ॥

नृमान्. तिमिले बांछाग आको कुराक हेंदु. क्या हा भया पर मे श्वर भक्त
कावसहुनाले. नमर्थ. मक हेंदु. सुन. हे हनुमा. राम दे. अकलाइन मन्त्र
जगत्संसार का गुरु. जगत् व्यापी. मकली हें भया. मूल पक्ति. ब्रह्म ले म
मलार्द्र पि. मैले ली. सूरि गर्दु. रजोगुण. नमोगुण. सत्व गुण विलुभै. पा
लना गर्दु नमोगुण महादेव मै संहार गर्दु न. अयो ध्यान गरि मा दशरथ
राजा का घर मा. अवतार भया. न सुवे ला मा. विश्वामित्र अघि ले राम चंडला

धारा

॥ ॥

र
ईडा कि लै जाई. विश्वामित्र को यज्ञ विष्णु गर्वा क्षसक न मारि. यज्ञ सिद्ध गरा
या. फेरि गौतम का आश्रमा हा. आयले. अहल्या शिला मै र ह्या की. नन
कन आघ मुक्ति गरार्. जनकरा का घर गुणि. धनुर्भंग गरि मलार्द्र विवा
ह गरि यशु राम को अहंकार ख सार्. अयो ध्यान गर आर्. बार हें म म
हित वसित दण्ड कारण गमन गरि. विरोध राक्षस लार्द्र मारि. रावण का
आशाले मारि बदैत्य सुन को मृग मै आया को नस्क न मारि. फेरि मैले. ॥

आफ़ा मायाकी सीताव नार्ह. मअग्निमाहावसि. मायाकी सीताव रावरा
 लेचोरितै जांदा. नस्कारण. जदायूगधुरा जलेषु द्रुगरि मर्नगदा. तस जदा
 यूको मुक्तगरि. नाहायदि कंभराक्षसको. आपमुक्तगरि. सबरि माया
 नितार्ह दर्शनदिई. सुग्रीवसंगमित्यारितार्ह किष्कि ध्यानगरि जाई ॥ ॥
 वालिलाइमारि. किष्कि ध्यामाहा. सुग्रीवलाइराज्यमिषेकदिई. ॥ ॥
 नाहाअनेकवातरसहायगरिरामलक्ष्मणवातरसहितभैरावरासंगयु

यह

॥४॥

द्रुगरि रावरा आदि सबदैत्यमारि. लंका माहा. विमिश्रणकन. राज्याभि
 षेकदि. मायासीताली. अग्निमाकासीताल्यायी. युष्मकाविमानमा
 चह्री. अयोध्याजाई. राज्यमिषेकली. राजाभयावन. योरा मपरंबुद्धम
 नि. तैले जानि. रनका ध्याननकोडि. अर्को नचिताडनु. हेरनुमान. राम
 नाम. जो संसारका भयनाशनाकन. खड्गभमाका. योखड्ग. तैलेनखाड
 नलार्ह संकहा जो निभया लेखुनु सकन्यादेन ॥ ॥ माहादेव उवाच ॥ म

श्रीराम

॥५॥

महादेव भंछ ॥ देवार्वनी ए लायुकार संग तक्ष्मी स्वरूप सीता ले हनु
मान लार्इ उपदे द्योरे अत्यंत हर्ष मान भै ॥ राम सीता का चरण
मा दंडवत् प्रणाम गरी सीता का आज्ञा कै राम का नाम मात्र आकाह द
यमाधार गरी आनंद संग वस्यो देवार्वनि ए लायुकार का राम चंद्र
माया ले दु दैन जो को हिय सिद्ध न माया वश्य भया का अज्ञानि हरु ले मा
त्र राम चंद्र वनवास गयो सीता का निमित्त शोक गयो भनि भंछन यो हो

श्रीराम

ईन यो सबै माया मात्र हो जो तानि पशिद्ध न छ सो राम चंद्र निरंजनि राकार प
रं वल्लभ नि जांद छ देवार्वनि राम का संपूर्ण चरित्र कसै ले जां दैन अघार महिमा
असे ख्य महिमा छ न मै ले प नि राम चंद्र का महिमा संपूर्ण जानिन संक्षेप
जो रोमात्र निमित्त कनक हंजो राम माया श्री रीर भनि संदेहनगर ॥ साक्षा
त्परं वल्लभ हो ॥ देवार्वनि ॥ जस ले यो अध्यात्म रामायन का कथा सुदृढ़
म सीता का चरण का स्मरण आद गरी ॥ पवित्र नर सुंदर सो मानि स द हलो ॥

मग

श्रीराम

१०

क मा. महाभाग्य मानी भैकी निचलार्ह. परलोक माहु लोवा हारका. कु
 लमा जन्मली. वैराग्य धारणा गरि मोक्ष पाउंछ ॥ ॥ एलायकार संग. यो
 कथा ॥ कैलास पर्यंत विजे. श्री महादेव ले पार्वती कनक ह्या भनि विष्णु ले
 लोक मा. ब्रह्मा ले ॥ ॥ नारद कनक ह्या. सो कथा नै मिथारण्य वन मा. सु
 तले. शौनक आदि ऋषि हरु कनक ह्या ॥ ॥ इति श्री अध्यात्म रामायण
 शोका नाका गंड उ मा म हे अर संवादे पुनर्माध्याय ॥ १ ॥ यान्त्युवाच

श्रीगुरु

१०

॥ भो महादेव. मेरा बडो संदेह भयाका. तयार्ह ले संदेह आफ्ना लिदिनु भयो
 भो स्वामि. राम वाहिक दुलोप दार्थ असुके हि है न भनि. अब मै ले जायौ ॥
 एलायकार का राम वंदु का कथा. विस्तार गरि आ जागनु हवस्. म सुंदरु.
 निम्नावाणी स्वरूप अमृत वारंवार पिपीपनि तृप्ति भयेन. तस्कारण निम्ना
 वरण मा वारंवार नमस्कार छ. यो कथा रामो गरि. ये हे देवि आ जागनु हव
 स्. भनि एलायकार संग. ॥ ॥ पार्वती ले विंति गर्दी श्री महादेव ले आ जाग

वा

श्रीराम

ईन ॥ ॥ भो पार्वती निम्ना मनमा सुना कोर कामया ^म क हं सु सुन पै हे व
स्त्रा का पुत्र पुस्त मुनि भया तन का पुत्र वि श्रवा मुनि हो वि श्रवा का पु
त्र रावण हो हे पार्वती यो रावण अघि बिलुका द्वार पार भया को धियो
नव वा ह्मण का आयले वि श्रवा मुनि का वीर्य वाट जन्म ली राक्षस भै पृ
थ्वी मानुस मास पुद्ग पार बु ह्मण का आ जा ले वि श्व कर्मी ते लं का सहर बन
ई दिया लो लं का सहर का राजा भई मो रावण ले पृथ्वी माव हुत दुःख ग

श्रीर

१५

ज्यो स्वर्ग कन पनि दुःख दीर दश दिक् लोक पा लका अधिकार जो सि
अवरावती जिति नव गुह कन पनि वं धि सा नाराधि अनेक वा ह्मण कन प
नि दुःख दि यो ॥ त सवे लामा पृथ्वी ले भाग सहन न स की गार् हरूप ली ॥ बु ह्म
लोक गर्ह बु ह्मण का अगारि आयु वि पा ता प जा को ॥ दुःख का वृत्तांत आ
शु का टि अर्जि ग र्धी न तव पृथ्वी का वचन मुनि बु ह्मण ले मन मा चि ता ग आ
यो पा पि पूरा वण लार्ह मै ले वर दान दि या को ॥ त स र्थ यो रावण लार्ह ॥

॥ ॥ विष्णुकादि-अरुकसैलेमानसकन्यादै नमनि ॥ ॥ मनमा चितार्द ॥
 सबैदेवलोकसाथली ॥ ॥ पृथ्वीसमेतभै ॥ बुद्धा-क्षीरसमुद्रमागई-आ
 दिनागणपुरुषोत्तमविष्णुकन-नानाप्रकारसितस्तोत्रगया-अनेक
 वेदवाक्यगरि ॥ बुद्धाले ध्यानगरिवसदा-क्षीरसमुद्रक-पूर्वनाद-हुत्तो
 ज्योति एक निस्वया-ज्योतेजकामा रुमा-परमेश्वरकामूर्तिबुद्धालेदेव्या
 ॥ कलाप्रकारकापरमेश्वरकामूर्तिभक्त्या-गरुडवाहनगरि-वा-सु-तिरतस्मि

राशि ॥ चारहातधारणागरि-शंखचक्रगदापद्मधारणागरि-अत्यंतसुंदरमूर्
 ति-कमलकायातजैनेत्रभयाका-तीरमाशिकजैवर्णभयाका-पीतांबरओ
 ध्याकाफरीहीहासी-श्रीवत्सकाचिह्नभयाका-अतिराम्यभयाका-सर्वत्रां
 गमासुवर्णकागहनालेभरीपूर्णभयाका-आनंदस्वरूपएलाप्रकारका ॥
 आदिपुरुषनागपराकादर्शनपार्श्व-बुद्धाले-भावलेरोमोकगरि-भक्तभ
 कभक्तार्थगरि-स्तुतिगया ॥ ॥ बुद्धोवाच ॥ बुद्धाभंदुभोपरमेश्वर ॥

नारायण. निम्नाचरण माकोटिकोटिप्रणाम. निमिकला कौमत्या
 ॥ जगत्संसारका आत्मा पुरुष भयाका ॥ आधारपनि निमिहोदुःखबाहु
 :खनाशक पनि निमिहो. ॥ भोयरमेश्वर. मेरगतिपनि निमिहो. हानिहेरु
 कावडोदुःख आरूप यो. यो भयनाश त्या अरुकोहि हैन. ॥ तपान्निवाहि
 क. हानिहेरुको आधार अर्को हैन ॥ तसर्थ तपार्हते यो भयनाश गरि हि
 हवस. ॥ भनिएला प्रकार संगव ह्यात अर्जिग याको सुनि. परमेश्वर नाराय

५३

श्रीगुरु
१३

राजागर्हव ॥ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ श्रीभगवान् आजागर्ह न. भो
 व. ह्यन. का हावाट निमिहुरुको भयउ त्त्रिभयो ॥ मैलेक्या गर्नुष यो.
 आजागर्नु हवस भनिएला प्रकार संग भक्तवत्सल नारायण ते आजाग या
 को सुनि. ये रिब ह्याते अर्जिगरिन् ॥ बुद्धो वाच ॥ भोयरमेश्वर. हानिहेरु
 का भय. पापिह रावण देषिउ त्त्रिभयाको. अनेक अषितोक. ॥ वाह्य रा
 लोक. मुनिगण. इन हुरुलेग याको अज्ञ. तपस्या. ध्यान यो पापिह राव

श्रीराम

१५

एते दुःख दिशेर. सवै विघ्न गरि दिशेर. यत्तादिक महे हि है न न भजन प
ध्यान. गर्नु. सवै ले छो ड्या. सवै देव लोक को अधिकार. देव लोक ले गर्ज
॥ स्वाभ्या कु रो ह सवै. को सि त्रि योर. जा ज म य पृथ्वी भ। योर. पृथ्वी ले भा
र सहन स के नरुं दी रुं दी हामा शरणा आरु. ई हे नु ह व स. ॥ भो पर मे
श्वर. म मुख भै. मै ले यो पा पिष्ट रावण तार्क. ॥ व डो व न दि या ध्या. क्यु व
ल भ म्या. मनुष्य बाहिक. अरु जातिक सै वाट. मृत्यु न ह व स भनि. मै ले व

श्रीराम

१५

रदा न दि या ध्या. ॥ न स कार ए ले. भो पर मे श्वर त पार्क. यो पृथ्वी मंडल मा
॥ मानि स के अव तार भै. यो पा पिष्ट रावण. स्वर्ग मर्त्य पा ता त. ॥ तिन मु
वन का के ठ क भ या का. ॥ ए स तार्क मारि. तिके ठ गरि दि नु ह व स भनि ए. ॥
ला घु कार के ग व ह्या ले ग या का अ जि सु नि. ॥ पर मे श्वर ए रा ए रा आ ता
ग र्क न. ॥ ॥ श्री ना रा य ण उ वा च ॥ श्री ना रा य ण भे द न. ॥ भो व ह्म न. नि
श्र य नि मि ले आ ता ग या रै. मानि स के अव तार ती. रा व ण आ दि क ति दु

धृमयाकाछन नत्रिसवैमैलेसेहारगौंला ॥ हेवुह्या दुर्ध थोक ले प ॥
 नि ॥ ममानिसको भवतारलिनपज्या ॥ कसो भन्या ॥ पुरा पूर्वकालमा ॥
 नि ॥ क रूप पर ॥ अदिनि ॥ दुद्र जनाले ॥ ममा धिव दोत पस्या ग थ्यो ॥ वजा ॥
 कारणले भन्या ॥ तपार्इ मेरा कोरा हव स भनि मसित मागि ॥ मैत्र मनि ॥
 ल भनि वर पुसा ददि जा थ्या ॥ थोक रूप म जो ध्या नगर मा ॥ सूर्य दे ॥
 मा ॥ दशरथ राजा भै जन्म लिया का छन ॥ अदिनि पनिति दशरथ राजा ॥

कौशल्या भर्ज जन्मीर ह्या ॥ भोव ह्या ॥ ए सै कारणले त सै काग भ मा जन्म लि
 घेर ॥ एकै आत्मा ले ॥ चार जना भै ॥ राम लक्ष्मण ॥ भरत ॥ रावु धृम भर्ज ॥ जन्म लि उ
 ला ॥ सुनो फेरि हेवु ह्यन ॥ योग माया पनि ॥ जनक रा जाक हा ॥ सीता ला ॥
 गरि ॥ अवतार लिन प भाउ ला ॥ ॥ ॥ जो सीता का कारण गरि रावण ॥ अदि पृ
 थ्वी मा जन्म पा पि ह्य ॥ तत्रिसवै सेहार गरि ॥ ॥ ॥ दिउं ला नि भू प भ ॥ ॥
 निनि मिले पनि ॥ वनर रूप भै ॥ अवतार लि घेर ॥ म लार्क ॥ गो हार गर्नु हो ला

श्रीराम

१६

घोकुरानिश्चयमानि फर्कनु हसमनि एलापुकारसंग. बुझाकन.
आजागरि. परमे श्वर नारायण अंतर्धान भै श्री महादेव वाच. ॥
श्री महादेव आजागर्दन. ॥ भो पार्वति. परमे श्वर नारायण. बुझाकरु.
ईको. ॥ एलो संवा भैयाको. जरुं दुदि देव लोक लोक सै ते पमि दे खेत.
नारायण दर्शन पनिक सै ते पायेत. बुझाते मात्र दे ख्या. ॥ ताहा मदि.
बुझा अतिक फर्केर. ॥ विस्तुले आजागया को कुरा. न्यो वृजो न सने दे

श्रीराम
१६

वना हरुकनक ह्या. ॥ बुझो वाच. ॥ बुझा मंढन. भो देवता हेरु हो. पर
मे श्वर नारायण. ॥ पृथ्वी मामा निसको अवतार भै जन्मंढन. ॥ अवतिमि
हामि सवै पृथ्वी मागै. अवतार ती. राम का सह पमै. जगा जगा मा. वान
मै. जन्मनु जाडं भनि बुझा समेत. ॥ तेति सको दि देवता वानर भै जन्म निन
जा. ॥ जगा जगा मावसि. वडो वडो बलवंत भै वस्या. ॥ कैलेग मंढको भेत
होला भनि ॥ राम का सा अगनी को आशिखा गरिर ह्या. ॥ भो पार्वती. परमे

श्रीराम

१७

श्वरसुनाचकोमहिमा ॥ एस्ताप्रकारकोषमनि-कैलासमर्वतमावशि
 माहादेवले-पार्वतीकनआज्ञागया ॥ बुझतो लोकमावुझालेनारदकन
 कल्या ॥ नैमिशारण्यमा-मुतले-शौनक आदिजपिहेरुकनकल्या ॥
 इति श्री-अध्या-अरमायणमा-महे-श्वरसंवादे कलाकारो-द्वि-तियो
 ध्यायः ॥ २ ॥ ॥ श्रीमहादेवउवाच ॥ महादेव आज्ञागर्हन्-भोपार्वती
 भयोध्याकाराजादशरथ-तस्कीरनिकैलास्या-कैकेयी-सुमित्रा

१७

॥ इति नधिया-इति नैजना-इति नैजना-वडापतिवताधिया ॥ कामि।
 भक्तिभयाका-दशरथराजाकलाछन्भया ॥ वडोप्रतापि-वारविष्य
 लेसंपूर्णभयाको-सत्यवादी-कैलेयनिअसत्यनबोहर ॥ वाह्या ॥
 काभजनगर्वा ॥ वडोदयाभयाका-आयीनीतिलेपुजाकनयालगा
 गर्वा ॥ एस्ताप्रकारकाधर्मात्माभयाका-दशरथमहाराजाका-सेता।
 नभयेनर ॥ आप्नुपुरेहितवसिष्ठु-थार्कगमेर-वसिष्ठकावरणमाढोक

श्रीराम

१८

दी॥ विलापगिरिविंतिगया॥ ॥दशरथउवाच॥ दशरथभनेछन॥
भोगुरुवसिष्ठ॥ योगरामा॥ मराजा मयालेक्याप्रयोजन॥ क्यासुखभंतु
मेरेजन्मसि कारहो॥ पुत्रनभयायदि मोसवैसुखभोगवर्षहो॥ भोगु
रुः पुत्रका॥ सुखदेरिवसुपायापो सुखभंतु॥ तसर्थयोगरामभोगगरे
क्याहुं॥ केहिमुषआधिन॥ भनि॥ एलाप्रकारले॥ संतानकानिमित्तद
शरभराजातेमहाशोक॥ याकोदेधि॥ भूतभविष्यवर्तमानजांया॥ व

श्रीराम

१८

वसिष्ठमधिलेजाजागया॥ वसिष्ठउवाच॥ ॥वसिष्ठमंदन॥ भोमहारा
जनिमित्तलेसोकगर्नुपर्देन॥ अवस्थनिमोपुत्रहुत्या॥ कलोपुत्रभया॥
तलेषनिजेजलेषनि॥ नारायणसमानहुत्या॥ एलाप्रकारकाचारपुत्र
हुं॥ भोवमहाराज॥ तेसोभयापनिपत्तगर्नुपर्छ॥ विनायकतेसुखजा
दैत॥ तसर्थ॥ हेमहाराज॥ अथशृंगार॥ कान्त॥ श्रुर्कनबोलाउपराधेर
॥ पुत्रफलपाउत्या॥ यज्ञगर्नुहुत्तस॥ तवपुत्रहोलाभनि॥ एलाप्रकार

श्रीराम

१८

रसंग ॥ नसि सते आजागया को सुनि मख अंगर को जइ दुर्वजना ला
 रंदु किल्याया सुमंत्र मंत्री ले यज्ञ को सरा जा मजोरि नसि स मधि आ
 दि अनेक ब्राह्मण बोला न बडो उन्नमय जगया ॥ नवविधि पूर्व कय जगरि
 ॥ यज्ञ संपूर्ण गया ॥ ताहा पछि अग्निसं तोष मघर सोवरी का थात मा
 क्षीर भोजन राखि जात्र ल्य मान गरि ॥ अग्निकुंड वाट मा धिज घेर आजाग
 ॥ अग्नि उवाच अग्नि भंडन भोम हारा दशरथ निमिते सया को यज्ञ ले मंत

१८

तोष मघर भवनि निष्प्रामनोर थ पूर्ण गनी निमित्त ॥ देवता हरु ले यका या
 का क्षीर भोजन मै ले ल्याया यो क्षीर भोजन लिनु हवस भनि दकार थ राजा
 कनदि ॥ नव फेरि अग्नि भंडन ॥ भोम हारा ज लो क्षीर भोजन निष्प्रामनी
 कन युवावु नव निष्प्रामन वां का पुगला भनि एनि आजा गरि अग्नि देव ता
 अंतर्धान भै ग^{या} ॥ ताहा पछि दकार थ राजा ले लो अग्निले दिया को ॥ सु
 वर्ण को थात समेत क्षीर भात लिअर बडो सुसि भै अंतपुर मा गर्द दुर्दभा

श्रीराम

२०

गगरेर. आधारकौ का ह्यारानी कन दिया आधारकै के पीरानी कन दिया. ॥ तब
 लो क्षीर खा उं भनित प्रार गरि बस्या कावे लामा. सुमित्रा निभायेर भनि. भो.
 दि दी हो. ॥ मेरु पनिस तान दु. आ गरी. ॥ लो क्षीर. धोरै. मलार्क प नि दे उ भनि
 ॥ नब ए ति सु मित्रा को वचन सु नि. कौ का ह्यारानि ले. ॥ आ फ्रा भागमा. आधार
 गरि सु मित्रा कन दिया. ॥ तब कै के पी ले प नि. आधार भाग सु मित्रा कन दिया.
 तब ति नै ज ना ले क्षीर भोजन ग या. ॥ ताउ प्रांत. दशरथ रा जा ले यज्ञ सो ग

श्रीराम

गरि. ॥ बा ह्यार सवै कन पू जा गरि. ॥ अने क सोवरी. बह्वर्ग. धार येत. रु
 पि. छो डा. दान दि येर. रु द्वा भोजन गरार्. ॥ बा ह्यार हे रूप नि. संतो न भै.
 ॥ दशरथ महा राजा कन. आ क्षीर्वा द दि येर. आ फ्रा आ फ्रा धार ग या. ॥
 ॥ श्री महा देव उवाच ॥ श्री महा देव आ जा गर्दन. भोजार् व ति. ता हा प दि. ॥
 दशरथ रा जा का नि नै गो रा नि हरु का गर्भ भर्. ॥ ति नै ज ना को ले ज व
 लो. ॥ क सो भ न्या. सा दि नि ले वा यु दे व ता गर्भ सा धार रा ग दी. ॥ क सो नै ज भ

श्रीगुरु

श्रीराम

२९

योऽथो नलै कौशल्या कैकेयी सुमित्रा तिन हरु को ते ज बछ्यो ॥ तव ता
हाद शर पराजा ते पतिवार ॥ आठ मै दू को न्या कर्म गर्नु पर्य न्यो कर्म स
वैग्या ॥ तव दश महिना पुरे भर ॥ कौशल्या का पुत्र जन्म भर ॥ वैत्र महि
ना का शुक्ल पक्ष का नवमिका दिन ॥ सुवेला जात भया ॥ भो पार्वति तिघर
मेश्वर कला प्रकार संग जन्मा भया ॥ चार हात मै ॥ चारै हात दो ख बक गद
पदा ॥ धारणा गरि नील वरणी भया का कवल फुल को पत्र कै ॥ आस्वा मै ॥

श्रीराम
२९

श्रीराम

कोतिमा श्रीवत्स ले विहू रु मा गरि पी तो वर ओ छी ॥ सो वरणी का बा ला
तार् ॥ काश मा पति रत्न कु रात तार् ॥ हिरा ज्यो काम दु क तार् शिर मा
कोटि काम देन कै ॥ महा सुंदर दश ह जार सूर्य का ते ज कै ते ज खी भया का ॥
रु छठा स गरि मु मु क हा सि ॥ अनेक आभ रण वन मा ला तार् कति हे या प
नि हे नु मा से तो घनै मा हे नै मन रु न्या ॥ जलं त सुंदर रु प भयर सा क्षा त वै कं
ठ मा ज लो ए ज गर्नु भयो थ्यो ॥ तलै मूर्ति मै ॥ कौशल्या ए निका गर्भ वार जन्म

श्रीराम

२२

भरुन जुन बेला मा परमे श्वर जन्म भयो छ्यो ॥ सोहि बला मा देव लोक ते जानि ॥
॥ सगि मा नाना प्रकार का मंगल वा जाव जाया ॥ फेरि अनेक जात का फुल र्सी
ग गिरि ॥ फुल बर्सी मा फेरि रावण का भय ले देव लोक मनुष्य लोक का भय मा
निचु पला गिर ह्या फेरि यज्ञ जप जप ध्यान ग ज्या बु ॥ सग मा सी लोक ॥
मुनि गन हेरु को जप जप ध्यान श्रव्य भया को धियो तव उ स बेला मा पर ज
तप ध्यान ग ज्या न क्षत्र ता रा न व गु ह हेरु को य नि ते ज पु का श भ जो फेरि

श्रीगु

२२

॥ समुद्र आदि सवै नदी का जल निर्मल भया का ॥ ए सा प्रकार संग तिन वि
भुवन का बडो आनंद भयो छ्यो भो पार्ति ति कौशल्या रा नी ले य नि ॥ यस्त
प्रकार का परमे श्वर आफु वाट जन्मा को देखि अनंद ले आ श्रु पारी ॥ क्या पो
गौ क्या पो न गरुं ॥ भव मै ले भ नि ॥ यकु यकु खरदु त्या गरि लोत्र गरिं ॥
॥ कौशल्या वाच ॥ कौशल्या भं छि न भो परमे श्वर विश्वं सर ॥ नि सा व
र राम हा कोटि २ नमस्कार ॥ त पार्श्व क ला दं भ त्या विश्व संसार का आ

वा

श्रीराम

२३

मापुरुष-परब्रह्मकामूर्तिद्वौ ॥ आत्मास्वरूपयत्तत्स्वरूपद्वौ-फेरि धात
॥ अक्षय्य-अक्षय्य ॥ ज्ञानविज्ञानपतिनद्वौ ॥ ओमकेरु विराजमूर्ति
पतिद्वौ-मायास्वरूप-सत्त्वगुण-रजोगुण-तमोगुण ॥ मोक्षितगुणपति
तद्वौ-देविउत्पन्नभयाकाहुन ॥ मोक्षितगुणतेपनिवर्जितयत्-अनिसवै
प्राणिकावैतन्यगर्भ ॥ सवैप्राणिकाहृदयकमलमावसी ॥ पापपुरुष
कासाक्षीभर्त-फेरिनिष्ठायोहिजयोअहित-कोहिद्वैत ॥ सवैप्राणिवरे

श्रीराम

२३

वरदेवि ॥ सवैकाप्रानभैवस्थाका ॥ आप्रामनमायुद्वैत-केसैतेवा
जनपाउत्मा-जोवडोशानिद्वैत-उसनेमात्रचाहापाउंछ ॥ एसाप्रकार
कातिमि-कौशल्याकागर्भदेविजन्मभयोमनि-लोकतेहास्यगराउना
निमित्त-तद्वौ ॥ मेरागर्भवाटजन्मलिनुभयो-भोपरमेस्वर-समीभन्या ॥
निर्मजिमनुष्यजाति ॥ एसामतार्कदर्शनदिनुभयो-फेरिकौशल्याने
द्वैत ॥ भंस्यागरि-जन्मनुभयो-तसर्थ-धन्यमेरेभाष्य-मेराजन्मपति

कृतार्थमयो ॥ मेरमातृकुतः पितृकुतः पति धन्य हो ॥ मोपरमेवः स
 स्वास्ती जातः जानही न भया को तपार्थ को लोत्र गर्न ॥ मक्या सकलः त
 र्कावरणमाकोटिः नमस्कार ॥ मोकृपासागरः तपार्थकाइरूपः मेरु
 यमाः कैटवनिः यत्र न न ह वास ॥ पेरितपार्थकाध्यानमेरुमनमास
 स ॥ मोपरमेवः अवड्योतः नतपार्थकारूपः खेडि ॥ जसोः मानिसको ॥
 मायारूपः तसो अज्ञानवातककारूपमई ॥ एजगनुहवासमनि ॥ ए।

लाघकारसंग ॥ कौशल्यातेगयाकोलोत्रसुनिः अर्जिववनसुः निपरमे
 वरनागयणतेः आतागया ॥ श्रीभगवाउवाच श्रीभगवान् आतागई
 न ॥ मोमाताकौशल्यां ॥ पुरापूर्वकालमाः निमितेः मथार्थः वः डोत
 म्मागरे औतवमेरुगर्भमा ॥ वासगर्भः मेरुगर्भदेविजन्मतितुआ उबुहको
 सभनिवरमाग्यो योः मैतेयनि तथास्तु मनिनिमितार्थवरदानदियो यो
 तसर्ध ॥ आजनिम्राकोषवाट ॥ निम्रापुत्रमईजन्मतितः आताः मनि

श्रीराम

२५

॥ भो माता कौटल्या पृथ्वी का भार बण्ड नागर्तकन भवतारली औ तस
र्थ ॥ न पार्ह ते यो मै ते ग ग्या को कुरा कसै तार्ह आ जान गर्नु हवस फेरि मेरा
निमित्त निमित्त सो कपनि न गर्नु हवस ॥ लोक में वबुझा उन निमित्त मात्र शोके
गर्नु हवस ॥ भो माता निमित्त माग्या को वर जति हो ॥ तति सबै दुःखा ॥ तप
ई का हृदय मा ॥ मेरा मूर्ति कै ते दो डः खाई न ॥ अंत काल मापनि परम गति
मदि आहु ॥ भनि एति आता गरि परमेश्वर ना राय रा भरखर जन्म का ॥

श्रीराम

२५

वा तखै भई रोइ रह्या ॥ भनि श्री महादेव ते आता ग ग्या ॥ भो पार्वति ता
हाय छि कै के पीरानि कापनि ॥ एक पुत्र जन्म्यो ॥ सु मित्राशतिका दुई पु
त्र जन्म्यो ॥ ॥ ना हाय छि दशरथ राजा ते पुत्र जन्म्यो भत्या को खबर पा
ई ॥ वडा हर्ष गरि अनेक दाण पुण्य गग्या ॥ अनेक मंगल गग्या ॥ तब बार पुत्र
का मुख देख्या तिम बार पुत्र कला दत्त भत्या साक्षात् ना राय रा का तेज ते
उत्पन्न भया का वार पुत्र का मुख हेरि ॥ दशरथ राजा का वडो आनंद गरि व

सिद्धमुनिकनवोत्तरं नामकरणगया ॥ वसिष्ठदुवाववसिष्ठभंयनभोमहा
राजदशरथ ॥ तपार्थकावजेठोकोरा ॥ माहाराजाधिराज-राजेवरी ॥ वक्र
वर्तीमहाराजाहोला ॥ जोसेसारमासवैशाखीहरकारक्षागर्दन-तसर्थउत
कोरामचहुहो ॥ फेरि-माफिलाकानाम-भरतभंनु ॥ इनलेसवैभारावोक ॥
नानराज्यका-तसर्थइनका नामभरतहो-फेरिसाहिलाकोराका नाम-ला
क्ष्मणहो ॥ इसवैलक्ष्मणसंयुक्तभयाकोयफेरिकांठाकोराते-सवैशत्रु

श्रीराम
२६

नाशगर्नुसकला-तसर्थ-इनका नामरात्रुघ्नभंनु-भो-माहाराजदशरथरुवा
रछोरतेमनि ॥ पृथ्वीरक्षागर्नसकछन-भनि ॥ एलाप्रकारकासंगनाम
करागारि-सवैजानकर्मआवाहियाको-गया ॥ दशरथतेमनि-बडोसुखि ॥
चैकोटिकोटि-गावदानदिया-कोटि-सुवर्णदानदियाघोरुहानि-जोसाक
घर-भेत-आदि-बाह्यगावरुवनदानदिया-बाह्यनहेरुवन-इछाभोजनग
या ॥ आनंदगरिविदादिया ॥ आपुतेमनि-बडाआनंदसगवस्था ॥ श्रीराम

हादेवले आजाग्या ॥ भोपार्वति नाहापधि रामलक्ष्मण भरतशत्रुघ्न उवा
 रैननादिनदिनबढि ॥ हुलोभयादनर खेतनदुत्तनताग्या ॥ रामलक्ष्म
 णाबडोमिल्याकाभरतर शत्रुघ्नदुत्तवडोमिल्याको रामचंद्रकाजतिवादि
 याकोटहल तक्ष्मणालेगर्भ्या भरतकासेवाजतिवास्याकोशत्रुघ्नलेग
 र्भ्या ॥ क्याकारणलेयसोभयोभन्या ॥ कौशल्याले आयुक्षीरभागभा
 या ॥ सुमित्रातार्क दिघोर नेहिभागले ॥ लक्ष्मणजन्मो कैकेयीका ॥

क्षीर आधाभागसुमित्राकनदिघोर ॥ नेहिभागले शत्रुघ्नजन्मभयो ॥
 तसमर्थ रामलक्ष्मणदुर्गमिल्यो ॥ भरतशत्रुघ्नमिल्यो भोपार्वति निवा
 तषचारैजनानानापुकारलेषेतनताग्या दुत्तनताग्या ॥ फेरिनानाशा
 सजात्या विद्याजात्या भयो तिनहुरुकोणुण जानदेधि दरारपरजाव
 डोषुसीभईभति श्रीमहादेवले आजाग्या ॥ भोपार्वति परमेश्वरजन्मप्र
 याकावेतामा ॥ कौशल्यासंगसेवादभयाका ॥ जसले शत्रुघ्नसंगसुनता ॥

पोसु लक पाठ गर्ता ॥ आकाश परमाधिनिन्यनिन्यपूजा गर्ता तस्को स ॥
 वैपायमोचन मै ॥ अंतकारमा ॥ परमगति पावता भति ॥ एताप्रकारसग
 ॥ कैलासमा मसुदेवते पार्वती कनह्या ॥ ॥ इति श्री ध्यात्मा मा य रा
 वातकां देवती ध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ ॥ बुद्धावाच ॥ ॥ ॥ ॥
 बुद्धाभं च न ॥ भौ नारद ॥ अयोध्यानगरमा दशरथ राजा ज्ञेयः पुत्र राम
 तक्षणा भरतः शत्रुघ्नः अनवरुको मुखहरी कौशल्या महाराजि आदि ॥

श्रीराम
 २८

॥ सवै आनंदगरिरहंदा एक दिन विश्वामित्र मधिले यज्ञगया ॥ ताहा
 यज्ञमा अनेक वाह्य राहे रुते पति ॥ अनेक जपत पगया ॥ एतासमय
 मा रावनले नाडक भेदाराक्षस लाइ पठायेर वाह्य राका जपत पगया
 ॥ अनेक दुःख दिया यज्ञ भंग गया ॥ तब लोदे धि ॥ विश्वामित्रले अ
 यो ध्या गर्द दशरथ राजा काहा पुगी आतागया ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ ॥
 विश्वामित्र भं च न ॥ भौ महाराज दशरथ ॥ तपाइ सग एक जोक मागुं भ नि ॥

श्रीराम
२९

मआध्या. नितमोयोगः॥ एमलक्ष्मणादुई. कुत्तमार. मलाइसोपिदिनु।
रुवसुभनि॥ आजागया. तवदशर भराजाते. विश्वामित्रले भयाकोसु।
नि. मन मनचिंतनागया. हाहाभनि॥ योवाक्ष्मणाकलोकुरागई॥ एस्ता।
प्रकारकावातघरु॥ मकसोगरिदिउं ता. नदि उ भयाएशे आपदित्य
छन. अबकसोगरुभनि. दशर भराजा. महाशंकागरिरहा॥ एस्तावेला
मा. वसिष्ठभविआयाकोदेख्यार॥ दशर भराजातेपादार्पदी॥ आसनमा

३०

वसायेर॥ तवसुतीगरिवस्याकार जादेभि. वशिष्ठआजागईनु॥ ॥ ॥ भोम
हाराज. आजक्यानतपार्थ. अंधारोमुखगरिवस्यौक्या भयोभनि. ^{सोधरा} तवदशर भ
राजासुंछनः॥ भोवसिष्ठभभीश्वर. योविश्वामित्र भयीले. राम. तक्ष्मणादु
ईमतासोपिदे उभंछं. तसर्धमेरामनमा॥ एस्तावातघकसो. गरिदिउं भ
निमेरामनवडोसंदेह भयोरुहेछ. भनिगजाकोवचनसुनिफेरिवसिष्ठभभीभं
छन॥ भोमहाराज एतिकारणमासंदेहनगर॥ निमित्ताइपूर्वजन्मकाकुरा

भनिभंदायमेकारणलेविरक्तभयाको२

श्रीगम

३९

कहुं भनिमआयां भ्यां सुनुहुवो सहै महाराज ॥ अनेकदै न्यरा क्षसहै ज ॥
नमतिघेर ॥ पृथ्वीमाताले वडो भार भयेर ॥ भारवोकी सके नर बुझाकास
भामा पुगी ॥ अनेक विंति गरि भापु दुःख कहुना नव बुझाते पृथ्वीका न ॥
वन सुनि तेति सकोटि देव लोक बाहु लागरि आताग न्या भो देव लोक यो पृथ्वी
समेत गरि क्षीर समुद्र माजाउर विष्णु का पूजा गरि तोत्र गरी ननि तव सवै दे
व लोक बुझा समेत क्षीर समुद्र गई विष्णु का पूजा तोत्र ग न्या ॥ ॥ तव पर

३९

मेजर विष्णु ले देव लोक लाई बुजायेर पठाया तसर्थ आफु पर मेजर माहावि
ष्णु तपाई का पुत्र राम चनु नयेर जन्म लिया पर मेजर का शया अजन्त का
सूति लक्ष्मण भै जन्म लिया पर मेजर का हात मा को शख भरत भै जन्म चक्र वा
र शत्रु घ्न भै जन्म भो माहाराज तपाई ले आश्रय पुत्र ननि ठान महावीरु हो
वरा लाई मा नी निमित्त जन्म भया को हो ॥ भो दशरथ के रि पूर्व जन्म ॥
मा कश्यप का पि न प्राप्त पस्या ले म संतोष भया ॥ अब सगार वर मा

श्रीगण

३२

मनिआजागया ॥ तबनेतिआजासुनि कश्यपर ॥ आदिति दुर्गुरु
घले विंतिगया ॥ भोपरमे श्वर महाविष्णु नपार्इतेवरदि त्याभया न
पार्इजलासवैक तातेसंजुक्तभयाका ॥ एलाप्रकारकापुत्रपुत्रहवो
सुमनिवरमागदा ॥ परमे श्वर श्रीनारयनते ॥ तयास्तमनिआजागया
॥ तवकर रूपपञ्चभि ते ॥ षोडशउपचारजोरि मृजागया ॥ तवपूजास
कि ॥ श्रीगणेशाय ॥ क्षीरसमुद्रैमागया भोमहाराज लोकश्रुतिमि ॥

श्रीगुरु

३२

हो ॥ दशरथमैजन्मो तिअदिति तपार्इसी कौशल्यामैजन्मीभनि पूर्व
जन्मकावृत्तान्त ॥ वसिष्ठतेआजागया भोदशरथ फेरितिप्रावंशमाज
छिद्रुत्याकुराकहेदुसुन ॥ परमे श्वर महाविष्णुमाया जगत्संसारकनमोहग
रिगमया ॥ रमहामायाभयाकाति जनक राजाकापुत्रीसीताभर मिथि
तदेकमाजन्मतिन्याछनृतिक त्यातपार्इका पुत्र रामचदुतेविबाहागर्मा
धन ॥ तिसीता रावणतेहरितै जात्याछतेहिकारणगरि ॥ रावनप्रभृति को ॥

टिकोटिरक्षसः॥ मा न्यायं भोमहा राजदशरथ तसर्थः॥ विश्वामित्रते
ज्यामाग्याया॥ त्थोदिनुहवस निमामनमासंदेहनगर॥ तिप्रापुत्रतेसं
रकाहितगहन संसारकन पातनागर्नानिमित्र॥ संसारमा जन्मतिप्राय
न हेमहा राजमति॥ एतिआजागरे वसिष्ठ ऋषिआ प्रा आश्रममाजा
दाभया॥ ॥ नाहायदिदशरथराजाते विश्वामित्र ऋषिकन अनेकपु
कारसंगमातगरी रामतक्ष्मणदुर्कन दुकिआजागया भो विश्वामित्र॥

मुनि योदुर्कलक्षतार्क नयार्कते ज्ञागराउनुहंय सोगराउनुहवस॥ जा
पैवातघ हो भनिछानिलै जानुहवस भनि रामतक्ष्मणका हातसमाति वि
श्वामित्र ऋषिकाहातसोपिदिपा॥ विश्वामित्रमुनिलेपति॥ अनिषुसिभै
राजाकन आशिर्वादिदिपा॥ भोमहा राजदशरथ निम्राजयहवस॥ हा
मितपसियावाहणकावचनलेसदैकल्यानहवोस॥ भनि आशीर्वादि
दिगेर॥ विदामागी रामतक्ष्मणदुर्कन ऋषिराषिअपु पदिपदिवसि

श्रीराम

२५

गया. सा ^तक्षीना राघवा का अवतार हो भनि समझिउ. ॥ हर्ष विनगरि जादा जा
दा गंगाजिका निरूपु गया. ॥ नव विश्वामित्र ते. ॥ निराम लक्ष्मण कत भन्या. ॥
भोग लक्ष्मण योवन माता डक भंजारा क्षसी एक द. ॥ जोग क्षीसी का महु पी द. ॥
॥ रावण का आ जाले. ॥ अनेक बाह्य रा का यत माः दुः ख दिं ध्यो. विष्णु ग.
रि दिं ध्यो. कसै ते यत्त सिध्या उनु सके न ध्यो. सवै बाह्य रा का कंठ की न्यो.
राक्षसिक न मारि देउ. ॥ स्त्री जात क सो मारु ला भनि संदेह ग ली. ॥ कै हि सं.

२५

देह दैन. ॥ पापात्मा लाई मारेर. केहि पाप दैन. परंतु बाह्य रा का उपकार
गदी मा क्य न पाप हो ला. भनि भंदा. ॥ राम चंद आता गर्दन. ॥ भौव रा ज्यु. ॥
ज्योत म्मा आ जाले. ॥ सो गरीं ला. ॥ नव विश्वामित्र ते. राम लक्ष्मण का मुख हे
रि. अति हर्ष मान गरि यत्त आरंभ ग. ॥ ज्यो राम ले धनुष वाण समा ति टो क
र श वृ गरि वस्या. ॥ तव न्यो यत्त का गंध सु ति. ॥ धनुष का टो कार श वृ सु.
नि. ति ता उ का रा क्षसी. ॥ वडो भयान मूर्ति भै. ॥ बुलौ दंत निका सि. भयं क.

श्रीराम

३५

रमै॥ अकाशै ग्रास गरीं भ त्यारैं गरि आयेर॥ यत्तविष्णु गरीं भ नि आउंदा
 रामत क्षमण क न दे ष्यो॥ अति क्रोध गरि॥ ति दुई वात स तार्क॥ खानु मन
 गरि॥ राम तार्क॥ समातून पार गदी॥ राम बंदु ते अति ती क्षा भया का॥ बा॥
 राति येर॥ धनुज मां जोरि॥ ताउकार हसी का छा नि मा ह नि दि यो॥ तव॥
 ज्यो वा रा का ते ज स हनु स के नर॥ ताउकार हसी॥ ता त वृ ह ट त्या रै मू॥
 मि मा लो टि॥ बडो श व गरि॥ प्राण त्या ग गरि॥ मरी॥ तव ते स्ता वे ला मा दिव्य

श्रीराम

३५

ही एक॥ वडो ते ज ते सं यु क्त मै॥ राम का मुख्यां जि॥ हात जोरि र ह्या॥ ज्यो रा ह सी
 सी॥ अधि पूर्व जन्म मा॥ कोरु मक्ष को खा सी भया की थि यी॥ देव ता का आ॥
 प ते॥ पा पि भै र ह्या को॥ आज राम बंदु का पु सा द ते॥ पा प दे ह छो डि॥ दिव्य दे॥
 ह धार णा गरि॥ ज्यो सी ते भ नि॥ भो पर मे श्वर राम बंदु॥ प ली पा प यो नि मा ज॥
 न्म भ र्क॥ अने क पा प गरि॥ सवै वा ह्य ण का दो हि भ र्क॥ ज्यो व न मा व सी र ह्या का
 धे र व र्ष भ यो॥ आज त पार्क का पु सा द ते॥ ज्यो पा प॥ यो नि दे धि मु क्त भ यो॥ म॥

श्रीराम

३६

॥ भति. एतिमनेर. ॥ रामचन्द्रकनलोत्रगति. नितके राप्रदक्षिणागरि. स्वर्ग
रुन्. ॥ नवताहा. ताडकारक्षसीमरेर. सवैतपसीहरुका. मुनिहेरुका. आ
नेदभयो. सवैकायजसिद्धभयो. ॥ ताहापथि वि. श्वामित्रतडोसु धिमे. गम.
तक्ष्मराकन. आ फ्राकायमावसारुम्वार्गगरि. भातिंगनागरि. धन्य ॥ राम
होभति. नववि. श्वामित्रले. रामतक्ष्मराकन. अनेकशास्त्रपद्यायानाना.
प्रकारकाशस्त्रभयसुविद्यापद्यायाक्याक्याभत्या. बुझास्त्ररु. दु. स. वा.

श्रीराम

३६

पद्यास्त्र. ॥ याभुपतास्त्र. ॥ एताएतादुर्लभविद्या. रामतक्ष्मराकनदिया
. कलोविद्याभत्या. वाहुवर्ष. चौधवर्षनिराहारगरि. स्थापनि. वतनचट्ट्या
. एताप्रकारकाशस्त्रविद्यावि. श्वामित्रकाकुनाले. रामतक्ष्मरातेपाया. भनि. बुझा
तेनारदकनकल्या. सूनलेशोनकादिमुनिहेरुकनकल्या. ॥ ॥ इति श्रीअध्या
त्मारामायणे उमामहेश्वरसंवादे वातकारेऽवतुर्ध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ श्रीमहादे
वले आतागया. भोपार्वति. वि. श्वामित्रका आश्रमा. मारीवमत्याकी एकराक्षस

श्रीराम

३७

रमात्मभत्याको एक राक्षस ॥ लो दुर्गराक्षस ते सवैवास्मराहेरु कं न दुषदि घेर
हं ध्यो देव लोक तारु पनि अनेक दुख दिं ध्यो लो दुर्ग पापाम्मा राक्षस ते ते हि आ
अममा दुःख दिं ध्यो ॥ लो हेरि राम वंदु ते आ ता गमा भो विज्वा मित्र लो दुर्गराक्ष
स त पार्शका आ अममा कंठ क भया कोरु त पार्शका आ ता भया ॥ लो दुर्ग तारु
मार्कु ॥ आ ता दिनु रु वस भनि भयार ॥ विज्वा मित्र भंठ न ॥ भो राजकु मार
कुंरु वरि पा भयो भनि ॥ यज्ञ सा ताव नार्क यज्ञ सा मग्री जोरैर यज्ञ गमा

श्रीगुरु

३७

ना हा यज्ञ गदी ॥ यज्ञ का बुला आ काश व्याप गमा अनेक घिउ वीदि ॥
आ दु नि दि पा का आ दु त का वा स ना लो दुर्गराक्ष स ते सु नि ॥ यज्ञ वि घ्न गारै
भनि व डो वे ग ते आया विज्वा मित्र सिद्ध म विदु ना ते त न का समी प मा जा
न स के न ध्यो ॥ जै सै मा व से र र क चा रा व सार्क अ नि अ सि ना प य रै ॥ हा उ व सि
पा ॥ लो दुर्गराक्ष स प नि का म रु पी भ या का ॥ अनेक मा या जा त्या नि दु र ते प
नि विज्वा मित्र का यज्ञ मा य लो उ त्या त ग मा ॥ लो हेरि राम वंदु ते विज्वा मित्र

येउ. आतागया. ॥ भो मधेश्वर. प्रायात्मा राक्षसतपार्श्वका आचमा का कंठक
भयाका. ममाहं भनि. ॥ आतातिघेर. ॥ धनुषतिघेर. ॥ दाहिनाहातते. दुई
शरतिघेर धनुषमा जोरि. न्योवाणा कलो थ भयाका तसर्पजलो. कातात क
जीयमें थ. तले भया नको. ॥ एलावाणाते. मारिच लाई मारि. न्योवाणा का पु.
हारले न्यो मारीच का आंगमा तागेर तेहि बाणा का वेगते एकता घघोजन पार
॥ तंका देश का बाहिर खारमा. य न्यो. मूर्छा भैर ह्यो. फेर एक वानते. ॥ मात्य

जीर
३८

राक्षस भस्म भयो. ॥ एलोपराक्त मरामका हेरि. ॥ देव लोक का वडो हर्ष भै. अ
नेक तरह का सुवास भयाका. ॥ पारि जात आदि फुल वसाया. ॥ राम लक्ष्मण
का शिरमा पारि अनेक वाष्प निवजाया. ॥ अनेक गंधर्व गण. अप्सरा गण
नि नाच्या. वडावडा सिद्ध गण हरु लेपनि. अनेक प्रकार संग. राम लक्ष्मण का
लोच पाठ गया. ॥ अनेक मणि हरु लेपनि राम लक्ष्मण का जय ह्वो स भनि
आशिर्वाद दिया. एला प्रकार संग सबै ले श्रीराम चंद्र का पूजा गया. तिन दिन

श्रीराम

३१

संभगाहावडोहर्षउत्साहभयो॥ तबनिन दिनगयापधि॥ विश्वामित्रका
यज्ञसंपूर्णगया॥ विश्वामित्रलेरामतक्ष्मणाकायरक्रमहेरिदुर्दुमारकन
काषमारधि॥ आलिगनगरि॥ बुवनगरि॥ अनेक पावनाकोनिकोनिको॥ क
तमूतल्यार्थ॥ रामतक्ष्मणाकनबुवाया॥ आपुतेयनिखायेर॥ आनेदगरि
वस्या॥ नाहापधि विश्वामित्रले॥ आजगया॥ भोराम॥ अबदहावसत्या
होइनमिधितानगरजाउंहिउ॥ मिधितासहरकारजा॥ जनकरजा॥ तसरा

श्रीगुरु

३१

जाते॥ शुलोयज्ञआरंभगया॥ श्रीमहादेवकाधनुजोगपूजागर्थ॥ ज
सलेत्यो धनुषमचनसकला॥ तसलार्थ॥ आक्षीपुत्रीसीतादेविविवा
हगरिदिउताभत्याकोरु॥ तसर्थनिमिदुर्दु॥ बडापरक्रमीदो॥ मतैताउं
आभनि॥ रामतक्ष्मणातिघेर॥ विश्वामित्रले॥ तीसीतारामकनविवाहग
रिदिउंभनिमनमाचिंननागरि॥ जोदाजोदागंगाकातीरवारुगंगापार
गरि॥ जोदा॥ गौतमकाशीकाआश्रमपुग्या॥ नाहात्योआश्रममाअनेग॥

वा.

श्रीराम

५०

पुष्पफलमूलमया कोरहेछ. अतिमनोहरस्थानमया को. एहोदेवि.
रामचंद्रते. आपुले जात्या को भयापनि. मायाते. वातमका जवस्था.
माघवेशगारि. केहिन जात्या जै गरि सोधछन. भोविश्वामित्रगुरु. यो.
आश्रमवदोमनोहरछ. केहिजनुका भयापनि केहितायेरहे नछ. व
सनेमन लाग्यारहेछ. योतमुनिका आश्रम होमति. सोधेर. विश्वामित्र
सिधै. आजागया. भोराम. यो गौतममुनी श्वाका आश्रम होमति. यो आ

श्रीगुरु

४०

श्रमका. अधिभयाका वृत्तोंतक हंछु सुन. यो आश्रममा. अधिगै तम
अधिवस्थाका धिया. यो गौतमवडाते जखी धिया. तस तारवु ह्वाका.
धुत्री. महत्या दिया कीरही. ति अहत्या परम सुंदरी धि. तिनतेपनि.
गौतमका सेवा गरि. तत्का आश्रममा वस्था की धि. एतासमयमा. देवरा.
जस्तु आयेर. गौतम अधिदे उशाख पठ ध्या. एक दिन शाख पठदा
मा. ति परम सुंदरि अह त्याक न देखेर. कामवाणते पीडा भयेर पाप विन.

मै॥ रुद्र का मन अह त्याहे उगई॥ कुनवेतामा॥ अह त्यासंग॥ प्रसंग गर्तु
पाउतामनि॥ विवागनुताग्या तव एक दिन गौतम अघि व्याहानै॥ प्रातस्ता
नगनु भ निगंगा मागया॥ एतावेतामा॥ लोका मांघ भयाका इद्रुते॥ गौत
मरु रूपमै॥ अह त्याका आश्रम को था मागयेर॥ निअह त्याका॥ पनिबुता
धर्म नाश गरि॥ अह त्यासि त काम की डागरि सकि॥ बाहिर निखंदावेता॥ गौ
तम अघि आई पुण्या॥ गौतम रुद्र ताइदे प्योर॥ आश्रम मा निभत्याक॥

लो आश्रम मो यो जगामा दुर्गौतम छ भनि विस्मय मानि॥ केरि वडो कोय ग
रि भत्या॥ भोया पिदु रा वोर॥ ते लै मेरे रूप धारणा गरि॥ मला रुद्रो रुद्र गरि स॥ तको॥
होस॥ कह त्या भया कह॥ सत्य गरि॥ सत्य गरि कह न भत्या॥ मेरा आय गिते॥ त
तार्त ना रा गर्दु भनि भत्या को सुनि॥ रुद्र ते भस्म गली भनि दर मानि॥ कय मान मै॥
भक भक स्वर गरि विनिगया॥ भोगुरु गौतम॥ तपार्त का भय एध गत्यमि॥ रुद्र रुद्र न
गुरु डोहि॥ अयश्वी भया॥ अब तपार्त का रुद्रा पूर्व क गर्तु हव स भनि॥ तव गौत

मन्त्राधि. वडाकोपगारि. भय्या. ॥ भोपापाचार. जलातेले अधर्मगारि. तलो शासना
 गौला. ॥ पापभनिकुशर. निलतिपेर भय्या. भोइद्र. लर्गलोकमा. तंजला अध
 मीकोइये न. अवमैलेबल आपदिंदु. तेरा आंगभरिमा. एक रुज्जार १०००
 भगकाचिह्न ह्वोसभनि अथदिया. लोआपकातेजते. नाहि. इन्दु लोप्या द
 रामा त्रेमा जुलक उठेर. गर्द. नाहापछि गौतम मन्त्राधि. अह त्यावस्याकाठाउग
 पेर. अह त्यापनि अशमा निवस्याकीदेपेर. ॥ भनि भोपापिनी. तेहैम माधिए ॥

लो अधर्मगारि. जलो कुकर्मगारि. तलो आपदिंदु. ॥ पापभनि. ॥ क्रोधगारि. हे
 दुष्टदृग् गाकातीरमा तेहुंगा भर्हरहास. ॥ एतदिनतिरहरगारि. ॥ रामनामजप.
 गरि त्यावर भैव सोसभनि. जुनवेतामा अपोध्या माराम अवतारतिपेर. ॥ योआ.
 अममा. भाउनत तेसवेतामा. तत्का चरण तेनेरा भागमा खुनान. तवतसदित.
 तंमुक्ति होला तेसवेतामा. रामका चरण कायसादते. ॥ तेरा शरिर मापवित्रहो.
 ति. तहि वेताम. ॥ रामक नपूजा गरि तंम जार्द आउ. भनि अति आज्ञा गरेर गौतम

श्रीराम

४३

॥ हिमाचलमानयस्यागनुभनिहिमातयमागयाभोरामः तिअहत्यायुगाभैर
 ह्याकीयोनुहवोसभनिः भोरधव ॥ योमुक्तगनाकन ॥ निमावराते ॥ योदुं
 गादुनुहवसभनिभयार ॥ विश्वामित्रतेः तेहिजगामारामतक्ष्मरातेगधेर ॥
 रामते ॥ आकावरातेः दोधेरभनिमोअहत्याः कानतिमिदुंगाभैरह्यायो
 भनिआतागया ॥ तेहिबेतामाः गौतमकाआयमुक्तभैः वितमाआनंद ॥ भैय
 विश्वभैः अहत्यातेः गौतमकाआज्ञासजी ॥ रामकामुखहेरि ॥ चित्तमाआनंद

श्रीगुरु

४३

भै ॥ नारायणकाअवतारहोभनिसमजी ॥ आखावाट ॥ हर्षकाआसुजि विहा
 भजोरिः रामकातोत्रगया ॥ भोपरमेश्वरः तयार्ककलाहोभयाः अनेकदेवता
 तेचरणारविंदकनपूजागरिएष्याकातयात्रकावरणकमलकाप्रभावते ॥ एली
 पापिनीउद्धारगनुभयोः मेरादुष्टदेवतानारायणतयार्कहो ॥ केरितयार्ककाच
 रणारविंद ॥ महादेवकाजटाभाधारणागरिएष्याः तयार्ककापदारविंद ॥
 कारेणायुउत्था ॥ कोटि २ महापातकलेहोडिंछ ॥ भोपरमेश्वरराघवज

श्रीराम

४४

गन्मानासरस्वतीतेषतिवाउहाततेवी एतातिरेनयाइकागुणानुवादका
.गीतगार्क॥आनेदसुखका.आसुगरिः.त्योआसुते.आफ्रास्तनमेंडतक।
ननुवाउध्या॥एलापुकारकातपार्ककाचरणमा.कोटि२ नमस्कार.भो
परमेश्वर.रघुनाथ॥सुस्थितिकाकर्तृभयाका॥फेरनपार्ककला।
धौभया॥योगेश्वरकाहृदयमावस्थाका॥दुष्टसेहारगनीकनसाधुसंन
कारक्षागनीकन॥मायाशरीरधारणागरिवस्थाका॥एलातपार्ककान।

श्रीगुरु

४४

.वारंवारनमस्कार॥भोपरमेश्वर.तपार्ककावरीन.मैतेकागर्नसकुला.पे
चवक्क॥पांवसुखभयाका॥महादेवतेषति.तपाइकामहिमागर्नुसके
न॥भनि.एलापुकारसंग॥अहल्यातेरामकनस्ततिगरेर.आर्थनाग।
रेर.भया.भोपरमेश्वर.श्रीरामचंद्र.तपाइकानामतपार्ककाध्यान.स।
दैमेराहृदयमागमनुशकोस॥एतिवरमतार्कपुसन्नहलोसभनि।तिनफे
रापुदक्षिणागरि.रामकावरणमायेकदी.तिअहल्या॥जाहोगौतमनपप

श्रीराम

४५

गर्भ्यानाहाहि मातृयमागई जसले अहल्यालेग ज्याको रामका स्तोत्र ले।
प्रवित्र देह भै जाठगलीया तस मा निसको ब्रह्महत्या आदि अनेक पाप
नाश दुंदुभै ॥ रामका भक्त भै ॥ अहल्या आय मुक्त भयाको क पासुन ला त
स्को कोटि २ पाप भयापनि नाश दुंदुभै नै कैलास पर्वत मा श्रीमहादेव ले।
पार्वती कन आजाग्या ॥ इक भा सत्य लोक मा ब्रह्माले नारद कनक ॥
स्नानै मिथारण्य मा सूत ले शौनकादि ऋषि हरु कनक ह्या ॥ ॥ ॥ ॥
इति श्री शुद्धा मरा मायणे वाला काण्ड पञ्चमाध्यायः ॥ ५ ॥ श्रीमहादेव उवाच

४५

श्रीमहादेव ले आजाग्या ॥ भो पार्त नि रामका चरण ले दुंदुभै ॥ अहल्या मुक्ति
भयाको दे प्रि ॥ विश्वामित्र ले आजाग्या ॥ भो राघव ॥ आ हा को कार्य जनि
वाहि या को तपाइ ले सवै गर्नु भयो ॥ अव जन कर जा काय से हे न जाउं हिड
भनि ॥ राम तक्ष्मण अधि सारि ॥ आयुष्य दिव सिंगे गात गर्नु भनि जहा जमाव
ह्या ॥ गंगा तरि आयो भनि ॥ यो समाचार सुनि जनक राजा ले ॥ राम तक्ष्मण समे
त गरि विश्वामित्र ऋषि श्र आउनु भयो भनि वडो हर्ष गरि समस्त मंत्री पुरोहि

नगरसत्तानकमंत्री आदिगरि आयेर हेव जाया. तव. राम लक्ष्मण विष्णु मित्रक.
नगर मित्र बोलाउ त्याया. नाहाय थि. जनक राजा ते. विष्णु मित्रकत. अने
कमानगरि पूजागया. नमस्कार गया राम लक्ष्मण का मुख देरि. आताग
या. भो विष्णु मित्र कुमार. कस्का बाल हो भनि. कलोर मोहन मर्त्य
लोक मा दुल्लभ. इदुई बाल का ते ज ले. जल मराउ पप निपु का का भ
याक मत का पात्रै भया का ते चले अमं न शो भा भया का मुख. इदुई कु

मार. कस्का हो. एला छोरा पाउ त्या पति धत्य. भो विष्णु मित्र मे राम न मान
इत हरु. साक्षात्तर नारायण का मूर्ति होला भनि ठांय. इक स्का पुत्र. क
लो मूर्ति धारणा ग या का. धत्य. भाग्य हो. जो निश्चय म लार्क क हुनु होला
भनि. जनक राजा ते विष्णु मित्र दे उ सु ध्याया. तव विष्णु मित्र ते आताग या
भो म हाराज जनक. इ अयोध्या का राजा. दशरथ. तस्का पुत्र हो. इदुई एक
काना म राम चंदु हो. एक काना मत लक्ष्मण हो. भो म हाराज. मै ते मेरा आश्र

श्रीगम

४७

ममा ॥ यत्तसिध्याउनसकेतर ॥ एषसतेदुःखदिपेर ॥ यत्तविप्रदुःख ॥ एते ॥
कारणमा ॥ मैलेद्वारभराजाकेउ ॥ मागेर ॥ त्याया ॥ योगंगाकापार ॥ जाड ॥
भन्नाएक्षसीएकदमहाभयानक ॥ वास्मणतार्त्तसदैपीदुदित्या ॥ एली ॥
क्षसीतार्त्त ॥ द्रमचंदुलेएकवाणलेमाया ॥ फेरिमैलेयत्तगरिरहदमा ॥
मारिविभन्नाएकरक्षस ॥ मात्स्यभन्नाएकरक्षस ॥ योदुर्दराक्षसले ॥ यत्त
विप्रगणैमति ॥ आयोयो ॥ तवद्वार ॥ मलेदेव्यार ॥ दुर्दवाणलिये ॥ यत्तकात

श्रीगुरु

४७

हेमारीवतार्त्तहानिलंकाकाखारसंमपुयाया ॥ एकवाणले ॥ मात्स्यातार्त्त ॥
हानि ॥ ओहीठाउंमाभस्मगया ॥ एलोप्रभावहो ॥ योएमचदुका ॥ भोमह ॥
राज ॥ फेरिगंगानीरमा ॥ गौतमकाआश्रममा ॥ गौतमकाआयले ॥ सत्यपुगदे
धि ॥ अहत्यादुंगाभैरवाका ॥ द्रमकाचरणलेदुदैमा ॥ आयमुक्तमैअहत्या
उद्धारभयोभति ॥ एलो ॥ प्रकारले ॥ विश्वामित्रले ॥ जनक ॥ जाकनआजा ॥
गया ॥ फेरिआजागया ॥ भोजनक ॥ तपार्त्तकाचनुर्जागहेहंभनि ॥ रुदुर्द ॥

श्रीराम

४८

कुमारपतिआया॥ अवबिलेवनगरी॥ देखाउनु हबोस॥ भनि॥ आज्ञाग
जाताहापछि॥ जनकले॥ आफ्नामेंत्रीहरुकनभत्या॥ भोमेंत्रीहेरुहो॥
॥ हामिहेरुकाधनुष॥ अनेकराजाका॥ गुमानकनमदतगर्मा॥ स्वर्गम
र्त्यातात॥ तिनभुवतरजार्गगरिरहत्या॥ रावरा॥ एला रावराकापनि॥
गुमानहत्या॥ एलोमहाधनुष॥ श्रीमहादेवलेविष्णुसुरकनमारी॥ हा
म्रावाताईदीगव्याका॥ एलापुकारकाधनुष॥ एकदुर्दृष्टजारमानिस॥

५

श्रीराम

४८

लेपनित्याउनुनसकत्या॥ धेरैसिपाहिवदुतार्थ॥ बोकाहत्याउभति॥ जन
कराजातेआज्ञागरेर॥ मेंत्रीहरुले॥ यहजार॥ ६०००॥ मानिसलेबोकाह
न्योमिनाकधनुष॥ गुमचंदुका॥ मुख्यजित्याया॥ नाहाराचंदुले॥ जो
धनुषनाकारगर्मा॥ हारुहेरौभनि॥ अनेकराज्यसहरकामानिसआया
देवलोकेले॥ आकासमाबसिहेरिरह्या॥ केरिअनेकअंनपुरकाखीजनकरु
पनिहेरिरह्या॥ नाहाउप्रांत॥ रामचंदुले॥ निचामिचकनआज्ञाग

गयाको

भोविष्णुमित्र॥ योवडाधनुष. मंडवाहिसंकारगरुता॥ आसादिमुहदे
 सभनि. आसातिघेरजुरुकउठि॥ पीतांबरधौनिलेपठकावाधि. न्योम।
 हाधनुषउवाहिरि. कलोन्योधनुषभया॥ अतिरामोभयाको॥ अति।
 दुलोभयाको॥ अनेकमणिमणिकयाः॥ द्विरा. मोतिगंजिरायाका. अनेक
 मोतिकोमातायाको॥ अनेकरत्नकावृताभयाको. अनेकपंछ. पुंगुर
 रुंदायाकाअनेकजरीजवायकावासातेवेधिरायाका॥ अनेकप्रकार

प्यासमानि. तांदोवठाया॥ तांदोवठार्तांदोदेरिफि कीतांकारसरगर्द
 ॥ न्योमदेअरकाधनुषभावि॥ न्योधनुषभायाकास्वरकेनितत्रिभुवनक
 पभैभुवचातभयो॥ न्योदेघिरि. सवैलोकआश्चर्यमानिरह्याम्यलोअदु
 तकर्मरामलेकगयाकोदेघि॥ सवैआश्चर्यमातिरह्या॥ एसावेतामा. सी।
 ता॥ अनेकमोतिकागरुतातार्॥ दिव्यवस्त्रतार्॥ सुवर्नकापुष्पमाता।
 तिघेर॥ अनपुत्रतादुवौतार्॥ कलीसीताभया॥ याकगयाकासुवर्णीकै

श्रीराम

५०

वर्णभया की॥ अती सुंदरी भया की॥ भर्षरकातरणी भया की॥ आकाश
नमंडल आपुतेला जाका वखवाट धिचू ह्याकारै गरि॥ साधात ह्यी
समान भया की॥ एली घरम सुंदरी सीनाले॥ सुवर्ण कायु ध्यमा लाते॥
श्रीराम चंदुका गलामाला घेर॥ नित केरा घट धिगा गरि॥ चरणमाट
कटि छी॥ अब मेरा म नोर घघूरी भयो भति मनमा विलारु वडा हर्मस॥
रि॥ कारका चंदु मारै॥ उज्जाला मुख गरि युसत्र भैरव्या॥ यो हेरि॥ जन॥

श्रीराम

५०

कराजा काय विवडा हर्म गरि॥ अनुरकार निद्रुपनि॥ आनेद भै॥ अनेक
वाजा गित नाच अनेक मंगल उत्साह गया॥ स्वर्ग मारव्या का देव लोक
लेपनि यु ध्यवृष्टि गया॥ देववाजा वजाया॥ अनेक गंधर्व लेगीत गाय
असर हुरुना च्या॥ तीसी नारायण चंदुते निवाह गरे॥ देव लोक का आ
दभयो॥ नवउषांत॥ ताहा॥ जनकराजा॥ विश्वामित्र कन॥ आसागया॥
भो॥ विश्वामित्र॥ मेतै पशु कुण्ड खंतला गदा॥ माहलो जोदा मा॥ इसी ना

देवि. ह तो मा रु डेर पृथ्वी वाट मा धिआई ॥ एलावेता मा ॥ मै ते हियेर
 ॥ हा मा एणी तार्क सो धिदिआ ॥ रु सीता मेरा धर्म पुत्री हो. ता हा पथि
 ॥ नारद ऋषि आहा आया म तार्क भक्त परमे श्वर महा विष्णु ते. वि
 भुवण ए जग रिखा का एवण मार्ग कन ॥ सवै देता का काठ मै भय
 का. सवै वासना तार्क दु ॥ खदि त्या ॥ पाणा मा निगु ह गन कन रा ॥
 म भै भवतार ति नानु जोग मा पाते सीता भै न पार्क वसन आउ सी. ति सी ॥

ता के हि प्र कार गरि कन पति. राम चंद्र कन दिनु हवो सम नि नारद मु निते आ
 जाग्या ॥ त स र्थ मै ते ॥ यो म दे रु धनु या गग्या ॥ ए ति कारण ते हो. ज स ते
 यो भनु स तां कार गन सक ता. त स तार्क यो सीता देउं ता भनि. कारण तु त्या
 या भव मेरा मनोरथ पूर्ण भयो भनि ॥ ए ला प्र कार ते जन क राजा ते वि श्वा मि
 त्र देउ आ जाग्या ॥ त व राम चंद्र कन सी ता कं मा दान दिनु तार्क ॥ यो न यो
 आ मा द शर अर जाक नवो लाउ न प ठा या ॥ यो मि थिरा न गर मा भया

कोवृत्तांतकुरापत्रमातेखेर ॥ ॥ योषत्रहेनैमाचतार्कगर्नुपर्कभनि-वा ॥
 पुवेगमयाका ॥ योडादीपठाया ॥ ताहायोदूत ॥ अयोध्यापुर-द
 शरथराजाकननमस्कारगरि-जनकराजातेदीपमाकायत्र ॥ सो ॥
 पिदिआ ॥ पत्रहेरे-दशरथराजाकाबडोहर्षमै ॥ आक्रापुरोहित-व
 शिष्यकनडुकेर ॥ योवृत्तांतकहेर ॥ अनेकआक्रारोअका-लोकवदुहा
 ॥ हाथिओगुरथसिपाहि ॥ बचनुरंगवतनानाप्रकारकागहनातगार्

सिंगारि ॥ फेरिकं त्यादानतार्क ॥ ज्याचाह्याको ॥ आफुतेतुत्याउत्यास
 णंजामतुत्याद्रमिचि रा नगरजानतार्क सवैतार्कडुका-जतिजतिआ ॥
 फ्रा ॥ सकसंमकागहनाबखतार्करागोगरिसिंगारिआउनुपर्कभनि-डा
 केर-सवैलोकवदुलिआया-त्यास्तावेतामा ॥ कौशल्याआदि ॥ महारानि
 हेरु-रत्नकायातकीमारवि-अपिपठाया ॥ ताहापदिदशरथराजासार
 पितेरपह्याघेर ॥ लोदिकारथमादशरथराजार-वशिष्ठ-दुईएकैरथ ॥

वा

श्रीराम

५३

मावदि. जनकराजाकारज्य॥ मिथि सासहरमा जाउं भनि प्रस्था नगरि अ
 योभ्यासहरवाटवाहिर निस्का. ताहासवैसेना॥ अनेक वाद्यनावयात्र
 गरि. नानाप्रकारका. ध्वजानिशानगरिहि द्या॥ ताहापछि. दशरथ
 जाआ॥ उनुभयोभनि. जनकराजा देउखवरपुंगर. जनकराजातेपनि
 .सवैहानि॥ घोडा. रथवपामकसमेतगरि. ताहासंमलिनगयोयात्रा
 गरि. आक्राणज्यमावोलाईत्यामा॥ ॥ ताहादशरथराजाकन. अति।

श्रीगुरु

५३

रामाभयाको॥ घरमावासदिपा॥ ज्यावाद्याकोभंदारभरि. दशरथराजा
 कन॥ अनेकमात्यापूजागरि॥ दशरथराजाकनवासघरमा॥ ज्याज्यात्र
 द्यागयाको॥ वस्तुकसवैधोकपूर्णगरिगया॥ ताहापछिरामलक्ष्मण
 ते. दशरथराजाकोभेटगरि. दुर्जननालेपनिदशरथराजाकाचरणमाये
 कदीसुहृत्तारि॥ कौरात्याआदि. धोकदी॥ वित्त्वारसंचार. कुशलप्रस
 नगरि॥ ॥ ताहादशरथले॥ रामलक्ष्मणकामुखहेरि॥ पुत्रसहते. आ

श्रीराम

५४

नंदगरि॥ आसिंगनगरि॥ काषमारविशिचेरमासुधेर॥ म्वात्रगरि॥ एस्ताप्र
 कारसे हर्षगया॥ ॥ ताहापछिजनकराजाते॥ आफ्फुपुरेहिजसंतान
 मषीदाकि॥ कंन्यादानदिनाकनसभागरिनिकोदिनमा॥ तिथिनक्ष
 तवारहेरी॥ लयजोरेर॥ कंन्यादानदिनुतार्क॥ नयारमैवस्था॥ दाहिना
 तिर॥ दक्षारथवसी॥ वाउतिर॥ वशिष्टवसी॥ मारुमाश्रीरामचंदुवसाई
 ताहामिताकनजनेकआभरणगहनातार्क॥ जनकराजातेपति॥ राति॥

श्रीगुरु

५४

लेयनि॥ नितकुशलियेर॥ सीताकाहातसमाईश्रीरामचंदुकनकन्याद
 नदिआ॥ ॥ ताहापछितक्ष्मणकन॥ आफ्फुपुत्रीदानदिआ॥ जनक
 राजाकापुत्रीदुर्क॥ भरतशत्रुघ्नकनदिआ॥ ताहावडायज्ञगया॥ न्यो
 यज्ञसातामा॥ सुवर्णकासिंहासनमाश्रीरामचंदुर॥ सीताकन॥ वसाया
 ॥ रामसिंहासनमा॥ राजगर्नुभयाकोदेधि॥ वडाशोभादेधि॥ रामकारसी
 तादुश्कामुखहेरी॥ जनकराजाआदिसवैकाआनंदभयो॥ जसोवैकुंठ॥

श्रीराम
५५

मा नारायणार लक्ष्मीवस्त्राकादेशी वैष्णव लोकहर्षका आनंद भय
रै जनकराजाका आनंद भै भंय न भौविश्वामित्र ॥ क्षीरसमुद्रते आ
फ्रीपुत्री लक्ष्मीविलुतार्द्रदिपेर हर्षभयारै मेरा आज हर्षभयोभनि तव
नेलाविला जनकराजाते रामपनि सीताकापनि गोडामा दोपेर चर
णोदक कमण्डलुमाएषि निचरणोदक जाफ्राशिरमारणि ॥ निचर
णारविंदकलायें भन्या श्रीमहादेव तेजठामारणि ॥ फेरि ब्रह्मा

श्रीगुरु
५५

तेपनि ॥ कमण्डलु जाफ्राशिरमारणि आपुतेधारणागयाका एत
चरणारविंदहो भनि ॥ भनेर ॥ मकृतार्थभयाभनि आनंदगरी ॥ रामलक्ष्
ण ॥ भरतशत्रुघ्न दशरथ जाविश्वामित्र ॥ आदि ॥ गरी ॥ जोदशउपव
रते ॥ पूजागरी ॥ जनकराजाते ॥ रामका लोत्रगया ॥ हेपरमेचरराम न
पाइकलायें भन्या ॥ संसारकाखीमी कर्ता हर्ता होसृष्टिगत्तापनि ॥
नपाइहो ॥ दुष्टकनसंहारगर्ता ॥ साधुकनरक्षागर्ता ॥ पृथ्वीकोरक्षा

गर्तकन ॥ पृथ्वीकाभाण. हरणकन. नानाअ. वतारतिआ. एताति
 मिकननमस्कार. हेपरमेअरतपांभिकामहिमागनुसकेनचतुर्मुखव
 स्नातेपनिजपभिकामहिमागनु. चारमुखतेभतिपनिपारगनुसकेन. मै
 लेकावर्तनागरिसकि. येलाभोरधु नाअ. ममाधिसेतोषदुनुहु जोस
 तपार्शकाचरणारविंदमाकोटि. नमस्कारभनि. स्तोत्रगरीसीताकन. द
 शहजार ॥ १०००० ॥ हानि. वीशहजार ॥ २०००० ॥ घोडा: तीसहजार

श्रीगुरु
५६

२००००० सिपाहि. एकलाख १००००० दशदासिएतिसवैकनआभर
 रासमेतगरि. सीताकन. दाधिजोदिया. फेरिअनेकदुकासुवर्ण. रत्नआदि
 दाइजोदिया ॥ ॥ नाहापछि. जनकराजाकाएणीहरुते. सीताकन
 आलिंगनगरि ॥ आयुआयु विलापगति ॥ खेडनुमनतेनसकिरहेदा. ए
 तावेलामा. दशरथराजाआजागईनु. हेजनकराजा ॥ अवहामिहरु. विद
 माग ॥ विदायिवुहवोसहामिहरु. आफाराज्मजोखुभनिभनेर. जनकराजा

श्रीराम ले. हूँ तो सबेस भेदा वेला मा. ॥ सीता विलाप गरि वस्य का देषी. ॥ भंजन ॥
 ५७. हे पुत्री सीता. निमि कान विलाप गे ॥ जली मिमि दौत लानि सायु रुष
 दौ. धन्य २ निमा भाग्य हो भनि. बुझई दीप दाय ॥ ॥ ना हा पदि. दश
 रच राजा राम लक्ष्मण. समेत गरि. आ झार ज्य जान कन ॥ तयार भया भ
 नि. कै लास मा श्री महा देव ते पार्वती कन आ ता ग ज्या ॥ ॥ ॥ श्री श्री ज्ञान
 एसाय होउ मा महे श्वर सेवा दे आ दि का रोड छ श्री ध्याव ॥ ६ ॥ ॥

श्रीगुरु
५७

महा देव आता गछे न. ॥ हे पार्वति. दशरच राजा ले. ॥ राम लक्ष्मण भरत रा
 वुष्ट. ॥ सीता आ दिचार वोहारि एणी हूँ समेत गरि. ॥ अनेक यात्रा गरि. ना
 ना प्रकार का. वाजा वजार् नाना प्रकार का मंगल गरि. महा उसा हूँ शब्द ग
 रि निशब्द सुनि. तिन भुवन का लोक विस्मय मानि. ॥ मिथिला देश वाट. ॥
 यो ध्या निरहे रिजादा. ॥ एसा प्रकार से गवहा हूँ गरि आउंदा. एसा वेला
 मा. अनेक उज्या न भयो. ॥ भये कर. डरला गे मूर्ति दे ध्या. ॥ नाना उज्या न

श्रीराम

५६

अमेगलभयो अनेक जंबुक रूपा लकराये ॥ अनेक जात का मृग हर दहि
नावर्त गरि मया ॥ एतो उप दुव दे घेर. दशरथ राजा का मन मा संदेह भै
मन मा चास मानि ॥ वसि एक न आ जा गया ॥ हेरू वसि ॥ अनेक अमे
गत दे दे धि मेरा मन संका भयो. नाना मंगल गरि आ जा मा म हा उप दुव
भयो क सो भया का कार रा हो. मेरा मन व डो संका भयो. क सो होला. आ
जा गर्नु ह वास. तपा नू सर्व त हो ॥ सवै थोक जा मा हो भनि. दशरथ राजा

श्रीगुरु

५६

ते भया को सुनि ॥ वशिष्ठ आ जा गर्दन. हेम हा राज दशरथ. जो उप दुव भ
या काते ॥ पै ले तपा नू का पुत्र का भय डं ॥ यदि शुभ डं ॥ जो मृग का व
गतै सु द्र आ घेर दहि नावर्त गरि गया को निको हो ॥ त्यो व डो मंगल हो
भनि. हेम हा राज ॥ शंका न गर्नु ह वास भनि वशिष्ठ ते. ए सो आ जा गरि ह
दा ॥ म हा वायु भये कर गरि आया ॥ त्यो व ॥ ना सते धु तो उ ठा घेर ॥ अंध का
र भयर. सवै मो द्वा का. आंखा मा परेर ॥ आफु आफु विचार गर्नु सके नर ॥

श्रीराम

५२

वडाका धागरिरहंदा. वेतामा. कालागिसमानजेज भयाकापरजुरा
सभार्थपुग्या. **॥** ज्योयशुरामकलाहंभया. विभूतलार्थ. जगदा बुलोभ
याका. कालोमृगछाला ओढि **॥** एकहातलेपरजुलियेर **॥** साक्षात्तज
मराजार्थेवडोनेजखीभयाका **॥** जमगणिकापुत्र. साक्षात्तकालागिस्व
रुप. सहस्रार्जुनकनमारी एकाजीसफेरामृचीमानिः क्षत्रियगरिरहं

श्रीगुरु

५२

त्या **॥** यमराजसमान **॥** एलापरशुरामले एकाहातमा **॥** धनुषराषि एकाहा
तलेपरजुलियेर **॥** सूर्यआचार्य **॥** दशरथराजाकासंमुखआरुपुग्या. ज्यो
परशुरामकामुखदेखिदशरथका. वडोभयमौल्या **॥** अवमेराचार्यदोरा
पनि **॥** एलाहातमापग्या. वाचत्याछैनमनि **॥** मतमात्रास **॥** निभकभ
कगरि **॥** परशुरामदेउ **॥** विनिगन्या. हे परशुराम **॥** ईमेराचार्यपुत्रकाजीव
दान. तपार्थदेउमृगछुभनि. छाडतहवोसभनि **॥** एलापुकारले **॥** दशर

विति

श्रीराम
६०

थराजाते ॥ आतागया ॥ ॥ ना हाउयां न ॥ परभुरामते ॥ आसा दु लो गरि
लात लात गरि ॥ तेस का गो दा ते टे क दा ॥ पृथ्वी के प गरि ॥ वडा को प गरि ॥
मल द्दम लात ॥ भोग ग म्मा ऊ रि ॥ अहं कार गरि ॥ द शर च का कु रा सुं दे सु
नि ॥ परभुरामते आतागया ॥ दे द शर च ॥ म ॥ त संग यु द्द ग रै भ नि आया
को हो र्न ॥ ते रा पुत्र रा म संग यु द्द ग रै ला ॥ या पृथ्वी मा ॥ ते रा पुत्र ते ॥ राम
नाम ज गा या ॥ एक यो राम द्द ॥ ज म द शि का पुत्र ॥ सह सार्जु न आ दि ॥ एक

श्रीगुरु
६०

यी स फे रा क्षा त्रि ना रा ग त्या ॥ म यो राम द्द ॥ ज्यो क्का को राम हो भ नि ॥ दे द श
र च कि राम ना म द्द ॥ कि ॥ नि राम संग यु द्द ग र्हु भ नि ॥ भो राम चं द ॥ ते ते म
हा दे व ते ॥ त्रि पु रा सु र मा या का ध नु ष मा चि स भ नि ॥ तं अहं कार गरि स ॥ ज्यो
ध नु ष ता धे रै व र्ष को पु रा नु हो ॥ वि रा ते षा ये र ॥ भा चू न ला ग्या का ॥ ज्यो क्का
ते ते म रा क म दे षा र्क्ष स ॥ ते रा य रा क म हे हं ॥ मे रा हा त मा को ॥ ध नु ष ति ये र
॥ तां कार गर्नु स की भ त्या ॥ य रा क म म हो भ नि ॥ ए स्ता प्र का र ते ॥ प र भु राम ॥

श्रीराम
६९

काहानमाकाधनुषवतैलेयोसितिघेर॥ व्यातैलेन्योधनुषताकास्य॥
ठाइजसैवालधरुधनुषयेत्॥ तलैगरितांकारचछात्र॥ जाफ्रान
कसमाहाका-वराएकतिघेर॥ न्योधनुषमाजोरि॥ श्रीरामचंद्रतेआ
जागया॥ हेपरभुराम॥ अबयो॥ तिस्राधनुषमा-मेरावाराजोमो-यो
प्रयोगकाहगत्यहो-तरादुर्मुखदाभाचौकि-नेराशिरकाहुंकिघोवा
मकावारा-वर्थहुआहेत॥ अबकसोगर्वाहोभनि॥ एस्ताप्रकारते॥

श्रीगुरु
६९

श्रीरामचंद्रते॥ आजागयाजा॥ हापभुरामकाखगजानाकनवाणायहा
रगरिमारिदिया॥ एस्तोगयाकोदेघीआहापभुरामते॥ क्यागरो-क्यानगरो॥
भनिआपदिया॥ हेरामचंद्र॥ आपुआपैआत्माहोभनि॥ विस्महोभनिचा॥
तनपावोसभनिएतिआपदिघेर॥ ध्यानदृष्टिगरिहेदी-पुरापूर्वकाकुरास
मरि-विस्मकाअवतारभनिजानि॥ आपुतेजहिनभयाकाहेरी-मेरातेजस
सैसंगगयोभनिचिंतनागरि॥ अबमेराघतहोईनभनि॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीराम

६२

अवदशरथकापुत्रकासमयभयो॥ विष्णुकातेजुलेसेजु नभयाको
जानि॥ पशु रामलेहानजोरि॥ आजागया॥ हेपरचरघुनाथ जपा
निमैलेजाये॥ जपार्हमानिसहोरन॥ साक्षात्परं वसुदेव मेरातेजत
पार्हलेनिकुत्तये॥ पैहमवालखददा मपुजासतीर्थमाजाई तपस्यागरिरह
दा तपसावेला मा परमेश्वरमाहाविजु आई मेरामुष्पाजि आजागया देवा
ए हेपरमेश्वरनारायण मलाईवरपुसचनयेत मेराशत्रु काकुलसमेतना

श्रीगुरु

६२

मैनरहन्पागरिमसहारगछु योवरपुसचहवोस ननिमैलेनया तवपरमेश्वर
आजागछु हेपरशुराम तैलेसहसाजेन आदि क्षत्रियहसहसहारगरन नि
मैलेनया तवपरमेश्वर आजागछु हेपरशुराम तैलेसहसाजेन आदि क्ष
त्रियहसहसहारगरन रकाईस्तेराशत्रुनाशगरि चक्रवर्तिहोला रका
ईस्फेरापर्यंत पृथिवीमा नीक्षत्रियगलास् मेरातेजले मेरातेजले तथा
इपसर यसागराउला ॥ ॥ ताहापछि अयोध्यामादशरथछेउ मेरातेजले

श्रीराम
६३

॥ अवतार होला ॥ रावण ॥ आदि गरि ॥ दुष्ट संहार गर्न कनः नेहि वेला माः ते
ते मेरा दर्शन गरेरः नेरा तेज ॥ मैले फकोउला ॥ तवा ह्मण का बाह्रौ भयेर
एक रुत रयुग संममा हेरु पर्वत मात पस्या गरि ॥ मैसग ॥ ती नहु न्या ॥ ए
लापकार संग मला ॥ आज्ञा गर्नु भयो ॥ हे परमेश्वर राम चंद्र ॥ आज मैले
सहस्रार्जुन आदि ॥ अनेक राजा हरु पनि ॥ मारि सक्यो एकाघी सफेर निक्ष
त्रिप गरि ॥ मोषु धी दत्ता त्रेय तार्क दान दी सक्यो ॥ अनेक राजा हरु तार्क मा न्या

श्रीगुरु
६३

का पाप पनि ॥ आज तपात्रिका दर्शन पायेर ॥ सवै पाप नाश भयो भनि ॥ पशु
राम ते श्रीराम चंद्र कनलोत्र गरि ॥ फेरलोत्र गम्मा ॥ हे परमेश्वर ॥ तपा रुका
रीर दैन ॥ निरंजन निराकार ॥ ज्योती स्वरुप हो ॥ एस्तानि मिरा घव भै ॥ दश
रथ राजा का पुत्र भै अवतार भयो ॥ अविनासी ॥ कैलेय निनाश हुन्या ॥ अव
क्त तपा रु कनन मस्कार ॥ भो परमेश्वर तपात्रिक लाछौ भग्ना संसार का दुःख
नाश गर्न कन ॥ मनुष्य अवतार भै ॥ पृथ्वी मा अवतार लिन्या ॥ भक्त का दास

श्रीराम
६४

रुद्रा. दुष्टकानाशगन्ध्या ॥ एस्तानपाई ॥ फेरिसेसारमामायाते. वृद्धा
रुद्रादि. समत्वगरि ॥ रक्षाकन ॥ एलीमायातेतयांजिक नहुं नैसकेन
॥ एस्तानपात्रिकननमस्कारहेरघुनाप. तपात्रिका महामातेसु. सि. स्थि
ति संहार गरि ॥ आपै. सु. धि गरि ॥ आपै. तेपा तना गरि आपै. सिततिन
गन्ध्या ॥ एस्तानपात्रिका गुण ॥ मक तिभन्न सकेला ॥ भो परमेस्वर ॥ राम
का अवतार भै रह्या ॥ तपात्रिकननमस्कार ॥ वृद्धा विष्णु ॥ महेस्वर

श्रीगुरु
६५

पतपात्रिकननमस्कार ॥ विश्वरूप. नारायण. वामन अवतार तिन्ध्या ॥
वासुदेव भन्नाप नितपात्र ॥ फेर पुरुष प्रकृति भन्नाप नितपात्र ॥ त्रिहो
तपात्रिकननमस्कार भनि ॥ एस्तान प्रकार संग ॥ श्रीराम चंद्रकन. पशु राम
ते लोत्र गरि ॥ ॥ ताहापदि परमात्मा ॥ श्रीराम चंद्र संतुष्ट भद्र आत्मा
गन्ध्या ॥ हे पशु राम निमित्त गन्ध्या का लोत्र ते ॥ मसं तोष भयो ति मिधम ॥
हो ॥ वरमाग भनि ॥ आत्मा गन्ध्या ॥ ताव पशु राम ते विनिगन्ध्या हे परमेस्वर

रामनेपात्रिकारमनाम॥ मेरामनमाएधिनपस्यागर्हु॥ फेरिभैलेगया॥
 कोलोत्र॥ जसलेपाठगतीनस्काअनेकअपराधभयापनिनेस्काअंत
 कालमा॥ रामनामस्मरणगर्नशकोसभनि॥ एतिवरप्रसन्नहवोस॥ भ
 नेर॥ नवजाहा॥ परमेश्वररामलेनथास्तभनिआज्ञागया॥ ॥ ताहा
 पछि॥ पशुंरामले॥ रामकाचरणमाधोकदियी॥ क्षत्रियमायाकापापना
 शगर्नकन॥ महेदुपर्वतमागयेर॥ एकहृन्नरियुगसेमनपस्यागर्नुभनि

विदालियेरगया॥ ॥ ताहाप्रांत॥ रामदशरथलेपरमेश्वरकामाया
 लेकेहिसमजनुसकेन॥ न्योपरशुभमगयो॥ मेरकोशकापुनर्जन्मभये
 भनि॥ चितार्द्र॥ रामचंद्रकनआतिंगनगरि॥ हर्षकाआश्रुवगात्र॥ बुंवन
 गरी॥ आनंदगरी॥ वाजावजाईअयोध्यागया॥ ॥ ताहापछि॥ राम
 लक्ष्मण॥ भरत॥ शत्रुघ्न॥ चारैपुत्रता॥ चारैअंतपुरमापठायेर॥ चारैज
 नाआफ्रा॥ एनिसंगअंतपुरमावसी॥ सुखमोगगरीरह्या॥ एस्तावेताम

श्रीराम

६६

एकदिन क॥ कैदेशकाराजा॥ भरत॥ शत्रुघ्नमामा॥ अयोध्यामागयेर
विचारसंचारगरी॥ दशरथगजादेउआजागया॥ हेमहाराज॥ भरतेश
त्रुघ्नकतहैजायेर॥ हाम्राएज्यमादुरुचारमहिनाएषुभनि॥ एनीरुहसमेत
गरिहैगया॥ ॥ नाहापछि॥ दशरथगजातेरामरसीताकासुखदेरिव
डोहरखगरिरह्या॥ कसोभन्या॥ इन्दुरसचीदेवीकोविलासहेरि॥ कश्यप
काआनंदभयाफै॥ दशरथकौशल्याएनिकाआनंदभयो॥ निरामते॥

श्रीगुरु

६६

सीताका

श्रीराम

६७

सीतासंग॥ अनेकक्रीडाभोगगरिमहाआनंदगरिरह्या॥ कसोभन्यावैकुं
ठमा॥ श्रीनारायणर॥ लक्ष्मीसंगक्रीडागयाफै॥ नरमूर्तिश्रीरामबंदुतेए
लायकारसंगसुखभोगगर्दभयाभनि॥ श्रीमहादेवतेपार्वतीकनकह्या॥ यो
कपावह्यलोकमावह्याते॥ नारदकनकह्या॥ सतते॥ नैमिषारण्यमाशौन
कादिअभिदुरुकनकह्या॥ ॥ ॥ ॥ इतिश्रीअध्यात्मरामायणोउ
मामहेश्वरसंवादेवातकारोडसप्तमोऽध्यायः समाप्तः॥ ७ ॥ ॥ शुभम्॥

श्रीगुरु

६७

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीराम
६८

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीमहादेवतेपार्वतीकनकह्ला ॥ अयोध्या
मा ॥ श्रीरामरासीनादुर्गसिंहासनमावसी. परस्परमुखहेरि ॥ वृषतवास
गरीहासि ॥ वडाआनेदगरीरहे^{नस} दोवेतामावहाकाआज्ञाते ॥ श्रीनारदका
अचरते ॥ रामकादर्शनहंभनि. वीनालिपेर ॥ रामनामकागीतगार्क ॥ रामका
ध्यानगरि. रामकाकीर्तनगरि. ब्रह्मलोकवाट अयोध्यामाआर्क ॥ श्रीनारददे
षि ॥ श्रीरामसीनादुर्ग. गुरुकउठेर. सिंहासनदेधितलआर्क. नारदकाचरण

श्रीगुरु
१

मायणामगरि ॥ वडोमानगरी. पादार्घगरि ॥ आसनमावसाया ॥ नारदवाच ॥
॥ नारदभंनहेपरमेअचर ॥ श्रीरामचद्रुतपार्कतेमलार्क. एनिकोमानगर्नु
जोग्यहोईन. तपार्ककलाहुंभया. सवैसंसारकाह्वामि. एलानपार्कतेमला
ईजानदिनुहोताभनितारदले श्रीरामकास्तोत्रगया. हेपरमेअचर. योगेश्वर
हुरुतेपनिध्यानगरिनपाठसकया. एलाप्रकारकानमानिकननमस्कार
हो. भनिभोपरमेअचर ॥ श्रीमहादेवपनिनमानि होमहामायापार्वतीकाओ

श्रीराम

२

स ते सीता भनि नाम सुनाया ॥ केरि संसार का पुकाश गरि रह्या आदि न्यका
किरण सीता ॥ एस्तान पांनि कनन मस्कार. हे राम वंदु. कलान पांनि भत्या
। सुस्थिति से हार गन्ती. सप्रपूतात सप्रवर्ग ॥ पृथ्वी सवै जलामय गरि ज
नंत नाग शय्या गरि. नाभि वाट कर्म ड न्यनि गरि. बुद्धा सुस्थि गन्ती ॥ ओहि ॥
बुद्धा का पुत्र मडुं न पांनि मेरा बाज्या डं एस्तान पांनि ले. मेरा आ ज्ञान ताश
गरि. ज्ञान दिनु ह्वो सभनि. हे परमेश्वर. न पांनि चैतन्य मूर्ति मै. संसारमा ॥

श्रीगुरु

२

साक्षी मै. अनेक प्राणिका चैतन्य गरि ॥ कसै कत आ ज्ञान गन्ती. एस्तान पांनि
कामाया ले ॥ संसार बंध गरि ॥ ममत्व भाव ना गरेर. कसै ले न पांनि कन चैतन गर्नु
सकेन ॥ एस्तान पांनि कनन मस्कार. भनि ॥ एस्तान प्रकार ले लोत्र गरि भत्या हे
परमेश्वर राम वंदु ॥ मेरा सुसिले ओं हा आया का होई न बुद्धा ले काम पहाय
दसर थरा जाले. न पांनि कन राज्य भिषेक देउं भनि सामग्री जो आ. न्यो राज्य
भिषेक न पांनि लेन लिनु ह्वो स. चाडै दंड कारण जार्इ देवता का काटै ॥

श्रीराम

३

भयाका ॥ रावण ॥ कसैले मारन न सक्या को ॥ स्वर्गमर्त्य पाताल कन ॥ अवेठि र
ह न्या ॥ देव अघि ॥ न पत्नी हरु कन ॥ वडो दु ॥ खदि न्या ॥ रावण ॥ बाँडे मारु ह
बोस ॥ बुझा का सुखों जि प्रनि जाग न्या का ॥ न पानि ले ॥ बाँडे ॥ पुन्या उनु ह
वस ॥ देव ता का पनि पृथ्वी का पनि ॥ उपकार गर्नु ह बोस ॥ न पानि सत्य वा
दी हो ॥ असत्य ना स गरि ॥ सत्य प्रनि पार ग न्या ॥ यो राज्या भिषे कन तिनु ह बो
स ॥ राज्य भोग मा लाग्या पछि ॥ न पार्ने काम विसेला ॥ न्यो काम न गरि ॥ अघि

श्रीगुरु

३

राज्य भोग न गर्नु ह बोस ॥ दुष्ट कन संहार गरि देव ता का कार्य अघि पुन्या उनु ह
बोस भनि ॥ एला प्रकार ले ॥ बुझा दि देव लोक ले ॥ अर्जि गरि पठाया भनि ॥ राम
बंदु दे उ नारा ॥ ले अर्जि ग न्या ॥ ना ह्या पछि ॥ श्री राम बंदु ले आ जा ग न्या
हे नारद ॥ न्यो कुरा मै ले सम ज्या को ॥ मै ले राज्या भिषे कति न्या ॥ न ॥ राज्या भि
षे कदि पाप ॥ निवि घुन्या ॥ न ॥ उसवे लामा मै ले ॥ चौट वर्ष सम ॥ वन वा
स गरी ॥ बुझ चारी भेष ती गेरु तिर ग न्या का वसु लार् ॥ जठा धारण गरी दण्ड कार

श्रीराम

४

एषवनमावसी ॥ न्योकार्घगैला ॥ हे नारद. सीताका कारण गरी ॥ एवण ॥
काकोटाकोटिपरिवारसमेत ॥ अनेकराक्षसलाई. वानलेवधगरि. स ॥
वैनासगौला ॥ मैलेप्रतितागयाकाका ॥ म ॥ सिद्धुं दैनभनिनमान. हे
नारद. न्योकार्घनिश्रयमगर्थायु ॥ गरेनभनिसंदेहनगर. एताप्रकारते ॥
श्रीरामलेआज्ञाभयेर. नारदले. तीआज्ञासुनि ॥ सुसिधै. नारदमेंदं हे रामचंद्र
हामिबुझलोकजायु ॥ तपांजिकोजयहुतोस ॥ निनफेरापुदक्षिणागया

श्रीगुरु

५

रि. दण्डप ॥ रामगारि ॥ रामकामुखकमलस्मरणगरि. रामकागुणगीतगा
ई ॥ नावि. रामसंगआज्ञाती. नारदसत्यलोकमाबुझाकाहागईभनि ॥ श्रीम ॥
हादेवले ॥ आज्ञागया. हेपार्वति. श्रीनारद. श्रीरामर. संवादभयाकाकथा
जसलेविन्नश्रुद्गरि ॥ एकविन्नभै. सुनला. जसलेकहता. उसका ॥ अविधै
रामभई. पछिजानपार्ई ॥ वैकुंठवासहोला. पुनवीरयोसेसारमा. पापस
रूपसमुदुमादुविआईन. महत्तारिकादुदयानुपत्तीईन. परमपदपाउं

श्रीराम
५

तामनिएलाप्रकारसंगमहादेवलेपार्वतिकन आजागया. वृक्ष लोक मा
वृक्षातेनारदकनक ह्या॥ यो कथानैमिषारण्य मा. सूनले. शौनकादि
मविहृकनक ह्या॥ इति श्री अध्यात्मा रामायणे उ मा महे अर संवा दे अ
यो ध्या का रोड पु थ मो ध्या या॥॥ शिवम्पू ले आजागया. हे पार्वति॥ अयोध्या
मा. महा. पुतापी मनाकाद सर पराजाते॥ अपनापुरेहि तव शिष्ट कवि
दा कनमठार्द्र. आजागया. हवशिष्ट. मेरापुत्र॥ रामचंद्र महाजानी. राज॥

श्रीगुरु
५

नीतिमावडानियुनभया. वडापरक्रमी. वडातेजसी. सवैराजतक्षणासंपूर्ण
भयाका. पुजालोकलेपनिवडु नैतिको मान्याका. ज्येष्ठपुत्ररामकनराज्यामि
षेक दिंदु सामग्री तु त्याउना कन. जतिचाह्याका सवैसुमंत मंत्र मंत्री दे उमा
तागर. हेवशिष्ट. यो कुरा रामचंद्र कनतपात्रिले कहि रामनुहो स भनिए
लाप्रकारसंग. दशरथराजाते॥ वशिष्ट तार्द्र आजागया. वशिष्ट मषिते सु
मं नमंत्री कनतिनपठायेर॥ आजागया॥ हे सुमंत्र. भोति रामचंद्र तार्द्र. ज्या

श्रीराम
६

मिथेकदिनुपर्क. साम गीत पार गरम नि॥ एति आता सुनि. सुमंत मंत्री ते
वशिष्ट रे उ सु ध्याया. हे वशिष्ट म मिश्वर॥ मोति तार्क का का साम गी वा
हिं० क सो क सो चा हिं०. का का जो नु पर्क. आता गनु ह वो सम नि. तत्र
वशिष्ट ले॥ आता ग आ. हे मंत्री सुन. राज्या मिथेक दि न्या दाउ मा. सोऊ गो दि
कुमारि क न्या॥ मोति मानिक का आ भरण त गार्क सि गारि॥ पान २ मारा घनु प
६॥ फेरि॥ सोऊ गो दा हा ति आ भरण तार्क वहि रा घनु पर्क फेरि गं गा दि अ

श्रीगुरु
६

संख्या तीर्थ जल. सुवर्ण का धै ला मारा धि॥ हजार एक दुई धै ला रा घनु पर्क
॥ फेरि जमा जग मा॥ मोति मानिक का तोर रा. जग जग मारा घनु. सुन का
६॥ च वा हिं०॥ से तो फा ता नु त्या उ नु पर्क॥ अने क ध जा प ता का उ डा उ नु पर्क
॥ जग जग मारा मो रा मो च दु वा ता स नु पर्क. पुष्प माता. च व ह दु तार्क. ना ना प
कार का॥ मंगल वस्तु क. रा घनु पर्क. रं दु का ऐ स व त हा ति का कु त मा ज न्या
का. वार दंत भया का हा ति॥ से तो वर्ण भया का. त्यो हा ति॥ वे स वे स ग ह ना ता

श्रीराम
७

ई. हवौदास मेतगरी राघवपद. फेरि रघुहानि. घोडा ॥ वपायक ॥ अने
कसैन्य ॥ सिपाइ ॥ दरवारका बाहिर. तयार गरि राघवपद. फेरि पृथ्वीमाजनि
भयाकार जा हरु ॥ अनेक शस्त्र अस्त्र तयार गरि आनुपद ॥ भनि. डाकी प
ठाउनुपद ॥ सवैराजा वटु स्याउनुपद. पुजा हरु पनि सवै वटु लाई राघव
पद. भनि. एस्ता प्रकारे. वसिष्ठे. सुमेत मेत्रीकन ॥ आज्ञा गरि. तव सु
मेत मेत्री लेपनि. सवै सामाग्री तयार ग्या ॥ देश देश मा विधि यत्र पढाया

श्रीगुरु
७

.सवैराजा हरु कन वोलाया ॥ ॥ ता हा पछि वसिष्ठ ऋषि. रथ चढि. राम बंदु
का हात ग्या ॥ तिन चोक भित्र राम वस्या का पिछा. तिन चोक संमर चमाव सि
जादा. रथ बाढ ओढेर भिन्न ग्या ॥ ता हा राम ते. वसिष्ठ ऋषि आया कोदे
षि राम. रत्न सिंहासन दे छिउटेर. तल आरु. वसिष्ठ का चरण मा पुणामग
रि. सुवर्ण का पिछा आसन दी ॥ आसन मा वसाया. सीता ले. सुवर्ण कलश
ले. गोडा ठोरु. राम बंदु लेपनि. सीता लेपनि. चरणोदक तिजेर. आया

श्रीराम

८

मा. कया लमाराधि ॥ अनेक आदर गन्था ॥ एतो माव. राम वंदुको हे रि. व
शिष्ट ते. आजा गन्था. हे परमेश्वर श्रीराम ॥ तपो जिजगत्संसारकाखी. देवता
कोय निदेवता हो. गुरु कोय निगुरु हो. सर्वात्मा पुरुष. तपाजि काचरण
रविंद ॥ श्रीमहादेव ते आ प्राजता माधारण गरि राख्य दान ॥ निचरण रविं
द का प्रभाव ते. जगत्संसारकाखी मिथनाया. गुरुय निभन्मा. फेरि बुझाते
यनि ॥ तपाजि काचरणार. कमल उभु मारा छिति धारण गरि धिता मह भनि

श्रीगुरु

८

नाम जगाया ॥ जेसिका प्रभाव ते सुष्टि कर्ता भया. अनेक प्रकार ते चारु प्रका
रका सुष्टि गर्तु सामर्थ्य भयो ॥ एता तपाजि ते ॥ मेरा वरण का जत. शरीर मा एष
नुभयो ॥ न्यो नो ग्य होई नका नभन्मा. लोक तार्हसिका उन अर्थ ते. एसो ग
नुभयो. बाह्य का चरणार रविंद. शिर माराधि. लोक को उद्धार कुं द भनि. एत
निमित्त. एसो गनु भयो ॥ हे भक्त वत्सल. तपाजि महाबिलु हो. मै ते जान्या का
हो. क्या नभन्मा. रावण आदि दुष्ट नाश गनु अर्थ ते. राम भनि अवतार तिन

श्रीराम

८

भयो. ऐं ह्रीं यो प्रकाशगर्भा होई न ॥ रावण मारिश कपदि प्रकाशगर्भा
होभनि ॥ हेरघु नाथ ॥ राजा कापुरे हित दुनु यनि वडो पाय ॥ आज
मरु मरु ज्यमापुरे हित भैरव्या ॥ कपा कारण गरि. सूर्य वंसमा. विल्लते.
अवतार लिनां. नव मुक्ति होला भनि. एहि आसा गरि पुरे हित भैरव्या ॥
हे परमेस्वर. आज न पात्रिते. मउ द्वार गनु हबोस. भनि एला प्रकारते ॥
वशिष्ठते आजाग्या. फेरि भव्या. हे राम चंदु न पात्रिका वावा. दशरथते

श्रीगुरु

८

मजा हापठाय ॥ न पात्रितार्थ. भोतिरा ज्यभिषेक दिउला. तिन होला भ
नि ॥ आजा गरि पठाया. हे राम चंदु. न पात्रि पति. सीता. सुविभै. पातनु
होला. निरा द्वार गरि. रहनु होला. शय्या मासु ननु छैन. स्वसंग नगर्नु. ए
ला प्रकार संगने मगर्नु भनि. आजा गरेर. राम छे उ विदा तिघेर. वशिष्ठ ॥
षि फकि. दशरथ राजा तार्थ समाचार पुचार्थ. आपना. घर गर्थ ॥
ना हापथि ॥ श्रीराम चंदु ते. वशिष्ठ का कुरा सुनि. सुसिभै. तक्ष्मण तार्थ

श्रीराम

१०

डाकेर आजागया देभार्तुत दमण ॥ मतार्तुमोति योराज्यको अभिषे
कदिउंताभनि वावालेवसिष्ठतार्तु ॥ भनिषठाघो अव अभिषेकमा
वमहिउंता योराज्यको ॥ अधिकार नतार्तुदिउंता ॥ निमिकलाभा
त्या मेराघाणभंदापनिगरिष्ठ ॥ तरम एकैशरीरहो ॥ मराजाभयाप
नि रुतार्तुकर्ता तेरासुसिहोभनि ॥ एलाप्रकारले आजागरेर त दमण ॥
सुसिभै प्रणामगया देदाज्य ॥ श्रीराम नपानिकासेवक महुं कसो

श्रीगुरु

१०

नपानिकाआजाभयो नसैहो ॥ भनिहर्षगरिरह्या ॥ ॥ नवद्वकुण ॥
कौरात्या तार्तुकह्या रामचंद्र तार्तु राज्याभिषेकदिंद भनि ॥ योकु
रासुनि ॥ वडासुसिभै योखवरत्याउ त्या तार्तु ॥ अनेकसिरोपाउदिया ॥
ताहाज्यावाह्याको ॥ सामग्रीजोरि कौरात्यातेमनमाविंनतागया
महाराजातेवोत्याकामिथ्याहवैन अवश्य योराज्यकाराजा मेरादे
राहुत्या ॥ भनि आनेदगया ॥ फेरिमनमाविंनतागया एकथोक

श्रीराम
११

मात्रसंदेह ॥ योरा जावै के पीकावशमा ॥ निकसोगरिका जानु ॥
शंका मानि. कौशल्या ले. रामचंद्र लार्. विघ्न नहवोस भनि. ॥ दुर्गा पुज
गया ॥ ॥ नाहा उछांत ॥ रामकन अभिषेक गन्यानि अघ भयोर
वज्रिस्कोरि देव लोक कास भागरि ॥ मत्तगन्या. रामचंद्र ले. अभिषेक
ति न्या जुगुनि नगरु ॥ राज भोग माय स्यापदि ॥ हामि हरु को ॥ रावण मान
धितो होला. भनि. मत्तोगरि. माहामाया दुर्गा को आराधना गरि कै केरु

श्रीगुरु
११

कामनमा समजार् ॥ यो कार्य विप्रगनु यमो भनि. भयोर. दुगापछाया ॥ ॥
नाहा दुर्गा ले ॥ आपना माया ले. मंथर भत्या की केठिका पदि. नवनि मंथ
र केठिका मनचंचै भै. दर्वार का कौसिमा गरहेया. नवसने कछ जा. पनाका
ले सोभाव भयाका. नाना वाड मंगल सुनि. अनेक नाच ॥ अनेक राजा हरु. अ
नेक यात्रा. बडोक लोत शब्द सुनि. हेरि. कौसिवाट ओठि. आपना मह नारि
देउ सोधि. हेमाता. दर्वारमा. अनेक यात्रा महा कलोत शब्द सुनि. क्या हो आ

श्रीराम
१२

जका हो भनि सोधि ॥ तव मंथरा की मरुतारि लेकही. हे मंथरा. मोहि. राम ता
रु. राज्याभिषेक दिख ॥ तसर्थ यो यात्रा भयो ॥ भनि. कही. र. नि मंथरा. वाँडे
गई. कैकेयि रानितारु. कहुं भनि. गयो. कैकेयी रानिका कोठा भित्र गे ॥ भय
हे महाएनि. ऐले संम. तपा निते काहे रिरुनु भयो ॥ धिक्कार तपा निते हो
महाराजा को ॥ ममाधिको दुखै न. ममा. पिवडा पीति दु. भनि. वसीस. म
हाराजा वडो वनुरु. वचन ले मात्र. तपा निते को मानिए भि. काम तेत

श्रीगुरु
१२

अरु तानि को गरि ॥ भोहिते राम राजा गरु. तपार्क का दुई दोरा. उस्का काम
सुंदर ॥ भनि. नि मंथरा ते एलो भन्या को सुनि. कैकेयी भेदिनु भो मंथरा. राम
राजा भयाप ॥ दि. मेरो वडो भाग्य हो भनि. मेरा गर्भ वाट जन्मा दुःख भरा
रात्रु घुमयाप निराम वंदु ले भक्ति गन्या जति उन हरु ते गरे नफे रिराम ते पति
आफ्ना मरुतारि कौशल्या जति देख्यो ॥ तति मकन पति देख्यो मेरा दो
रा हरु भयाप नि ॥ मन जां ॥ विरोध गरि. मपार्क. वडा भक्ति. एला रामरा

श्रीराम
१३

जायपापि. पुजा को पति आने दंड. न स र्ध मेरा आने द हो. हे पापि नि
त्वालि. जो लार्ई राम ले कया अपराध ग म्भा भन ॥ एला प्र कार ले कै के पीर
निले आजाग म्भा. ना हानि में परा. राम वंदु का वि ना कारा राशु भै. नि
में परा ला हि वसि. ॥ नाना प्रकार ले कु रा गरि. दो मत गरि दि येर. हे म
हारा नि. कै के पी मेरा कु रा ता सुन. न पार्ई के हि जां दोर हे न के ॥ राम वंदु रा
जा गर्नु नि मित्र. नि म्भा को रा दु ॥ ई लार्ई प नि. ध पार्ई रा प्पो. फेरि राम राजा

श्रीगुरु
१३

भया प नि. उ. का म ह तारि. कौ श त्या सु ख्यं जि हुं रु. नि मि दा सी ग र्ता न्यो
वे ला मा नि म्भा को रा ह रु रा न्य भि व प स न दि वैन. मा र्द कि व धु वा गरि हा ल
रु कि क्पा हो क्पा हो. ॥ अब यो उप कार गर. हे म हारा नि. नि म्भा अ धि भ
या का कु रा क हं दु सु ॥ सुन. सर्ग मा दे वा सुर संग म भ यो र दे व लो क ले दै न्य
लार्ई ॥ जित न स के नर. द शर परा. म हार पी ॥ पृ थ्वी जित न्या प नि म हार
जा लार्ई ॥ ग्व हार मा ग्द स्व र्ग जा नु भ यो र ने स वे ला मा ॥ न पार्ई संग जा नु रु द

श्रीराम

१५

दैत्यसंग युद्धगदा. महाराजाका बुटि अंगुलिमा घाउ ला ग्योर. निघाउ
माकिरो लाग्यो. वडा पीडा भयो. एकरा नरा विमा. न पार्ने. राजाका
पकार गरि. घाउ निको भयो. फेरि दैत्यसंग युद्ध गरि. सबै दैत्य कत नि
नि. इट्टाको उपकार गयो. नव महाराजा ते. न पार्ने. आत्मा गयो. हेरा
नि. नै ते एति उपकार न गयो. मरे वडो लज्जा हुन्यो. नै ते पति उपक
र गयो. मै ते जस पाओ. अवतो लार्. दुइ ओक बरदान दिनु माग भ

श्रीगुरु

१५

भनि आत्मा गयो. नव. न पार्ने. आत्मा गयो. हे माराज. ऐ ते. म. इ
बरदान तिं दैन. न पात्रि छेउ ना सोए सुला. मेरा चाहि त्यावे लामा मागुं ला.
भनि. इकुरा. म लार् न पार्ने लेक ह्याको छ. मै ते सुन्याको छ. समुद्र उनु
हुकोस. हेराति. आज न पात्रिका छेरा. राजा गत्ती पत्त म कहे छु सुच
हुकोस. हे महाराति. न पात्रिको. अछे आरेक पाछे त्योको आमा गर
ना सबै छोडि रु. विष्णु उना पति आफाति. भई मा मा ववसि. आपुका

श्रीराम
१५

धनसिद्धं ज्ञातनवोतिरहनु होला ॥ न्योवेला राजा न पार्श्वस्था काथा
न माया तनु होला ॥ तापा भित्ते उस्वेता मा. इदुई चोक वलमा गु होला ॥
व्याका भन्या. न पात्रिका दोरा तार्. राजागनु एक १ एक चोक राम ला
ई चनुई शवर्ष पर्थे नवन वास मठा उनु पर्थ ॥ भनि इदुई चोक. वर माग ॥
वौधवर्ष वि त्या पर्थ. सवै काजि ॥ आ फ्रा हान आया पर्थ. राम वेदु ॥
फर्को भन्या पनि न्या गता. भनि घौमं पुराते. एस्ता प्रकारे कै के पीक

श्रीगुरु
१५

मन मायु न्याई ॥ नाहा कै के पी ते हो भनि थानि. दुर्वुद्धि मै ॥ भनि. हे मंथ
रा ॥ न्योकुरो मै त विस्था को थियो ॥ आज नै ते समझाई सु. धन्या निमि है
मे राहे नि के नि भन्या को निमि है ॥ हे मंथरा. [REDACTED] हा प्रा पुत्र
राजा हुं दा ॥ एक राय ग्राम खुवा ॥ तो तार् दिउं ला भनि. भनर. कै के पी मंथरा
ते ॥ भन्या कै ॥ मंथरा को थामा आभरण सवै दोरे ॥ मै मा तो देर. मरौ भनि
रह्या भनि ॥ श्रीम हा देव ते आ ताग न्या. हे पार्वति ति एनी काम नै मान चिंता प

श्रीगुरु
१६

कोपनिमनप्रत्यागरिदीर्घ. दुर्वृद्धिस्वास्तीकाकुरासुनि. एस्तीमै. तसर्प. कु
संगतगर्भभूमि श्रीमहादेवतेपार्वतीकनकह्या ॥ इति श्री अथ्यात्मरामाय
णे. अथो ध्याकां देदितियो ध्याय ॥ २ ॥ ॥ श्रीमहादेवते आता
गया. हे पारवती. दशरथराजाको. व्यत्काको भान्सासकि. शयगम
चद्रुतार्क. एज्याभिषेकदिउताभनिमंत्रीसुमंत्री आदिसंगवशिष्टाभिसे
गमनगरिसक्यापछि. दशरथराजाको. व्यत्काको भान्सासकि. शयनग

श्रीगुरु
१६

हं भनि कैकेयीनीकाक्यामाया तनुभयाको चामासनीदै नर. काहाग
यो भनिसखिह रुकनसो ध्या भोसखीनीकाहो यो भनिभनेर सखिहेरुलेक
ह्या. हेमहाराज ॥ आजगनिकावडादुःखमानिवस्या ॥ तै अथ्यारोको था
मायनभनि ॥ भनेरको चामाए जागई कनहेया. गहनासवै छोडेर कातोव
स्वतार्ककनके शफोई ॥ भूमिमातोटेरवस्याकी देधि दशरथराजाते आता
गया. हेरानि ॥ नि शोक्यादु ॥ स्वभयो. क्यातएसोवसिस ॥ एस्तप्रकारकामणि ॥

श्रीराम
१७

माणिक को घाटा का डेर ॥ अनेक पाठ वस का डेर ॥ विवित्र को चा को डि ॥ एसे
अध्यागे को था मा ॥ भूमि शय्या गरि वसी फरि ॥ अनेक जा भरण का डेर ॥ क्या
नय सो वसी भनि ॥ एस्ता प्रकार ते ॥ दशरथ रा जा ते ॥ सो टे र प नि की न भने र म ॥
आ को व स्या है लो टे र व सी ॥ ता ह्य प छि ए जा ते ए नी का आंग मा हा त ते को मे र
आ जा ग या ॥ हे का ते ॥ हे प्रिये कान ति मि य सो दु ॥ त मा दु ॥ मै ते त तार् क्य आ
प मान ग या ॥ मै रो नि न ए नि मा त तार् मु ष्या नी गरि ए ष्या ॥ नै ते भ म्या को मै ते ॥

श्रीगुरु
१७

क्या गे र ए ष्या हे ॥ नी फेरि न तार् ॥ कसे ते अ मान ग या सो जा ह रु ते ॥ अधिक
अ मान ग या कि फेरि मंत्री हे रु ते अ य मान ग या कि ॥ ज स ते त तार् ॥ दु ख दि
पा ॥ उ म् हे तार् मा रुं ता सर्व स्व दरा दु ग रौ ता ॥ फेरि मै ते क्या गर्नु य यो ॥ त्यो भन भनि ॥
पृथ्वी मा दु र्द भ म या को व ल भ या प नि म त्पार् दि उं ता ॥ हे ए नि तै ते क्या भ नि त्यो मै
ते ग रौ ता ॥ मे रिया न वा स्या प नि नि प्रा षु सि रु भ नि ॥ ए स्ता प्र का र ते आ जा ग रौ र न
व नि कै के यी ते भ नी ॥ हे म ह्य ग ज ॥ त पा जिते स न्य न ग या सं म म य त्या उं दैन ॥

श्रीराम
१८

बनिषसोभंदा॥ राजाते॥ आजागन्या॥ हेरानि ज्याज्याजै ते भन्या॥ न्योवस्तुमै
ले॥ अवस्थादिउंता॥ भनि॥ रामधुर्दसत्यगन्या॥ एलाप्रकारतेस्त्रीकोवश्यम
परदशरथराजातेआजागर्दनाहाराणीराजाकासत्यवोलसुनि॥ नुरुकउ॥
थि॥ मनमाधुसिभैभनी॥ हेमहाराज॥ नपात्रिकासत्यभयाभंदुसत्यन॥
भयाकाभंदु॥ भनि॥ एसोभनेरा॥ राजातेभन्या॥ हेपियेराणि॥ हामाकुलमा॥
असत्यवोलन्याकोहिहै॥ सत्यवोलन्यामात्रैर्दभनिभन्योरताहाकैके॥

श्रीगुरु
१८

पीरानीलेभनी॥ हेमहाराज॥ अचिदेवासुरसंगामद्रुदामातपात्रिकंदु
कोगोहारजादाअनेकदैत्यसंगमुद्रुदा॥ नपात्रिकाबुद्धि अंगुलिमाघा
उतागेर॥ न्योद्याउमाकिरापेरवडोपीडाद्रुदासवेतामात्योकिरांमैलेमि
केर॥ उयकारगरिमैलेतिकोगरिदिया॥ ताहातपार्दधुसिभै॥ दुश्चोकतरम
तार्ददिनुभयोथ्यो॥ उसवेतामा॥ मलार्दवाह्यामाममागुरुभनितपार्द॥
उनासेराथ्या॥ हेमहाराज॥ नपात्रिकासत्यभन्या॥ न्योदुर्दवरमलार्द

श्रीराम

१२

दिनुहोलाभनिभन्योर.राजातेआतागन्याहुं.मागभनिर.जवरा नीले
भन्या॥हेमहाराज॥नपात्रिलेगमलाइ॥अभिषेकदिनुभनि.सामग्री॥
जोन्याकातेमेराज्येठाकोराभरथलाइराज्याभिषेकदिनुपर्छ॥एकयोव
फेरिउज्यालोहुदैमात्रै॥रामकोवस्त्रकोडाई॥गिरोनितुगायाकावस्त्र॥
लाईदियेरजयापारेरदणुकारणवनमाचौद्वर्षसंसवनन॥वासगरि
राघनुपर्छ॥योदुखथोक॥नपाईछेउमागछ॥हेमहाराजविलंबनगनुह

श्रीगुरु

१२

बोस.उज्यालोहुदैमत्रयसोगनुहोला नगन्यामेरोपाणारहत्यादैतभनि॥ए॥
लापकारलेभनेनदशरथराजाकाहृदयमावज्रपन्याहै॥स्योकुरासुनिभू॥
मिमालोद्या॥कसोभन्या॥वज्रपातभषिकतरुषधत्याहैकैकेयीकाव॥
वनसुनिदशरथराजामूर्छाभर्त्त॥ताहापछिसुहृत्तमाउथेर॥धैर्यगरिम॥
न्या॥मैलेक्यास्वप्नदेख्योकि॥क्याभयोहोभनिरानीकामुखदेरि॥ताहा
रानीकोराखोरिपायाका॥वधिनीजैतालजांखागरिवस्याकोदेधि.दश

श्रीराम

२०

रथ ए जाते आजाग न्या ॥ हरा नी नै ले क्या कुरा गरि स ॥ क्या चितार्ह स ॥ राम ॥
लेव लार्ह क्या अपराध ग न्या क्या निमिते भ न्या को भनि न ॥ के रि नै ले प निरा
म चंदु लार्ह ॥ गुण गरि एषा का फे रि भरन शत्रु घ्न भं द प नि ॥ राम चंदु ले मेरो
सेवा गर्ह भनि भ न्यो सदै राम चंदु को प्र सं सा न मो य भ न्या ॥ त म्ना को भं द रा
म व द्दे उ ॥ ने रा ले ह ॥ आज ए लो नि स्थुर ह द म क सो भ यो भ नि ॥ हे रा ॥
नि ॥ अब क सो गरु नै ले भ न्या कै ॥ राम चंदु लार्ह दि उ भ न्या को नि रो को रा भर

श्रीगुरु

२०

तलार्ह ए न्या भिषे क दिखु एक चौक मान भन ॥ राम चंदु लार्ह वन वास मा
त्र पठा उ त्या न गर्व ॥ उ स्का आ फ्रा व स्था को को थामा मा त्रै व सो स ॥ राम चंदु
वार ॥ ने रा को रा ह रु क न भ य ॥ आ उ त्या कै न राम भ न्या अ न्य न सा धु स न्य वा ॥
दी ॥ स वै को पि पा रो ॥ ए ल्हा राम चंदु लार्ह वन वा स प ठा या प थि लो क पंच ॥
ले क्या भ त्त न ॥ के रि राम वि ता न मे रो प्रा रा र ह न्या कै न भ नि हे रा नि ॥ यो राम
चंदु मा त्र रा न्य ले प ठा उ लु कै न भ नि ए ल्हा प्र का र ले ॥ अ ने क विं नि ग रे र ॥ द श

श्रीराम

२९

रथराजाते॥ रातीका दीगो॥ दासमातिधोक दियो॥ योवैके पीम हाको॥
धगिभन्या॥ हेमहाराज नपार्सकास सनभया॥ मक्यागहेवावनुछैन
हेमहाराज मैले ता नपार्स सन्यवादी भनिठान्या थ्या॥ अवतनपार्स असन
वादी॥ देषियो भनि॥ हेमहाराज अव मैले यो प्राणधारणा गर्नुछैन॥ वि
षयारमरौ कि॥ अपवागला माया सोहाति मरौ कि॥ भनिमनिमनेर॥ यो
राजाम्॥ दाभयो भूमिमा लोटेर॥ मृजकैरु वस्या॥ राजाको मुख्या जिग

श्रीगुरु

२९

जागर्नगरिवस्या काचारपुह राजकाननुतार्स॥ चारुगकाननुरै वितार्स
कुनवेला व्याहान होला भनिवसदावेला माउज्या लोभयोर॥ अनेकबु
छाबुछिवातक जुवान॥ रामोरामोवस्त्र लार्स॥ अनेकगहना लार्स॥ दरवा
रमा॥ राम लार्स॥ राज्याभिषेक दिन्या हेरौ भनिवछाते आयो॥ अनेकवाय
अनेक नाच॥ अनेक वाद्यराज अनेक गुनिक हरु॥ अनेक देश देशकार
जाहरु॥ अनेकहाति पौडा कनसिगारि त्याउं थ्यो॥ केरि अनेकधज

श्रीराम

२२

रुच चामर ॥ नानामगला वस्तु अनेक कुमारी कन्या क नसिगारि ॥ एला
प्रकार ते ॥ दर्वार मा लोक भया ॥ कसै ते गीत गाया ॥ कसै ते नाच बुलाया
॥ कसै ते वाजाव जाया केरि थाउ थाउवा ह्मण हरु ते वेद घोखा दिग या ॥
यो देसि लोक हरु काम हा आनंद भया ॥ एला महा उसा ह्मण सुने रघो
कै के श्रीराम ते ज्ञात वाट हेरे र भयो ॥ हे लोक निमि हेरु क्या होव डुलायो
कि ॥ वाजा नव जाउ भनि छे केर ॥ सवै व जानव जार ह्या ॥ ता हा पदि ॥ यो ॥

श्रीगुरु

२२

रज्य का मूल मंत्री ॥ सुमंत्र ते ऐले संमरा जा का जा गो भयन कि भनि रज्या
भिछे क दिना को वेला डु न लायो भनि ॥ हत प ॥ ना घेर ॥ द शर धरा जा
का को था मा हेरु नुग यो तव महाराजा दुबलो भयेर ॥ लोटेर ॥ वस्त्रा को दे
सियो ॥ सुमंत्र मंत्री ते भया ॥ हे महाराजी ॥ आज महाराजा को क्या भयो
क्या दु ॥ त भयो क्या न ए सो व स नु भयो भनि सो घेर ॥ कै के श्रीराम ते भ
या ॥ हे मंत्री ॥ मै ते जानेन ॥ आज का ल ॥ त्रि रा जा ते नी न पायेर ॥ राम रा

श्रीराम

२३

ममनिभनेरात्रिका त्पोभनिभन्यो. हेमंत्री. तंचाँडै गयेर. रामबंदु
तार्कवो तार्कल्याउनुपर्छ. घोरा जाकोदु. खको कारणा. रामबंदु घो.
होभनि. एनीलेयसो आजाभयेर. तवमंत्रीलेकौनु कमानिभन्या. भो
महारा निमहारा जाकोहोकमनभयिकतमकसोजाउभनि. एसावसि.
रहदाएजाकोवेष्टाअलिक. भयारकरुणाववणले आजागया. हेमं
त्रीसुमंत्रजाउ. रामतार्कवो तार्कल्याउ. मेरोआंखाकानृषाभयो. रामबं

श्रीगुरु

२३

दुका सुखकमलहेनुमा अतिदुखाभयो. नैलेसंगैल्याउनुपर्छ भतिभ
न्यो. तवसुमंत्रीचाँडै गयेर. रामकोकोथासागयेरभन्या. हेराम. तपा
र्ककावावाले. तपार्कचाँडै जाउनुपर्छ भनिमतार्कपछापछतसर्थचाँडैपा
उलासुह्रोस. सवैवृत्तांतकस्या. तव. ताहारा मबंदुते. तक्ष्मरासाथ.
तियेर. दशरथराजाकाहागया. तवताहाक. आभित्रपसेर. राजाकासु
मुखहरिभन्या. हेवावा. तपार्ककाक्या अवस्थाभयो. क्यानयसो

श्रीराम

२४

दुः स्वगरिरहनु भयो भनी ॥ राम ते आज्ञा गयोर ॥ द शर अरु जाते ॥ राम
का भाषा सुनि ॥ राम का मुख हे रि. जु तु क उ चेर ॥ राम चंदु क न आ लिंग
न गर्नु भनि जो दा दुः स्व ते अवै र्म भै ॥ भूमि मा लो प्या न व राम चंदु ते समा
नेर. हा ज ते उ ठा पार ॥ राम चंदु आ ज्ञा ग या ॥ भो वा वा ज्यू ॥ ए ला प्र का
र का शोक. न पार्त्त लार्त्त क सो भयो ॥ हा मि हरु वार पुत्र भै क न पति. क्या
न शोक गर्नु भयो शोक खा ड नु हवो स ॥ न पार्त्त का नि मि त्त क्या गर्नु पयो

श्रीगुरु

२४

॥ सो मरुं ता महा देव का पिता क जला धनु अ भा चित्वा या का सीता नि खा ड
नु प यो भ न्या पति ॥ म हा ड दु ॥ वा वा का ॥ कारण मा. यो प्राण न्या ग गर्नु
प यो भ न्या पति म सा म र्थ दु. भ नि. राम चंदु ले ए लो आ ज्ञा ग योर ॥ न व कै
के पि भं डी ॥ हे राम चंदु पुत्र भनि भयो क्या न भ त्या ॥ वा वा का स म्प र द्या ग
न क न यो पुत्र भ त्या को. हे राम ॥ अ ने क सा म ग्री जो रे र ॥ जो लार्त्त अ भि से
क दि उ भ नि रा प्पा का सा म ग्री ले ॥ भरत लार्त्त दि नु प यो भ नि. फे रि यो र

श्रीराम

२५

ज्यमानिमिवस्तुष्टैः न॥ गेरु नितगायाकावस्व तायेरजठपाति चौठ वर्षसे
म॥ ज्योदगुकारणपवन मावास गर्नुपर्छ भनि॥ एलीसानिमाको वचन सु
नि॥ श्रीरामवेदु ते भन्दा हे सानिमा॥ नयानिका आता कै भरत तार्इ रा॥
ज्याभिषेक दिनु हुवस्॥ हामिवन वास जांछु भनि॥ महाराजा महारानी
का गोडामा ठोक दीयेर॥ विडामा गि॥ नवरजा दशरथ ते॥ रामवेदु कन॥
आलिंगन गरि॥ विलाप गरि॥ भन्दा॥ हे राधव॥ मवडा पापि सभमा॥ स्त्री

श्रीगुरु

२५

कावश्य भैर हुनु पयो॥ एलीवणा लभ आम॥ निमिते॥ म तार्इ॥ परसा
रि॥ निमिराजा हुनु हुवोस॥ यो पाप निमित तार्इ छैन॥ निमिराजा हुनु पर्छ
॥ हा हा राम राम भनि॥ वो लनै शके नर॥ राम का मुख हे रि विलाप ग ग्याये
हे रि॥ राम ते आता ग ग्या॥ हे पिता॥ शोक न गर्नु हुवोस॥ शोक भन्दा को
आता निको हो॥ नयार्इ महा ता निवि न हो॥ शक छुडनु हुवोस॥ जोर
दिन न हो॥ चौठ वर्ष भन्दा को चौठ दिन कै न हो॥ ॥ ता हा पछि मय

श्रीराम

२६

तेर. नमार्द्रको दर्शनगर्न आउता हेमिता ॥ मेरि मुखमा ॥ कौशल्या कन
॥ मेरी सीता सो पिर जाउता ॥ नमार्द्रका सन्यपुति पातगर्न कनमवनवा ॥
सजातु भाग्यै हो ॥ कसो भया. बाबुका कामगर्त कनयो. पुत्रचाहिं
तसर्च ॥ मनि अघ फर्क्या दु भनि ॥ एला प्रकार ते श्रीराम वंदु ते. पित
दशरथ कनवुजार्द्र ॥ आग्री महतारी कौशल्याका को थामा ॥ विदति ॥
नुभनि गणा ताहाउ प्रान्त. कौशल्या ते ॥ राम तारु अभिषेक ॥ आ जदिं

श्रीगुरु

२६

भनि ॥ वडा हर्षमान गरि ॥ अनेक वास्तुगारु भोजन गराया ॥ अनेक शि
व पूजा गया ॥ विष्णु पूजा गया ॥ गोप्रास आदि ॥ अनेक दान दिपार ॥ राम
का कल्याण वस भन्ता अर्थ ते ॥ एला प्रकार ते ॥ कौशल्याका. वडा आ
तंद मरि वला. एला वेतामा ॥ मोकोठामा ॥ राम वंदु भित्र पलु भयो भनि ॥
॥ श्रीमहादेव ते. पार्वती कनक ह्या ॥ ॥ इति श्री अष्टावक्र महाप्र
णो. अष्टावक्रा कांडे नृतीयोऽष्टावक्रः ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीराम

२७

श्रीमहे श्वरले आताग र्छन् भोषावति श्रीरामचंद्रले विदाति उभनि ।
महत्तारिका हा जादा ॥ सुमित्राएनि हो दे छोरा ॥ कौशल्याएनी के संग भ
नी ॥ मोदिदी होति मापुत्र रामचंद्र जाहा आउनु भयो भनिकहेर ॥ कौश ॥
त्याएनि आनंद गरिषुत्रका भावते आं सिग नागरि आकाका खमावसा
परक पात माहाजते पसारे ॥ म्वाय गरिक लारामचंद्र भत्या ॥ नीलोत्पल रै
देह भयाका मुसुकहा स्या ॥ जगत्ससारका आत्मा पुरुष ॥ साक्षात् नाराय

श्रीगुरु

२७

यणका कला लेसं पूर्ण भयाका ॥ एता रामचंद्र देषि ॥ कौशल्या कौह दयमा
निहर्ष भै अनेक अमृत भोज नादिजोरे भनी भोषुत्र भोज नगर्नु हवोस भनि
कौशल्याएनि लेयसो आताग म्वाए हा रामचंद्र ले आताग म्वा भो महत्तारि
जुन पार्श्वका हात ले मैले घातु शक्योपि ताका सत्य प्रतिपात गर्नु ॥ निमित्तते ॥
चतुर्दंश वर्ष सम्म ॥ वनवास ॥ मैले गर्नु पयो ॥ जो ए जमा भरत राजा भयो भनि
वतपारुका दर्शन गरे वेतामा गुं भनि आया ॥ मजो छु हे महत्तारि सुभनि एता

श्रीराम

२८

पुकारतेरामचंद्रको वचन मुनि कौशल्या नीले की भनु सकेन संकि मूर्छा भये
र **पृ**थ्वी मा लो प्यो क सो भ म्पा व डो व ता स ले के रा को वो ट प त्या कै ल्यो टी मु ह
न मा चै ले चै नं ल्य भ मे र दु **ख** स रु प स मु दु ए ल्ता स मु दु मा वु डे र **आ** खा वा न आ
शु रि कि **कौ** श ल्या ले आ ता ग म्या **ह** रि क लो अव स्था भ यी **ए** ल्ता पु का
र का र म च द्रु ता द रा ज्या भि छे क दि उ ल्ता भ नि **व** न वा स मो दि यो जो ग्य हो र
न यो र म च द्रु ले द शर थ का क्यो अप रा ध ग म्यो क्यो वि रा यो मे रा द्य नि फ रि रं प

श्रीगुरु

२८

ठा उ तु ता ग्या मै ले प नि क्यो न नि को ग म्या मे रा पु त्र ता द्र य नि स मं अव द्वा अ जो
ग्य हो फ रि यो रा ज्य **भ** र त ता द्र दि या प नि दि यो स रा म ता द्र व न वा स म ठा नु क्यो
न भ नि ना ना पु का र ले वि ता प ग रि **र** म स ग भं द्री **भो** पु त्र द शर थ रा जा को आ
ज्ञा मा नि क न ति मि व न वा स जा नु ता ग्यो प सो वा वा का आ ज्ञा मा म्यो उ सै म ह **न**
तारि को व च न प नि मा **नु** प र्छ **नि** मि ले व न वा स ग नु प दै न म तार द्वा डि न जा उ
भ नि भो पु त्र ति मि न भ यो प दि मे रो पु रा गा ग न स के न **भो** पु त्र ए ल्ती म वृ द्धी कार

श्रीराम

२८

भयामाकसो काडि जानुताप्पा भनिएला पुका संग कौशल्या नीले विलाप
गरिविनिगया नवगमचहु ते आजागया भो महत्तारि न्युतपाहु ते शोकनग
नुहुवोस मेरो अमंगल होला ॥ मलाह आशिर्वाद दिजेर मंगल गरि पठाउ ठौर
कोकुर होरुन ॥ चौठ वर्ष भत्या को चौठ धरि रैन हो भरुते वनवास गर्नु महा
मुख्यो ॥ मोदराउ कारण वनमावसेर अनेक दुष्ट राक्षस रावण आदि मोर
सवै लोक को उपकार गरेर ताहा पछि नपाहु काचरणार विंद दर्शन गर्नु आ

श्रीराम

२८

उला भनिएला पुकारले आजा गरेर ॥ ताहा कौशल्या ले आजागया भक्त भ
क्त्वा गभमा हे पुत्र समचहु निमिते पृथ्वी मा कार्य गर्नु निमित्त अवतारति
नुभयो आउनु भयो जो कार्य निर्विघ्न सिद्ध हुवोस निम्ना कल्याण हुवो
सने निस्कोटि देवता ले निम्ना कार्य मारछा गर्नु पछ भनिएला पुकारले आ
जा गरेर ॥ रामचहु काशिरमा आशायारि आ काम देउर ले आफु आ बुपुदे
रविदादि पाको देषित छमा ले भत्या ॥ भोदा सु रामचहु मोरा ज्य भिक्षेक क्या

श्रीराम

३०

नकाडनु॥ भनियोत दम्माका आरवातालगरि भन्या॥ भोराम॥ भरतशत्रुघ्न॥
सवैमैलेमारेरतपाइराजागरुंता सवैसामा ग्रीजेया कालेरग्या भिके षतातितु
ह्वोसभनि एत्ताप्रकारलेत दम्माको वचन मुनिनवरामचरु आजाग्याहे॥
तदम्मा॥ योवेतामायसो नमन॥ अघिदेवा सुरसग्राममादशर अगजातेकैके
पीतार्चवरातदीरायाका सत्यक बोतग्याको मिथ्या गर्नुदै नदशरभराजा
तेदोरामनिभंन्यादै नआफ्राप्राणपनिभंन्यादै नआफ्रासम्यपालदहनहे

श्रीगुरु

३०

तदम्मा योसंसार अचीर कसो भमा कबलपत्रपोंका पानिदै योप्राण॥
सोसंसारमा कोधीनहुंनु अंहेकारिनहुंनु॥ भनिनिमिप्राणकमतेपृथीप
तिसवैजिननुसकछ॥ अनेनमूर्तिनिमिहोभनि॥ योराज्यकोमापामला॥
इवाहिदै नयो अविन्यसंसारमा॥ राजाभनि॥ अनेकभोग अनेककाल अने
कमात्मलिपीवसछन अंतकालहु न्यावेतामा॥ योशरीरभक्तिका भनीहुं
छपला शरीर स्थिरहोइन कालको वश्यछ॥ अघिपछि मृत्युतेधुकीत

श्र. कां.
३१

हं हं सत्ता शरीरमानुष्याते अनेक त्वनु ताउनु भनि हामो घर हा मोरान्य
हा मोर व सुभनि विनाउ का तले ना शग्या को विनाउनु सके गत क सो भ
त्या साप ले ग्या कला लार्ड निलेर ॥ ग्या का ले किं गा लार्ड सने रवा या कैर
ला आत्मा भनि सत्ता सुकार ले ना नारह का ज्ञान ले लक्ष्मण का कोष ग्या न
मनी क न ॥ राम आ ताग ग्या का पो कुण सुनि लक्ष्मण ले आफ्र को पशा
ने गोर भया ॥ मोदा ग्युण मम ज्ञान ले कोष गोर भया आफ्र कर्म का दो

श्रीरामः
३१

घल अह क्का का का दोष भनु भनि आफ्र कर्म ले ग्या को दुः ॥ भा विस वा
हो भनि ॥ मोदा ग्युण मम पारु ले मेरो अज्ञान ना शगरि मलाइ ज्ञान दिनु भयो
अवर्त पार्ड का सा थ गरि ॥ मय नि जाहु भनि तपाइ का बरणा मा सेवा गरि वस
हु मेरो भाग्यै हो भनि भनेर ॥ तव गम बढु ले आ ज्ञा ग्या ॥ भोल लक्ष्मण बा ल वै
माप निति मिह मि कै ले पनिसंग छोडै नर क जीव भयी वस्या ॥ भोल लक्ष्म
ण मम गै जा मनी म न ग्या ॥ दुः ता भोल लक्ष्मण अव तिले भन गनु दै न वा दै

श्रीराम
३२

तपारगरभनि॥भनेर॥रामचंद्र सीता का को आमा जानु भयो॥ ताहा सीता ते॥
रामचंद्र आउनु भयो को देखी सुवर्ण कलश ते॥ रामचंद्र का पाउ रोयेर॥
काखाउ मावसाये॥रसीता ते आजाग्या॥भोष भु रामचंद्र आज का भयो त
पाइ कोइ सा थै न एकतै आनु भयो सधिसा थहरु का हागयो भनि॥सो॥
भ्या॥फेरित पाइ का शिरमा मकुट पनि दैन॥फेरी अनेक वाइवा जाउन ता
॥येर॥घातनु दुख आजवा जापनि दैन का हागयो भनि तपाइ का दैव वा

श्रीपुरु
३२

मरपनि दैन आसा गुर्जा आशिषं स्वारजल ह्मण ले पुक्त गरि अनेक व
हुनै लोकर सकर कामाक मावसि॥विजुनि दै आप्रति जते॥दशदिशा
पनि प्रकासमान गरि साबु उलाग्या॥एसा प्रकारे गरिका तपाइ॥आज त
पाइ का तेज पनि हा नद॥मुख पनि उज्या लोदैन॥कसो भयो॥भनि॥एसा
प्रकारे सगसिता ते॥सो धिरन वराम ले आजाग्या॥भोषी ये सीता॥मेरा
वावा दशरथ ते॥दण्ड काण्ड पवनराज्य मलार्क दियो॥योग्य भरत तार्क भ

श्रीराम
३३

यो औलेमवनवासजांछु. भोसीता ॥ मेरामड तारि. कौशल्याकासेवागरिआ
प्राप्तिलवताधर्मप्रतिपातगरि. वसचौठवर्षसंभ ॥ मवनवासमावहु ॥ ताह
पछि ॥ तमामुखहेनुआउछु ॥ वावाकासत्यराघनाकनमजाछु ॥ भनिराम
चहुका ॥ आज्ञासुनिसीतालेविनिगया ॥ हेप्रभु तसोभयामैअधिजाछु ॥
तपारुमपछि आउनुहोस ॥ तपारुकाक्या आस्थाभयोसोमेरापनिहोला
भनि ॥ मनेरावहुतेआज्ञागया ॥ भोसीतावनवासभत्याकोवडोकषुसह

श्रीगुरु
३३

नुपर्छ ॥ अनेकगहसकाभयछ ॥ सिंघब्याघकाहसिनानाजनुकाभय
छ ॥ भूमिमाहुगामासुतनुपर्छ जानुवसनुखानुकोठेकानुछैनआहारभ
त्यावनमाभयाकोफलमृतघानुपर्छ जोपायाको. सोघानुपर्छ ॥ मिठोनछे
भेनुछैन. फेरिवाहोमापनिअनेककाठछ ॥ विसमवाठोछ ॥ एस्तोदुःख
. निमिकाहासहुसकतानभत्याअत्मनकोमतछ ॥ फेरिगमिविमो. प
निवतास. सहनुपर्छ ॥ फेरि. ल्यावनवडोउजानछ. दुर्गमजाहानाहापा

श्रीगम
३४

नियनिद्रै न ॥ भो सीता भो प्रिये ॥ ए लोक षु भोग नै पदं यो क षु नै ते सहनु
सक न्या दै न त भ म्या को मत ॥ फेरित भा ग्य मा नी भ यी र ह न्या ॥ आ क्रा मा
पित मा व स्ता प नि भा ग्य मा नी भ यी का ए ली को मत शरी र भ यी की तिक
सो गरि आ उ ति ॥ ए स्ता प्र कार स ग र म व द्यु ते सी दे उ आ ज्ञा ग म्यार ॥ सी ता भं
छि न् ॥ भो प्र भु रा घ व . त पा र वि ना न क्ष न मा ॥ प नि मे रो प्रा ण धा र णा ग र्नु सा
म र्थ दै न त पा र का सु ख हे रि व स नु पा या व न वा स भ यी प नि स्त र्ग स मा न ॥

श्रीगुरु
३५

न पार का च र ण का से वा ग र्नु नि मि त्त यो य ॥ श्री मा म ज न्म न भो यो ॥
त पा र का च र णा र वि ण्द ॥ श्री म ह्म दे व ते प नि शि र मा धा र णा ग र्थो ए स्ता
च र ण क सो गरि छा डि म र ह्नु ॥ भो स्वा मि रा म वं द्यु ॥ म न भ यी क न त पा र
का का म पु ग म्मा प नि दै न . त पा र का का र ण मै हो . त पा र ते म क सा द्य उ
नु हो ला ॥ भो प्र भु . त पा र सु ख दु ॥ ख ते न छे न्या ॥ त पा र की दै सु ख हो न ॥
म र्थ त पा र का सु ख भ यी मे रा य नि सु ख हो . त पा र का दुः ख भ यी मे रं प नि

श्रीराम
३५

दुःखहो॥ न स र्थत पाद का संग सर्गनु॥ ^{प्रभु} भो राम च द्रुवन वास मभय भनि आ
ज्ञा गर्नु भयो त पाद भया पनि. मेरा क्या भया **॥** फेरि ज पाद संग व सनु पा
या पछि दुगा का रा क्या भया पछि पात ज नि कै **॥** फल मूल भया प **॥** नि
आ **॥** मृतनु ह्या हो भनि एला पुकार ले. सीता को वचन सुनि. राम च द्रुते
आ ज्ञा ग **॥** भो सीता जात **॥** कि मि आना माव सीहि दुःखा बाढे मावै
ते पनि नहि दुःखा. एला ति मि बाढे मा मृतनु हो मय नि म. सु ऊ नान

श्रीगुरु
३५

॥ एला वेला मा अनर्थ होता भनि. राम च द्रुते आ ज्ञा गेर **॥** जाहा सीता ते
भ **॥** मा भो प्रभु ममा पित माव सदा वा एला गरु का मुख बाढ **॥** अने कर मा
पन सु **॥** मा. भनि कहि पनि राम ले सीता छा डेर. वन वास गयो मया को **॥**
सुनेर **॥** भो प्रभु त पाद ले छा डेर जानु भया **॥** **॥** मै ले. बाडै प्राण त्याग ग
रु **॥** भनि पकार ले ह त ग दी **॥** तव राम च द्रुते आ ज्ञा ग **॥** भो सीता नै ते प
नि जि जिग **॥** मा **॥** म क्या भ नौ उ सो भ **॥** मा ने रा आ भरण सवै गुं रु का स्त्री अरु

श्रीगुरु
३६

धत्तिताइदेउ॥ भनि. धुकु निमारहाकोदु ब्यतिमेत॥ अनेक बाह्यण हरुता॥
इअतीजअप्पागत हरुताइदिआ॥ अनेक असीदरीदुसिपाइ अनेक लोक
हरुतापिदिया॥ ताहापहि॥ रामचहुलेसवैलोक हरुतेकौशानिताइवि
चारगनुपई भनि॥ सवैलोक ताइनिमिहू वसहै भनि॥ ताहात ह्मणते॥
आफ्रामहजारि॥ कौश त्याकाहानसोपि ॥ निनजनातेपनि. कौश त्या॥
एनिमुमित्राएनिदुइतापनिविप्रदक्षिणागरिवरणा मा टोक दिघेर. दश॥

श्रीगुरु
३६

रघुपाइविदातिबुभनिगयाताहाणमचहुताइअभिषेकदिन्याहैरौमनिव
स्यालोकहेरु॥ रामतह्मणसीतादशरथचाइजाउंभनिजा ॥ ॥ बुभया
काहेरिरह्याभनि श्रीमहादेवतेपार्वतीकनकह्या॥ ॥ इनिश्रीअप्पा
त्तरामायणोउमामहेअवरा. संवादे अयोकांरोडवनुर्योआ श्रीमहादेवतेअ
ज्ञागन्याभोपार्वतिरामतह्मणसीतासमेतदशरथचाइविदातिबुभनिजा
दावेतामाअपोष्माकापुजा लोकहरुतेभन्याभो श्रीरामचहुतपाइसीता॥

श्रीराम
३१

तक्ष्मरासहिजगरिआञ्जयगरिआउनुभया। कजापातनुताग्या। भनिनेरा।
नाहारासचहुलेआजाग्या। भोप्रजालोकहूहोदशरथराजाकाआजा।
तेहामिहूहूद। गडकारायवनजातुताग्या। जसराज्यकाराजामरतभयो।
एस्कोसेवानिमिहूलेगनुपर्छ। फेरिमेरामहजारिकौशल्याएनितार्थविचार।
गर्नुपर्छभनि। एस्ताप्रकारलेआजागेरतवप्रजा। लोकलेभयाहूहूकस्तो।
चाडातयोकेकेपी। एस्तरामचहुलाइवनवासपठाउनुताग्या। फेरि। योहू।

श्रीगुरु
३१

शरथमहाधर्मात्माभनिवस्या। अनेकगुरागरिराज्या। धिकारहोभनिस्त्रीका।
वस्याभयीवस्योएस्ताकुरुकार्यगयोभनि। एस्ताप्रकारले। कैकेयीतार्थनिहू।
नागरिभया। भोरामचहुत। पाइजानुनहोस। फेरि। एस्तीसीतामहाकोमलअ।
नेकमान्यआदरले। वस्याकाकोमलभयाकाआलस्यहूमायसीसीतावनवा।
सकसोतपाइलेतैजानुभयाभनि। भोरामचहुतपाभया। हामिहूहूयोदेश।
मावसदैव। भनितपाइकासाभभयीहूमिहूहूआउभनि। एस्ताप्रकारलेभ।

श्रीराम
३८

ना
नेर। सवैलोकहुरुलेशोकगरिवस्या। यलोषजाहुरुलेशोकगरिवस्याकाहेरि
। वामदेवसखीले आतागया॥ भोषजा लोक एमका निमित्त निमिहुरुलेशोक
नमान॥ रामचंद्र भत्याजग संसारका स्वामि एस्तारामचंद्र ताद्रका दुख फेरियो
भत्या संसारका दुख नागरि वस्याका यस्का दुःख बाहिदै न॥ भोषजा लोक
मोरामचंद्र भत्या मनुष्य होइ न॥ श्रीराम नका अवतार हो॥ दुष्ट संहार गर्ना क
नसाधुरक्षा गर्ना कन संसारमा जन्म लिनु आउनु भयो भो लोके संखासुर तेवुदा

श्रीगुरु
३८

कावेद चोरित्याया॥ मत्स्य अवतार भैशंखासुर तार्कमारि॥ वेद उद्धार गरि पा
लनु भया॥ एस्ता परमेश्वर मोराम हो भनि॥ फेरि कूर्मका अवतार भै पृथ्वी चो
केर॥ पासनु भया यस्ता रामचंद्र काका दुख भनि भोषजा लोक छोड्छी पाता
तमा खसेर॥ यसले तामा बराह अवतार लिगेर पृथ्वी कन दातले उली मापियो॥
नागपराजुगरमा। सुषिरक्षा गर्ना कन॥ आफ्रामा पाते अवतार लि त्या फे॥
। रि॥ हिरण्यकसिपु भत्याको आदिदै त्य हो॥ सवैदै त्यका वराज्य भयाको

श्रीगम
३२

सत्ययुगमान्यौदैत्यस्वर्गमर्त्यपातालकनअवेतिसवैदेवलोक लाइदुःख
दियेरविभक्तभमाकाप्रहादतात्रअनेकतहकासासिगरिदात्योप्रहा
दआफ्रासेवकरदागर्नकन॥सिंधकाजस्तोमुखगिरि॥शरीरमात्रमनुष्य
काफैएस्ताप्रकारकानरसिंह॥अवतारतियेर.हिरण्यकशिपुस्ताइपेट
चिरेर॥प्रहादताइउधारगया॥देवलोकलाइपनिप्रतिपातगर्नुभयो.ए
स्तापरमेश्वरअवतार.योगमचट्टकाभोप्रजातोक॥फरिवतिराजाते.स्व॥

श्रीगुरु
३२

गराअविजेरदेवलोकवस्याजगौनहु.त्यागरिसवैजाइगोर॥अनेकदान
गरिदाप्तावतिराजातेएस्तावेतामअदिनिकार्गभमाकस्यपकाछारतेवाम
तअवतारतेनुभभोवतिराजाकनछतग^{गरा}रिपातातमावास^{गरा}या॥आजभो
तिरावततेअनेकवाहणहुरुकनदुःखदियेर.देवताकाकाठभपीरह्याका
रावणनासगर्नाकन.रामचेदुभनिअयोध्यामादशरथकाछारतेअवतारति
नुभयो.एस्तारामचट्टकासुखदुःखकाभावैदेनएस्कानिमित्तलेक्यानशोकग॥

श्रीराम

४०

रुस भोष जा लोक सीता भ न्याज न्या ता पर मे श्वर का यो संसार मोह गर्ती कन आ
फ्रामाया ले ॥ बिना उन न सका गरि ॥ एष न्या यो सीता ॥ भनित स र्ध निमिह रुते दु
विमान पु ॥ दैन द शर थ कै के जी ता द दोष पु दैन स्वर्ग वाट नारद आ ॥ उनु भया
कौ वेता मारा मते आ जाग न्या ॥ भो नारद मै ले यो रा आ भिषे क ति त्या दै न भनि ए
ता प्र कार ले संग आ जा गरि पठा या त स र्ध आप ना सु खै व न वा स जा नु भया ॥ वजा
न भ न्या ॥ ए वणा आ दि रा क्ष स सं हार गर्न कन आ फ्रा रु छ ले व न वा स जा नु भया भो

श्रीगुरु

४०

पु जा हरु निमिह रुते आ ता न ले शोक ग यो अव मै ले यो क द्या ज्ञान धारणा ग ॥
रि शोक छा ड ॥ राम का नाम जप गरि व स य स्का नाम मात्र ति या ले पु या ग वा रा ॥
न सि आ दि ना ता ती र्थ का स्नान द न ग न्या का पु रा प पा उरु ॥ ए स्का ध्या न ग न्या ॥
का ले दु र्ल म शु क्ति पा उरु ॥ भनि ॥ अं त्र का ल मा रा म ना म मात्र ति या ले पे व म हा ॥
या त की भ या प नि ॥ पर म प द पा उरु ॥ भनि त स र्ध निमिह रु आ न दु ग रि व स भ
नि ॥ ए ता प्र कार संग वाम दे व अ सी ले स वै पु जा लोक हरु ला रु वु जा ये र भ न्या ॥

श्रीराम
४९

भस्या योऽस्य कुशगवगानमरं ज्यालषु काशगर्तुं न भनि. यो कुशगुप्तागिरिगव
तुपर्क भनि ॥ वामदेवजपिते भस्या रमवैषजा लोकलेस स भनि मा न्या. शोक
कोट्या नाहापदि गमत क्षमण सीता दशरथका कथामागयो. रामचंद्रले आ
तागया ॥ भोपिता दशरथ हा मिहरुजा तुला ग्या ॥ नपारुका सत्यप्रतिपातग
नीनिमित्तले हा मिहरुवनवासजा तुनपार भयो ॥ आतादिनुहुवोस भनि. भनेर
॥ नवतीकैके शनिजुरुकुठेर ॥ भन्या भोरामएवे तासं मक्या नवसीरह्या. योगे

श्रीगुरु
४९

हु

रुनितलापावसला योरजाउ भनि भन्या. ताहापदि यो नितननालाश ॥ खेगया
कौसुनि ॥ दशरथले रामतक्ष्मण सीता नितैजनाका मुखदे रिदुःखसहनुस
केनरदशरथराजा साठै मूर्छा भयेर. यथीमालोठेर ॥ रह्या ॥ ताहापदि. राम
चंद्रले आफुले तायाका वसछोडेर ॥ गेरुनितलायाका वसलियेर ॥ तायातसैति
नैजनालेपनि गेरुनितलायाका वसलियेर ताया ॥ सीताले मात्र आखा मा आ
॥ भरि न्योत्तागयाका वसकसोलाउ भनि. रामचंद्रका मुखदे रिग्रह्या. य

श्रीराम
४२

लोसीतावस्थाका हेरेर ॥ रामलखीका हवोनहेरि कलावस्थाहोभनि
चितारुभकभक खरगि आजागन्या ॥ भोसी तामेलेभनिक कि. एलादुः
खदभनि अवकागनौधैर्यगर ॥ भनि ॥ कर्मकावसले संसारमाकलादुः ॥
खभमेन भोभनि ॥ सीतालाखुभायेर ॥ एलापाकारलेवस्थासवै लोकले
हेरेर ॥ रामकालक्ष्मणकासीताका अवस्थाहेरेर. कसैतेपनिधैर्यगनुस।
केन एलावेतामा. वशिष्ठ मधीले आजागन्या भोपापिनीकेके सीरामत

श्रीगुरु
४३

लक्ष्मणपोते एवचनलेसी^{ता} लार्थनिकानयो कर्म अयोग्यभनि वशिष्ठले आ
जागन्याकावेतामादशरथकाजयाभयेर भत्याभोसुमन्त ॥ मेराथयाहात्या
उ. सीतालाखुवसपनिल्याउ ॥ भनि आजाभयेर सुमंतमंवीले ॥ चाँदै न्योरथ
त्याइदिपोदशरथले आजागन्या ॥ भोसुमंतन्योरथमा रामलक्ष्मणसीता
कनराखीसंगैजाउभनिभनेर ॥ रामलक्ष्मणसीतानिनैजनालेपनिदशरथ
जालाइतिनफेराषदक्षिणागरिवरणामाढोकदिघेर. तिनजनापनिरथ

श्रीराम
४३

माचदेरभन्याभोसुमनवाडैरथवलाउ॥भनि.भनेर.घोववनसुनिदशरथ
लेभन्या॥भोसुमंतपरषभ्रतिखेर॥रामकामुखहेवुपतिकैभयोरामविना
नमेरोपागारहून्याकैनभनिदशरथलेशोकगोर॥रामचहुलेभन्या॥भो
सुमंतकानविलंबगईजाडैरथवलाउभनेर॥सुमंतलेरथवलायाजाहा
राजादशरथले॥रामवनवासगयाकाहेरेर॥छातिमावजुपानभयाकै
मूढाभयेरक्षनमात्रैमाचेतभयेर.तिनैरानीकामुल्याजिआजागयाभो

श्रीगुरु
४३

स्त्रीहररामनिनानमूढनसामेरोपागारहून्याकैनभनिभनेर.हाणमरमनि
कगय॥वारंवारंतडिवडिवस्या.ताहापदि॥अयोध्यादेशकालोकहरु
लेरामजयाकाहेरेर॥मायाछाडनुनसकिरामकासंसर्गभनिषदि३गया
ताहासुमंतलेरथवलायेरःतैजादा॥थुलोनदीका॥नीरपुगेर.रथव
नतलओडेर॥तिनैजनातेस्योनदीमाखानगयाउसैदिनउपवासगरि
स्योनदीकातीरमावसेरनदीकाजलमावलायेर॥स्योनदीकातीरमाथु॥

श्रीराम
४४

लोवृक्षएकछ॥ न्योरुषभनिउसैदिनवासगत्यानाहारात्रिभयेरुलक्ष्म
णालेखदुलिषेर॥ जागर्तगरिवरुणा॥ एसविला मासवैषजा लोकहरुता॥
ह्राआपिपुग्योर॥ रामकाचरणमारोकदिषेर॥ भव्या॥ भोरपुना॥
हामिहरुअनाथगरि॥ नराघ॥ हामिहरुतपाठकाससर्गआउछ॥ उसा
भव्याफकनुहलोस॥ भनिपसोषजाहेरुले॥ सोकगोरयोहेरिरामले॥
अथकसोगरुभनि॥ विनारुभव्या॥ भोषजा लोकहरुमफकत्याहु॥ निमि

श्रीगुरु
४४

स्योआअममाअनेकफलमलपाकीर॥ ह्याकाअनेफुलफुलीरह्याका॥
सगभमपाकाफेरिस्योआअममाअनेकपाणीजनरेरैभयाकासिंहवाघ
मृगभालुहरु॥ सवैहितमित्ररै॥ सगैरह्याकाकसैकोपनिवैरिभावैछन॥ म
तभावलेवस्याका॥ फेरिअनेकपंछिकात्वरभयाका॥ एलाथाउमा॥ पु
तोसरोवरएकछ॥ निर्मलजलभयाका॥ अनेकजातकाकबलतफुलफुत्या
काफेरिचबोललालचबोललतपकाशभयाकास्योपुतमाअनेकभ्रमरले

श्रीगम
४५

महृषाश्रयाका. परस्पपरारिरयाकाफेरि. न्योषोषडिमाकाजतमा
हंसचखेवावकुलोआदिमित्रभावनातेषीनिगरे. न्योजतमा. खेतिर
याकामायादादिजतजंतुसवैजतमाखेतिरयाका. एतामनोहरस्या
नभयाकावैरीभावकसैकानभयाकानभयाकासवैकामित्रभावनातेव
स्याका. जुनवनकानामदण्डकारण्यभयाकाएतासुंदरस्यानदय्यो
र. रामचंद्रकाअनिआनद. भयो. इन्द्ररुत्तिनजनाषनिवाल्मीकिअ

श्रीगुरु
४५

षिआश्रमयेर. ताहावाल्मीकिअषितेदेष्ट्योर. तपस्यागयाकापनिछो
डेर. वाँडेउठिआयेर. रामलक्ष्मणसीतानितजनातेपनि. असीश्वरकन
ठोकदिजाताहावाल्मीकीअषिश्वरतेआपनाआश्रमतैगयेरकुशका
आसनमावसायेर. न्योवाल्मीकिअषिश्वरतेधन्य. मेरोभाग्ययोभदा
अर्कोक्याभाग्यछ. साक्षा. तन्नागयणलक्ष्मीअनेतसमेतमेरोआश्रम
माआउनुभया. भनि. चिंतनागरिभावतेरोमहर्षगरि रामलक्ष्मणसीतानि

श्रीराम
४६

का न

नैजनालादपनिषु जाग्या. भावभक्तिले अनेक फलमूल आदिगि
एषि. लोत्रग्या. भोरामचहु आजमेरेम हाभाप्य. हो. तपात्रकादर्श
नलेमेरे. आश्रमपनिषु विप्रभयोभनि. तसर्थ. मेरेवडो माग्यहोभनि.
लोत्रगरेरतवरासचहुले आज्ञाग्या. भोवात्मीकि कधीचर. हामिहुरु
याहा आयाका कारणतपात्रले. तजात्याहोत्र. सवै जादुरुन. नैषनिष
रिषेचनाकुरामगर्थ पिता कास म्यप्रतिपातगर्नाकन. योदण्डकारण्य श्रीगुरु
५६

वनमाचौरवर्षसंमवनवासगर्भनिहामिहुरु आया. अवहामिहुरुका
हावसनुपम्यो. जाहातपात्रले आज्ञाभयोताहाहामिहुरु. वसहुभनित
पात्रले. योवनका. सवै जादुरुनभनित्योरामचहुका वचनमुनिकन. वा
त्मीकिले आज्ञाग्या. भोरघव. संसारमासवैकावासगर्भ्याथाउ. तपात्र
काउदरमा. हो. जगत्संसारपनिषु तपका तमा. तपात्रछेउहुंछ. फेरि. सवै
प्राणिसित. तपात्रकावतछ. फेरिरुहानपात्रलेकाहावासगर्नुभनिआ

श्रीराम
४१

ज्ञागर्नुभयोक्तो आश्रयं भनि. भोपरमे श्वर. तपाश्रसवैसित प्राणीसंगपृ
थ्वीपनि आकाशपनि जलपनि. तेजपनि वायुपनि. सोमहाभूतलेसृष्टि
गरिगष्पाका. बुद्धाणासवैतपाश्रहो. तपाश्रभत्याजग व्यापि हो जगत्क
र्ता हो सवैकोपाल नागस्थी. एता आदि पुरुष तपाश्रले हामिक नमाया
देखाश्र. आज्ञागर्नुभयो भोएषव. तपाश्रसितासमेत वसत्या आउमकहं
छु. सुनुहोस. भनि भोएमचहु. तपाश्रराजगत्या आउतास ज्ञानकाह

श्रीगुः
४१

दयक मतमा हो भनि. जस्का प्राणिका सुखदुःख वारे वरमा वगर्मी जस्का
संमभावछु. अर्काको विजा भिनहे र्मी. कामको धलो भमोह. नभया
कातस्काह दयपंक जमातपाश्रका वास हो भनि. भोएमचहु जस्मनुष्यले
अनेक पूज्य पशुदाननी र्थपात्रादि. गोर. सोफलसवैतपाश्रपीति भ
नि चठापो जस्काह दयक मतमा सीतासमेत तपाश्रका वास हो भनि. फेरि
भोएमचहु जस प्राणिले यो संसार असत्यछु र्श्वरमात्र सत्य हो भनि. जो जान

श्रीराम
४८

लाफेरिसुवर्णवादिमानोएकैआनतासुखःदुखपनिएकैआनतातस्का
दृढयकमलमासिसमेनतपाठकावासहोभनि. भोरामचद्रनपाठका ना
समात्रलेमवासीकिअसीभनिवस्यातपाठकाप्रसादलेभूतभविष्यवर्त
मानमैलेजाया. भोरामचद्रमेरापूर्वजन्मकाकुराकहंछु. सुनुहवोस्यैलेम
वास्याभयीकिरानिछोरीसितवस्याया. आपैलेपतिकिरानिकावर्ति
गरिवस्याया. नवमोस्वास्तिवाटछोराछोरीभयर. नितरुप्रसिमातग

श्रीगुरु
५०

नीकनचोरभयिधनुस्वाणतियेर. अनेकक्यणारिहुरु. भारिधनतियेर
. छोराछोरीलाइयास्यायात्रिमादाकदिनीकनवस्याकोमात्रहोउनअ
नेकवास्याकोपनिप्राणतियाया. एलावास्याधातकि. भयेर. भयान
कपापगया. आफ्रकिमाकर्मसवैछाडेर. किरानिजैमभयीरह्याया
भोराम. सदैवलेकर्मगरीरहदावेलासाएकदिनमा. सप्रअसीहुरु. आपा
कामैलेजारैवानदेया. उनहुरुकानेजतेसूर्यकाप्रकाशैप्रकाशमानभ

श्रीराम
४२

याकानीअधिहुरु. मैतेअपारिहुरुभनिभानि. उनहुरुकाधनतिनुभनि
भानिमैतेधनुअमावाणजोर. चाडै. दुगुरिगयेर. हपकाया. पधि. २पधि
निमिहुरुकाहाजांछु. भनिभनेर. उछिनुगयानाहाअछीहुरुते. कयानभ
नि. भनेर. नवमैतेभन्या. भोअपारिजन. निमिहुरुकादुअसवैत्याउभन्यार
. भोरामउसवेतामाउलोवाणदालकाकर्ममैतेगरिरह्या. तिनहुरु. अधिभ
निमैतेजानेन. नवनाहाअधिअचरहुरुतेआसागया. भोकिराति. नै

श्रीगुरु
४२

तेअनेकलोकमारिदुअहरणगरी. पुत्रपरिवारपातिरह्योथ्यो. अवतघर
गयेरयोपापकसलाहहोभनिसोधेरहामिहुरुतेउकोदुअतिनुआउभनि
भनेरयकअधिहुरुकोवचनसुनि. घरआयेरसोभ्या. भोपुत्रपरिवार. मै
तेअनेकपाणिमोर. दुअहरणगरिसदैत्यायाथ्या. भोअपारलेनिमिहुरु
रुपातिरह्योथ्यायोपापकसलाहोभनि. मैतेसोध्याथ्याभोरघवनवपु
त्रपरिवारहुरुतेभन्या. योपापनिमित्तलाहोहामिहुरुतेवोरित्यायोभनि

श्रीराम

५०

पनिजानेनधातित्वाद्योभनिपनिजानेनतैलेगयाकाकर्मतेरैकपातमा
हो.मोपापनिनहहलेतिथेनर. धिकारहोभनिवितायेर.धनुषवाणको
डेरतीसप्तअषीरुह.वस्याकाथाउगआउनहहसगपुत्तुनरगदैमावैतम
.भयेर.तनैअषीअरहहकाचरणमाहोकदिये.मैलेविंजिगयालोच
धिअर.तपात्रहहलेमलात्र.उद्धारगर्नुपदे.मयलीपापाचारीभयातपा
रकाचरणकारकनगयाकापुण्य.ले.मेरोयलोचेतभयोभनि.भोराम

श्रीराम

५०

उसवेतामामैलेउनैअषीअरहहकेउ.भया.तपात्रहहलेमलात्रज्ञानउपदे
रुदिये.मेरोअनेकपापनाशगरिदिनुहवोम.भनि.दण्डपुणाम.गोर
वस्या.नवतीसप्तअषीरुहलेपास्पपरुनयोवडोपापिछु.एमलात्रराम
नामदिनुजोग्यैकन.उसनोगरिदिउंभनि.समधारगोर.तीअषीअरहहले.
आज्ञागयो.भोकिरती.मरामभनि.जपगभनिहामिहह.पाहानआपा
संम.यहीवसभनि.आज्ञादिये.भोराम.उसवेतामाअषीअरहहस्वर्गजानु

श्रीराम
५१

म

भयो. नवतीनहूका आताऊँ भोर घुना थ. नपाशकानाममात्रमएमभनिज
पगोर. उसै चारुमावस्या च्याउसदेतामाचित्रस्त्रिगरि. एकचिततेमोनामजप
गोर. नमस्काप्रभावतैपापलेमुक्तभयो. शुधान्. लामेरोशरीरमाशयोसा
क्षानकाठरुगाऊँ मेरोशरीरभयेर. नाहापछि. ममस्माका च्याउ. विमितालेमा
पेखनि. नेहिमाछोलेमक. नछेपिगछ्यो. एताप्रकारतेदेवताकावर्ण. एक
हजारकाप्रमाणतेवर्णगयापछिउनैसप्रभविहू. नेहिछाउमाआयेर. आ

श्रीराम
५१

ज्ञाग्या. योमाछोकाराशमित्रकोहो. बाहिरआउभनि. आतागोर. नवमवा
हिरनिसक्का. अघिकाशरीरछोदेर. दिव्यशरीरभयेर. निसप्रआर्छादहूले. मम
धिप्रसन्नमै. वरदिपा. अवदेधिअछिनकिरानिहो. अवउपान. यो. विमिताले
स्वप्नाका. माछाकाराशवाटनित्केर. दिव्यशरीरभयो. नेरा. एकैजन्ममा. दुः
प्रकारकादेहयायो. नसर्थनिम्नानाम. वात्सीकिभनि. निनैलोकमाप्रख्यानहो
लापनि. पेरि. रामनामकाप्रभावते. नउद्वारभयेर. भविष्यरामायण. रामचद्र

श्रीराम

५२

काचरित्रमयाकोवनाउभनि. भोरामएलाप्रकारलेमलाद्वारदियेर. अछीअरहर
स्वर्गजाउभयो. भोरद्वार. एलोभयाकामनपाठकानाममात्रलेएलापदविषा
याभनिआफ्रापूर्वकथाहारासकामुख्यानिआज्ञागरे. अछीलेभया. भोराम
वद. अबमैलेन्योसपुअछीकाआज्ञाकै. भविष्यरामायणामैलेवनाअतपा
रुकापादरेण पाये. मेरोजन्मकृतार्थभये. आजतपाठकादर्शनपायेतस
र्थ. मेरोकृतार्थभयोभनि. एलाप्रकारसंगवात्सीकिअछीअरलेरामदेउआ

श्रीगुरु

५२

ज्ञागरे. आफ्राशिष्यहरकनन्या. भोसिष्यहर. रामतक्ष्मरासीजानीनैज
नाकनगंगातीरमाघरनुह्यादेउभनि. आज्ञागरे. शिष्यहरलेरामला
कप्यारोवनाशदियाशुकातागर्माआउ. भानसागत्याथा. निर्यकर्म
गर्माआउनुदाजुदाकोआनुह्याये. घरवनापीदियाभनि. श्रीमहादेव
लेआज्ञाग्या. भोपावती. न्योदण्डकारणवनमासीतासमेतरामचद.
न्योआउमावासगम्यातक्ष्मरातेधनुषवाणखड्गहियेर. श्रीरामसीताशनद

श्रीराम
५३

रुद्रादिनयनिरक्षागरे. एताप्रकारे श्रीरामचंद्र राजगर्दभयाभनिश्रीशिव
वत्तेपार्वतीकनकह्या. ॥ इति श्रीमध्यात्मागमायणुमामहे श्वसंवाणे अयो
ध्याकाण्डे पंचमोऽध्यायः ॥ ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ श्रीमहादेवते
आज्ञागन्मा. भोपार्वति. सुमंतमंजी अयोध्यामायकैर. दशरथा जाकन
नमस्कारगरे. रामचंद्र कावृत्तानसवैक. ह्यात्मासुमंतकाकुसुनेनदशर
थराजाते आज्ञागन्मा. भोसुमंतरामकादेरव्यान आशसकाहामंमयुगि

श्रीगुरु
५३

रह्यावाढोमाकसोकसोभयो रामकासमाचार. मुंनुशुद्धागरिवस्यातेसवैकह
भनिभनेर. नवसुमंतलेभत्या. भोमहागजम आफ्राषुसिते. फ. कर्जाकोहोश
नमफर्वंतु. मत्तैहैन. भोमहागजतपात्रकाभिन्नगुहाराजाकादेशामैते
हादि. आजातीगुहाराजातेपतिमैतेपति. अनेक प्रकारे विंतिगन्मा अया
तपात्रसंगै आउंहुभनि. अनेक प्रकारे. अर्जिगन्मा श्रीरामचंद्र तेतैगयन
हामिदरूप कर्कशपदाया. आपु आपु मात्रैगंगापारगरी जानुभयामैतेआ

श्रीराम
५५

स्वातेदेखज्यालसंमहेरिरह्याध्या. नदेखन्याभयापदि. हुंदैहुंदैआया
ध्याभोमहागजदशरथ. ताहापदि. कताजानुभयो. काहाजानुभयो. मै
तेजानेन. उमैदिनसमगमलक्ष्मणसीताजिनैजनातेपनि. अन्नपानगनुभये
न. जलपानमात्रगरि. जानुभयोभनि. भोमहागजतपाशकामित्रगुरुदश
जातेअनेकफलमूलपंचामृतआदिअगरिगिदिऐरनैपनिरामचहुते
स्वानुभयेन. भनि. एहाप्रकारकासुमंजमंजीकाकुरासुनि. दशरथगजा

श्रीगुरु
५५

काहृदयमावजुपानभयाभेभयो. हागमहारघुनाथभनि. करयेर. वडा
शोकगरि. कौशल्यारानीकाकोआमागयेर. रोठिरह्या. नवकौशल्या
तीलेआज्ञागन्याभोप्रभुदशरथ. वजानशोकगछै. आपैलेरामचहुला
र. वनवासपछायेर. आपैशोकगछैसकसलाइपस्याउनुभनि. ज्योपरि
पंचनागरीस. भोस्वामि. अवदेधिअधि. तपारुजानीधर्मात्माहोभनि. व
स्या. तपारुजानीभयाकास्त्रीकावरूपभयीकन. विचारगमचहुलारुवन

श्रीराम
५५

वासकसौगती. रामचंद्रले. क्या अपराधगम्यो राम जो छेन. सत्यवादि. स
सुखहो. कैकेयीका वचन मा कान राम लक्ष्मण लारवनवासदि. पीस
. धिक्कार मोमहा राज. अनेक. अपराध भयापनि. आका पुत्रा ज्येष्ठ
पाउनु जोग्य हो छेन. एता मदा. निरापराधिभयाका. रामचंद्र लारवनवास
दि पीस. गैर. नितानाका वचन गयो. एता अवस्था गरिस. मेरा पुत्रा म
चंद्रले अपराध की गम्या को छेन. मो प्रमु एता विलसत पाऊ. पुत्र तेह पनित

श्रीगुरु
५५

पाऊ को छेन. चण्डालका स्वभाव मुख देनु पनितै ते तेरा. भनि. निमिरो यो क
यवार्थ हो भनि. एता प्रकार तेरा मकाम छजारी कौरा त्याते. दशरथ क नभ
श्रीमती कौरा त्याका वचन सुनि. दशरथ राजा का हृदय मा दुःखि धर्यो. घा
उमानुन ह त्या कै वडो व्यथा भयेर. दशरथ ते आजाग म्या. मो कौरा त्या म
तैसा दू वचन सुनि. क्या नम लार भनी म. मेरो पुत्रा आधा छडि पनिरह म्या
छेन. एता ते ते वजु तेहा त्या कै भयाका. भानु कै वाग्वजु ते प्रहार गम्या. मो

श्रीराम

५६

कौशल्यामलादश्रापलागेर. न्योआपकाफ तले एलापुत्रशोकपायायो
अधिको अपूर्ववृत्तमकहं. सुन. पूर्वमामशिवारखेतनुजादावेला
मा. मैले अनेकजिवाजनुवोजै जादा. एकवनांतरमा अधा अधि. दुइ
खीपुरुषतेपनि. नमस्यागरीवस्थेवापुमात्रआहारगरिकन. ननुदहक
एकपुत्र. धियोतवपुत्रतारु. मअंधाअंधि. दुइतेपनिभोपुत्रहामिदहक
निष्ठाताग्योपानिवातुदेउ. भनिमनेर. न्योपुत्रते. तुम्वातिगेर. कुलामापा

श्रीगुरु

५६

नितिदावेतामा. भनरगरित्तरआयेर. नवमैलेहानिकाशब्दथानिसर. मंत्रग
रिहान्या. भो कौशल्यामो वाणतेहातुतारुखरसुनीमात्रदुइ. नमर्थ. न्यो
शब्दआपाकोहानिभनिथानि. मैलेहान्या. मेरोवाणभन्या. कैलेपनिव
र्थदुन्याछैन. नलागिछोर्दन. एलावेतामा. न्योपानितीरह्याका तारुता
ग्यो. न्योपुरुषतेराम. राम. भनिकरायेर. भन्या. कौनचडातलेमलादहा
न्योमैलेकसैतारु. अपराधगोरपनिमलाद. पुहारगेर. न्योभनि. अबकसे

श्रीराम

॥ ५७ ॥

गौ. मेरे वावा महतारि भन्या ॥ अं. धा. अंधि ॥ अवत न हू को से बाग ॥ भनि
इत हू भन्या. वायु मात्र ॥ आहार गरि हू ॥ एता त पञ्चि हू का मैले. टह
त गोर. वस्य ॥ कवत हू मै भरो सामा वस्य का ॥ अवत न हू ता हू को पा
तता ॥ भनि. एता प्रकार ते कणोर. रहं ॥ एता त व मैले ॥ नो कण पा को सुनि. मे
रो मन मात्रा स भयो ॥ अवक सो गरु भनि. न्यो धाउ माः अने क त पञ्चि हू वस्य
का हू न. को हू चितु भनि हू त पता परः वदि धाउ मा गयेर. हे दा. न्यो पाणि ति

श्रीगुरु

॥ ५७ ॥

नु आया का मेरो वाग ते ता गोर. रोटी र हू को टे घिन्य सका गो दा समा तेर. मैले
विनिग म्या. भो म हू पुरुष. मैले हू ति भनि ॥ ध्यानि हू न्या ॥ ध्यानि मिता हू ता ग्ये
अवतु. तो अपराधी भय. न्यो अपराध हू माग नु हू वो स भनि मैले जानि न जात
ते हो न. न जानि अचि कै ते यो अपराध ग म्या. हू माग. भनि अने क प्रकार ते
विनिग म्या. त व न्यो पुरुष ते भन्या. भोट शर थ. अव मैले क पा ग रौ मे रो पा ग र हू
न्यो हू न. मेरो वावा महतारि का स. ता प भयो. भोट शर थ. अव ति मि ते यो पा नि

श्रीराम
५८

तैगयेर. मेरावावामरुतागि. कनसुवाउनिनरुर्निर्षागरिरद्या. तसर्थस्योपा
निषुवाउभनिफेरिमेतेसेवागम्यारु. मेरावावामरुतारिका. खवरगनुपदे. न
आगनुपदेभनि. ताहापदि. पसाददिनुपस्यापनिआपदिनुपस्यापनि. न
नहस्तेदिंरुन. हासिवातनिमित्तारु. भयदेनभनियतिभनेर. प्राणाकोद्या
. भोकोशस्या. ताहामरुतपतामेरस्योनुवातियेर. मगनाथ्या. मेरोगोडा
कोशसुनि. स्योअंधाअधितेआफ्रापुत्र. आपोभनिआनिभन्या. भोपुत्र

श्रीगुरु
५८

आजवडोवितम्भयोकाभयो. भनिभनेर. तवमैतेपानिषुवाये. भन्या. भोत
पत्ति. निम्रापुत्रदोरुन. रघुनाकाकानादिदुन. मेरानामदशायदुन. भनि. भो
वृद्धनिम्राकोरामेरावाणलागिधस्यैमैतेपानितिह्याद्यातमाहातिभनियाति
हास्याअवसअपराधिभया. भनिभोतपत्तिमैतेजानिकनदोरुन. नजानिग
स्या. तसर्थमतारुहमागनुद्वसजमेनिम्राकोरतेसेवागम्योथ्यो. तसर्तैमै
तेपनिसवागरुताभनि. भन्याकोसुनि. स्योअंधाअधितेभन्या. भोदशायअ

श्रीगण
५२

वहामिहुरुतेव्यागनोपर्वजन्मका. फलकसलेमेतलाभोदशायअवतिमि
तेहामिहुरुतिनजनालाइपनि. सोलावनाउभनेर. मैतेकाठत्यायेसोला
वनाइदिआ. एलावेतामा. सोअंधाअधितेसोतामायिचरेरमकनआप
दियो. भोदशायजसोपुत्रशोकतेहामिहुरुतेपाणत्यागगनुलाग्यातलेने
रापनिपुत्रशोकतेपाणत्यागगनुपरोस. भनि. महारआपदियो. भोकोर
त्या. एलावेतामामैतेभत्या. भोतपत्तिमेरापुत्रहोलाकि. भनिभनेर. तप

श्रीगुरु
५२

चितेभत्या. भोदसायत्रिभुवनपतिरक्षागनुसामथंभयाकाएलापुत्रनेराइद
भनिभत्यावदिपुत्रकाशोकलेमैतेपाणत्यागगर्ह. भत्या. भोकोरत्याइउ
नदुरुकाआपले. मेराएलाअवस्थापामाभनि. दशायतेमतिआजागरे
र. हारामहाराभनिकरायेर. चादैपाणत्यागगनुभयोतववसिकादिमेंवीह
रुसवैआयेर. दशायजाकाशिरनेतमा. वराइराय्या. एलावेतामा. वि
दितोवा. भानलाइदीपठामा. योपत्रहेदैमावितंवनगनुचादैआउनुपठभ

श्रीगम
६०

नितेतिपठायो. नित्यकर्मसर्वैसक्पोरमा. सागरनुभनिवस्याकावेतामा. यो
पत्रपुम्पो. भरततारुदिया. योषत्रभरततेर. भत्या. अयोध्यादेशमा. क्याम
यो. हासावावादशायकि. भयोकि. फेर. श्रीगमचदु. कनकेहि. भयोकि. यो
दुत्रमा. एक. यो. क. भयो. हो. ता. भवश्य. फेर. वा. वा. न. भ. या. प. नि. म. नि. वा. डै. गरि
प. नि. प. ठा. उ. त्या. कै. न. ए. म. के. त्या. त. अ. यो. ध्या. मा. ए. नि. को. ह. त. प. त. दु. त्या
कै. न. श्रीगम. न. भ. यो. ए. नि. का. उ. त्या. त. भ. यो. भ. नि. वा. डै. गरि. भरत. अ. यो. ध्या.

श्रीगुरु
६०

सह. पु. ग. न. आ. या. ए. ला. वे. ता. मा. भरत. ते. अ. यो. ध्या. शो. भा. न. भ. या. को. दे. सि
. भ. त्या. क्या. भ. यो. हा. हा. उ. प. दु. व. ए. ज्य. प. नि. शो. भा. कै. न. भ. नि. म. न. मा. त्र. स. मा. नि
चा. डै. दर. वा. र. मि. त्र. प. त्या. सह. तारि. कै. के. पी. का. हा. ग. यो. र. सह. तारि. का. वा. रा. मा. रो
क. दि. यो. र. भ. त्या. भो. सु. मा. ज्यु. यो. ग. ज्य. का. व. र्त्त. मा. न. क्या. हो. भ. नि. वृ. त्तो. त. स. वै. आ
जा. ग. नु. ह. वो. स. सह. ज्य. प. ता. यो. र. आ. यो. ध्या. वा. वा. नि. का. क. न. कि. श्रीगम. कु. श. त
क. कि. भ. नि. सो. ध्या. न. व. ए. नि. भरत. का. व. च. न. सु. नि. कै. के. पी. ते. भ. त्या. भो. पु. त्र. ति

श्रीराम
६९

प्रानिमित्रमैते. वदादुःखपात्रु. निगवावा दशाय. रामकाशोकतेवैकुण्ठवा
सभयो. रामवनवासगया. अवयो राज्य. निमित्ताद्रभयोमनि. एसोभम्याकोसु
नि. भरतकाहानिमावजुताप्यारै. वजुप्रहारतेवृक्षधम्यारै. भूमिमातोद्यो
. हारामहारामभनिकरायेर. शोकगरिरह्या. रामकावनवासभयाकाकुण्ठनेर
. भरत. वोतनैसकेनर. मूर्छामैरह्या. त्योहेरि. कैकेयी. तेक्यापोगहंभनि. भरत
काकपातमासमानेरउठाया. पानिसुवायेर. अनेकउपकार. गरी. ताहापरि. भ

श्रीगुरु
६९

रत्नकावेतमयेर. भय्यारनैतेभय्या. भोपापिनी. नेरमुखदेनैकेनधिकार. योवर्म
कसलेभनेर. गय्या. एस्तदुर्वृद्धिकसलेसिखायो. रामचदुतात्रवनवासगयातेन
तात्र. कसलेधय. भय्यो. रामभय्याकाजगत्ससारकागुरुहो. आत्मापुरुष. एस्तार
मचदुतात्रवनवासगयो. संसारकोसवैकोपनि. अपराधिदुर्वृद्धि. अमागिनीभयाका
तहोसहरिहरी. एकर्म. गर्नुहोव्याभोपापिनीरामकानिमित्तहाम्रावावापिपासमा
गम्यातकसोवाचिस. हाम्रावावापनिनैतेमारीस. अवक्यागरी. नआमाभयीस.

श्रीगम
६९२

आमाहौं न भया मोखदु प्रहार लेमा रुता भनि. भोपापिनी. तेरा मुख हे नैं दैन. भनिम
हजारिका को धावा वाट वाहिर निखेर. कौरा त्या का को धामि चपमेर. कौरा त्या
गती का पाउ मा रो कटि पेर रु दै भया. भोमा ना तपाउ का मनमा. यो का सहामि हरु
लेग आ भनि यानु होला यो मै लेवा ले पायेन. विनाया कै दैन. मेरो आमा पापिनी ते
. एलो उपदु. गयो यो हामि हरु ले होउन. समसम यो काम मा मै ले विचार ग मा को
भया एक सपवा हारा वध गमा का पाप मलाउ भनि. तपाउ का मनमा यो पत्त भल का

श्रीगुरु
६९२

भनि यानता. यो कर्म मै ले जा त्या को भया गुरु मा त्या का पाप. हजार गार्द मा त्या का
पाप मलाउ. लागता. भनि भरत ले. सप चगि भया भोमा ना कौरा त्या रा म विना नम
वाचनु छु दैन. मै ले विषया पेर. प्राण मा गग रौं ता की. यो खदु ले. प्रहार गरि. मरौं ता
की यो द श त्या गरि. तीर्थ यात्रा गरु ला भनि. एला पु का ले. भरत का कु रा गु नि. भल का
वैराग्य हे रि. कौरा त्या वशिष्ठ अषि. सुमंत से वी नी न रु रु आदि. सवै लोक ले. वुरा फेर. मं
छन. भो भरत पिता द रार घम हारा जा लाउ. अर्धि से स का रा गि तु प र्छ गनु द बोस. भनि ना

श्रीराम
६३

नाप्रकार ते. भरत ताडवुमार्त्ताहापदि. भरत ते दशरथका अग्रिमंस्कारगया. दश
क्रियागोर. जसोवेद कावचनरु. पुनक मंगरिसकेर. कोतीकोटि प्रमानते. वास्तु
भोजनगारायेर. वास्तुगहस्तुताडवसु वार्ता आदि गह ना आदिगारि. अनेक हातिघो
रागार्त्ता अनेक रुज्जारदानगोर. सवैसकेर. रामचंद्र ताड फरकी रुसाउनुभनि. यो भरत ते
अयोध्याकोडेर. वनवास जाउं भनि. गया श्रीमहादेव ते. पारवती कनकला

इति श्री अष्टात्म रामायण उन्मास दशरथ संगदस्ये ध्याकारे
षष्ठोऽध्यायः ॥ ६॥

श्रीगुरु
६३

श्रीमहादेव ते आज्ञागया. भोर्पावति अयोध्यामावशिष्ट सुमंत आदि अनेक
मंत्रीरु वनुति. साभागीवशिष्ट अधिले. भरत कनमंछन. भो भरत पोरा जानम
रु कनमहाउत्था भैरहेरु फरि. निष्ठापिता दशरथ लेषनि यो राम. निमित्ता रुदि
गेर गया. भो भरत राम भत्या. निष्ठा मुमाका आता ते. दण्ड कारण वन गया. अ
वपाहा. वामदेव आदि वास्तुगह ते नानातिर्थ काजल त्यापाकोरु. राम ता
ड अमिषे क दिवु भनि. अनेक सामागी जोरेर. राच्या. भो भरत. यो सामागी ते

श्रीराम
६४

तपाइते अभिमेक सितुह वोस. भनिवशिष्ट अछी ते. एते आ जगोर. नव. भ
तभई न. भोवशिष्ट. योग्य का धनिम होइ न योग्य का धनिता. राम पो हो
भनि अवम. राम का चरण का सेवक हो भोवशिष्ट. निपापिनी कै के श्री कानि
मित्र एते हुवा त. राम सीता का भयो. भोवशिष्ट. मेर को धमया का देखीत ये
तदुपहार ले कै के श्री का प्राणपनिति उं भया जसो लागइ नै पनिका भया
मते मुख हे. म्यै न. छीव चगयो भनि अपुस न होला. तसर्थ मेर मुख. राम ते हे

श्रीगुरु
६४

म्यै न भनिमात्र. मेर को धमया म्यगया. भोवशिष्ट. राम का दुःख का कारण भय
मजला चण्डा त को मुख हे नै न. मवडा पापिष्ट. मेर निमित्त. राम का वनवास भ
यो भनि. हाहा कलो मेर जन्म. भनि राम कानि मित्र महा सो क ग्या. फेरि भरत ले
विलाप गरि भया. भोवशिष्ट तपाइते हुरु लेपनि. राम आ हाइ दावेला मा. एते भ
यो भनि समाचार. भनि पठाउ म्यै हो. मभया. मै ते राम सीता का वनवास. गरउ ला
का. धन्य भाग्य भंनु त क्षमण का. राम का संग गया पापिनी का गभवाइ जन्म भये

श्रीराम
६५

ये
र. ममात्र. रामकादोहि. भयेयाहावसनुप. मोभनि. एताप्रकारते. मरुजा
नीभयाका. भरतलेभया. भोवशिष्ट अवमैलेपनी. १ कसोराम जानुभयाउत्तैर
बुधसहितगारि. गरि. काहागमराजगर्नुभयो वृद्धिगयेर. रामतेतै. गपासंगैजाउं
लाहु. माभया. फलकाह. त्याउं लानहु. माभयासंगैजाउं ला. योग. यम. आउ. माहै
न. भनि. एताप्रकारते. पुनि जागयाकोदे भिवशिष्ट सुमंत आदिगारि. सबैसभातो
कलेभयाधम. २ सुपुत्रभनुभरतते जानिभनुपनिभरतहो. कलोरामसु जायाया

श्रीगुरु
६५

वासधमहो भनिभरतलाउ. प्रसंसागया. एताप्रकारसेसंगभरतलेभनेर. वशिष्ट
जीवरते आजागया. हामिह. रुपनि. निमिसंगजाउं लाहु. भया श्रीरामफ. काउ
त्याउं लाहु. भनि आजागोर. भरतलेभया. भोवशिष्ट तपाह. रूपातनु भयापनिनभया
पनिभरतराबुध. दुर्जनाना अवश्य जाहु. भनि. भरतले एताप्रकारसंग आजागदी
. एतावेतामागविभयेर. नेहि. एविमा. रामैमात्रध्यानंगेर. जागर्तगारि. विहायेर
प्रातकातभयेर नाहा. भरतले आजागया. भोसुमंतमंत्री हा मोसुमा. नृकौ. रया

अयोध्या
६६

कनडो लामाचराउकैकेपीलारु. नचराउसैत्यसवैतगारगभनिआजागरे. सुमे
चसे. अनेकसैत्यवरोतिर. अनेकरथहानिघोर. सेना. चनुरंगवतसमेतगरी. वणे
तिकौरुत्या. सुमित्रा. भरतकाआज्ञानभयापनिवैकेपीडोतिमारुषि. सुमेचले
पानिभरतथात्रभत्या. भोभरतबनपात्रकाआज्ञाकै. सवैतगार. भयोभनिभत्या
नवभरतले. आपु. अधिकेयोसाकछोडेर. गेरुवावसुलारुकन. जतापतिर. ह्यासे
नासंसर्गारिषोसोभामअधिजानुभयोथ्यो. नसै. हारमहरामभनि. अयोध्यान

श्रीरामः
६६

गरेवाटनिस्काताहामवैलोकभरतसवैगैरामकाहारागयोभनि. सहरवाटनिस
क्यातवजाटाजादण्वत. एकपुग्यर. त्योथाउमावराकाधाराएकरहंथ्यो.
नेहियाउमा. रामचद्रुलेवासगयाकाथाउमापुग्येर. नवभरतलेसुमेतलारुआ
ज्ञागयाभोसुमेतरामचद्रुलेकाहावासगयापहियाउमावासगदु. भनिआजा
गरे. सुमेतले. यसथाउमासीतासहितगरिरामगर्नुभयोभनिभरतलारुदेखाये
र. भरतलेभयापनि. सीताकाअनेकमणिमानिकाविहहेरेर. भरतलेआज्ञागया

श्रीराम
६७

भोसुमंत्र. अनेक पातवघवराना नाशकारकाशय्यागि. खानामासका लाह
मासीताएस्ताभरमाशय्यागिकसेगिरिजानुभयोभोसुमंत्र. हेरसीताकाग
हनाकाविंद्रुधीहेरे. मेराद्रुदयमावडोदुःखमजोभनिएस्ताप्रकारतेवागेमा
जादंजादंगमसीताकामात्रप्रसंगागिरि. केरगमतेवासगिरिजानुभयोकाएक
वामस्थापुण्यामसथाउमातहमरातेवनायाकाकुशकाशय्यामात्रउसैर
कोदेघिमोशराजाम. भरतपनि. कुशैकाविद्याउनैमावासगनुभया. पोस

६७

माचार. गुहाराजातेसुनेर. दशरथराजाकापुत्रभरततेअनेकचतुरंगवतसेनातेस
हितगिरिभरतआयाकासुनेर. सोगुहाराजाते. रामचंद्रमार्तुनिमित्र. सोभरत
हेआयाहोभनिवितापेर. सोगुहाराजातआफुरसिपाहिसेनावदुलिर. रामचंद्र
कानिमित्रसोभरतसंग. सुधगर्नुभनिआया. भरततेभयापनि. केवलरगमसंगसु
गर्नुआयोहोभनिवितापर. सुद्रगर्नेपराभनिआनि. घातघातमा. नाम. दुगा
रिकापेर. गंगापारआउननरक. मागिरिगया. उसैवेतामाओहिगुहाराजाते. मन

श्रीराम
६८

माचिंतनागम्यानिमसमगम्या. कसोआउम्यादें. विचारतागौ. भनि. सौउगात
तिघेर. भरतकाहागघेर. आपुतेत्यायाकासौगातसंदेशअगादिराघेर. भरत
काचरणमारोकडिघेर. मोगुहाराजालेहेरिरद्याकलाभरतभयागिरुतीतगाया
वज्र. जताधारि. हागमहागमभनिमुस्कारहाति. एलाएकारसंगरद्याका
देखिरि. गुहाराजालेभया. भोभज. नपाठकासेवकमहें. नपाठकापितादकारच. ने
गमित्रहो. भनि. परस्पागिरि. कुशलाशगोर. आतिंगनगिरिभरतलेपनि. जातागम

श्रीगुरु
६९

. भोगुहाराज. रामकाचरणदर्शनपाउम्या. निमित्त. धन्यधन्य. भोगुहाराज. राम
बंदले. निमिसंगभेजगोर. रामकताजानुभया. निमिसंगरामले. केहिआजाग
रिगयेवे. ध्योकिरायाकोभयाकहवहवोस. रामकतायासनुभयो. उहिआउमाहा
मिजांछु. किनिमित्तलेमलाठलैजाउ. रामकाचरणदर्शनगर्हुवडोहजपतायभनि
एलाएकारसंग. भरतलेआजागोर. गुहाराजालेभया. धन्यधन्यमयावपरमज्ञानि
नपाठहो. रामकानिमित्त. रामकोडेरपालनभयोभनि. गुहाराज. अनिमुसिमैपाच

श्रीराम

६२

शय ५०० जाहाजतिनुपचायेर. न्मोजाहाजमासैवैसैत्यायेर. रामवस्त्राकाठाउर
गया. न्मोवेतामा. भरद्वाजअधिकआश्रमपुरगेर. ताहासैवैसैत्या लोक. एक
उगषेरवशिष्ट. भरत. शत्रुघ्न. सुमंतयोचारजना. गुरुराजसमेतपाचजना. मात्र
भरद्वाजअधिमेरुगिरि. अधिनमस्कारगरेर. भरतलेत्या. भोअधिश्चरभरद्वाज.
नपात्रकाआश्रममापातनुभयोकि. रघुनाथ. कताजातुभयोभनि. हामिह
रामदर्शनगर्तुभनिआया. भयार. योभरतकावचनसुनिभरद्वाज. अयोध्या

राजाभरतपा तनुभयोभनि. पूजामात्रगिरि. वशिष्टअधिकतनमस्कारगिरि. पादा
र्घदिया. आसनदिजेर. भरद्वाजअधिले. वशिष्टप्रभृति. निपाचैजना. आक्रान्त
अममा. निस्त्रामगर्दभयाअनेकप्रकारलेसनमानपुत्रकमानमर्जीदागिरिभर
द्वाजअधिजोळन. सोआतागर्दभयाभोभरतएत्ताकठोरतगाविषे. कानिमि
त्रलेआउनुभयो. भनितव. भरतलेआतागया. भोभरद्वाजअधीश्चर. नपात्रसेवि
कात. सवै. भूतभविष्यवर्तमान. जात्याभयाकालैपनि. हामिहूरेउसोधनुई

श्रीराम
७०

६. भो मधुश्रीश्वर. रामचंद्रकानिमित्तसे दामिदरु. आपाभनि. भरतसे. आवाभ
रिआमुकादी. भरद्वाजमुनिकाअगाडि. आज्ञागम्या. भो मधुश्रीश्वर. ममासाका
देशमावस्थाकाधिया. पनि. मयापिछासीमहतारि. कैकेयीसे. इनैरामचंद्रक
न. एतोअवस्थागम्या. भो मधुश्रीश्वर. योगराममैले जाआकोईनसुंदरपनिसुनै
न. भोभरद्वाज. योकुण्डमैले जाआकोभयासनैसावितायाकोभयापनि. ब्रह्मदे
हिहोंला. भोभरद्वाज. योदुखकाकारणतामैलेऊमकनभया. रामकाएतोअ

श्रीगुरु
७०

अवस्थाऊमाधियोन. आजमेरानिमित्त. रामकाएतोअवस्थाभयोभनि. विलाप
गरिमकाऊकुण्डगम्या. भोभरद्वाज. धिक्कार. मेराजन्मभनि. धर्मभनुत्साराका
म. रामकाभाइभयो. मेरानिमित्त. दास्य. रामका. सीताका. एतोअवस्था.
यापिभनुमहोभनि. भरतसेभयापनि. भरद्वाजकासुरव्याजि. आज्ञागम्या. ये
रगम्या. भोभरद्वाज. रामकासेलक्ष्मण. कउनकादाशभैरहनुपायापनि. भा
ग्यहोभनि. एताप्रकासंगआज्ञागम्या. नवभरद्वाजसे. भरतकासमसंग. एतो

श्रीराम
७१

भक्ति देखि. भारदा जले पनि आताग ग्या. भोभरत धम्म होति मि. राम
लोमा परम भक्त निमि. अनिको भवक मै को देखे न. राम का सेवक ल
का भंदा पनि. निआहु लोभक भनि. भारदा जले. एलो आताग रि. भरत
वचन सुनि उन देहि सुमि मै रं आताग ग्या. भोभरत. मेरा आश्रम. राम एक गुरु
वास गरि जा नु भयो यो. न पाइ ले पनि. मेरा आश्रम मा. आज एक एत सग
रि. भोति. राम का आउ. जानु ह्वो सभनि. एलो आताग रि. भारदा जले. य

लाभिउपसि. ध्यान गरि काम धेनु आराधना गरि. नव स्वर्ग वाट काम धेनु आरं
भारदा जका. आताले अनेक पंचामृतादि नाना पदार्थ. आफु वाट निकामिदि
येर. भारत का जति भयाका सैन्य सवै लाइ. पाहुना ग्या. दहि दु दु घिरुगे टि ले सं
तोष गरि. स्वर्ग मर्त्य पाताल मा दु लंभ हु ग्या. स्वाद गरि. नाना पदार्थ. एताप
कार का वस्तु पुजा सवै. नृपी गेर. सवै उ सै टिन उ सै आउ वास ग्या. नांदा पछि.
रात्रि विनेर. प्रात का लभ येर. भारत ले भारदा ज संग विडा लियेर. चित्र कुत पर्वत क

कासमीयका. गंगाधरं. श्री. निमगायामगं. सबै लोक पनि. अस्माकं
कासमीयका. नवनाह. सबै लोक. एकायाउमागं. वसिष्ठ. मरा
उप. सुभंत. राहजा. जावनाभा. मलीका. आ. अमसमीगं. मे.
लीकि. नधिका. शि. म. ह. के. म. त. लो. या. भो. दा. ह. ल. ह. हो. श्री. म.
ता. ह. म. ल. स. मे. त. इ. हा. पा. त. न. म. का. क. न. की. क. ता. पा. त. न. म. म. नि. मो. ध. न.
नी. ता. म. ल. ह. ले. क. म. लो. म. ल. म. पा. त. न. म. म. का. हा. उ. उ. हे. र. उ. हे. र. गं. गा. क.